# महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

**अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग में एम.फिल. उपाधि हेतु**

**लघु शोध प्रबंध**

"वर्धा नगर परिषद् क्षेत्र में सफाई की स्थिति :

(विशेष संदर्भ : वर्धा, नगर परिषद् के संदर्भ में)

**सत्र - 2012-13**

ज्ञान शांति मैत्री


शोध निर्देशक

राकेश मिश्रा

**सहायक प्रोफेसर**

**अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग**

विभागाध्यक्ष

डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी

**विभागाध्यक्ष**

**अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग**

**प्रस्तोता**

**अनुज सिंह रावत**

**नामांकन संख्या : 2012/03/210/006**

## अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय**

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

# घोषणा पत्र

मै अनुज सिंह रावत घोषणा करता हूँ कि मैं महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) में संस्कृति विद्यापीठ के अंतर्गत अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग सत्र् 2012-2013 में एम.फिल. उपाधि हेतु "वर्धा नगर परिषद् क्षेत्र में सफाई की स्थिति : विशेष संदर्भ - वर्धा, नगर परिषद्" विषय पर अस्सिटेंट प्रोफ़ेसर श्री राकेश मिश्रा जी के नियमित शोध निर्देशन और संपर्क में रहकर अपना लघु शोध प्रबंधप्रस्तुत कर रहा हूँ।

यह मेरा मौलिक, अप्रकाशित एवं अप्रसारित लघु शोध प्रबंध है।यह लघु शोध प्रबंध मेरे द्वारा अन्य किसी संस्था या विश्वविद्यालय में अंशतः या पूर्णतः प्रस्तुत नहीं किया गया हैऔर न ही मेरे संज्ञान में इस विषय पर किसी भी शोधार्थी को एम.फिल. या अन्य उपाधि प्राप्त हुई है।

दिनांक -

(अनुज सिंह रावत)

स्थान -

**पंजीयन संख्या - 2012/03/203/006**

शोधार्थी

अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग,संकृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अन्तर राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

वर्धा (महाराष्ट्र)

ज्ञान शांति मैत्री

# महात्मा गाँधी अंतर राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 , क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Cenetral University established by Parliyament by Act No. 3 of 1997)

**Dr. N.P.MODI**

**Professor**

**School Of Culture**

(Off) 07152230313

Mob:-09970251073

Email: nripendram@rediffmail.com

**डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी**

प्रोफ़ेसर

**संस्कृति विद्यापीठ**

(आफिस):- 07152230313

(मो.):-09970251073

## प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अनुज सिंह रावत ने महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में संस्कृति विद्यापीठ के 'अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग' सत्र 2012-2013 एम.फिल. के लघु शोध प्रबंध पर "वर्धा नगर परिषद क्षेत्र में सफाई की स्थिति" विषय पर शोध कार्य इनका मौलिक कार्य है।

मेरे संज्ञान में यह इनका मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य है और इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी संस्थान में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

अतः मैं इसे मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किए जानेकी संस्तुति प्रदान करता हूँ।

**डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी**

# महात्मा गाँधी अंतर राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 , क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Cenetral University established by Parliyament by Act No. 3 of 1997)

**RAKESH MISHRA**

**Assistant Professor**

**School Of Culture**

(Off) 07152251170

Mob:-09970251140

Email: rakeshmishramgahv@gmail.com

**डॉ. राकेश मिश्रा**

सहायक प्रोफ़ेसर

**संस्कृति विद्यापीठ**

(आफिस):- 07152251170

(मो.):-09970251140


## प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अनुज सिंह रावत ने महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में संस्कृति विद्यापीठ के 'अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग' सत्र 2012-2013 एम.फिल. के लघु शोध प्रबंध पर "वर्धा नगर परिषद क्षेत्र में सफाई की स्थिति" विषय पर मेरे निर्देशन में शोध कार्य किया है और यह इनका मौलिक कार्य है।

मेरे संज्ञान में यह इनका मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य है और इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी संस्थान में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

अतः मैं इसे मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किएजाने की संस्तुति प्रदान करता हूँ।

**डॉ. राकेश मिश्रा**

गाँधी हिल्स , वर्धा-442005 (महाराष्ट्र) भारत

Gandhi Hills, Wardha-442005 (Maharshtra), INDIA

Website: www.hindivishwa.org

# आभार

सर्वप्रथम मै महात्मा गांधी अंतर राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा, अंतर्गत संस्कृति विद्यापीठ के "अहिंसा एवं शांति अध्ययन" केंद्र के विभागाध्यक्ष डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी जी का आभार और धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं है। मै आपके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और आपकी असीम दया, प्रेम और मुझ पर विश्वास के ही कारण आज मै यह कार्य पूर्ण करने में सफल हो पाया हूँ, इसके लिए मै आपका कृतज्ञ हूँ। आपने मेरे लघु शोध प्रबंध के विषय को सहज ही स्वीकृति प्रदान करते हुए, मुझे विद्यावर्ती शोध करने का मौका दिया। साथ ही अपका मार्ग दर्शन मुझे निरंतर मिलता रहा। मुझमें ऊर्जा, साहस बढ़ाते हुए, समाज को देखने का नया नज़रिया प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप ही मै अपना यह शोध कार्य पूर्ण कर पाया। मै मेरे पूर्व विभाग समाज कार्य के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार जी को भी शब्दों में धन्यवाद दे पाने के लिए भी मेरे पास शब्द ही नहीं और मुझको लगता है की शायद शब्दों में दिया भी नहीं जा सकता है। आपने भी मेरे भविष्य के लिए जो किया उसके लिए मै हृदय से आपका आभारी हूँ। आज मेरे इस लघु शोध प्रबंध का श्रेय आपको भी जाता है क्योंकि बिना आपके आशीष और कृपा से मै आगे अध्ययन कर पाने में असक्षम था। मेरे लघु शोध प्रबंध के लिए विषय चयन व उचित मार्ग दर्शन कर इसे पूर्ण करने में आपके द्वारा प्रदान की गयी सहायता का भी मै हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और कृतज्ञनता प्रकट करता हूँ।

मै अपने शोध निर्देशक अस्सि.प्रो. राकेश मिश्रा जी का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मेरे शोध कार्य को संज्ञान मे लेकर प्रोत्साहित किया। आपने पथ-प्रदर्शक के रूप में हमेशा मार्ग दिखाया। गुरु रूप में आपके ज्ञान दान के लिए मै हृदय से आपका अभिनन्दन करता हूँ। मै अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग केअस्सि.प्रो. डॉ. डी.एन.प्रसाद जी का हृदय से आभार व्यक्त

करता हूँ और आपका सहयोग और स्नेह भी मेरे इस शोध कार्य में अत्यंत उपयोगी और मूल्यवान सिद्ध हुआ।

मै मेरे विभाग की अस्सि.प्रो. चित्रा माली और अस्सि.प्रो. अमित राय जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी असीम कृपा और स्नेह हमेशा मेरे साथ रहा। आपके द्वारा एक बड़ी बहन के रूप में मुझको जो भी स्नेह मिला वह मेरे जीवन के सबसे मूल्यवान पलों के रूप में हमेशा मेरे साथ रहेगा।

मै अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के समस्त अध्यापक बंधुओं और कर्मचारियों के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि आपके सहयोग से मेरी बहुत सी समस्याएँ हल होती रहीं और मुझको हमेशा प्रेरणा मिलती रही।

मै अपने गुरु, बड़े भैया कुछ भी कहूँ पर आपने हमेशा ही मुझको एक छोटे भाई सा प्यार दिया और हमेशा ही मेरे प्रति आपके ध्यान को लेकर मै समाज कार्य विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर मिथिलेश कुमार जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आपका आत्मीय जुड़ाव मेरे शोध के लिए मूल्यवान साबित हुआ। आपने मुझको शोध के प्रति अंतर्दृष्टि दी तथा इस विषय के प्रति जागरूकता पैदा की।

यह मेरी कृतघ्नता होगी यदि मै मेरे माता-पिता, बड़ी बहन और मेरे भाइयों को याद न करूँ। जिन्होंने मुझको प्रोत्साहित किया तथा मुझको घर की जिम्मेदारियों से मुक्त रखा।

मेरे मित्रों में मै केवल अपने मित्र डेविड और विकास पासवान जिन्होंने की एक मित्र नहीं वरन् एक भाई की भाँति मेरा सहयोग किया और निरंतर मुझपर काम को और ज्यादा बेहतर ढंग से करने के लिए प्रेरित करते रहें।

अंत में मै उन सभी लोगों के प्रति और अपने आलोचकों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ, जिनका मुझे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में सहयोग मिलता रहा।

मै अपनी कमियों को जानता हूँ। मेरी सीमा थी। यह मेरा लघु शोध प्रबंध यदिवर्धा में स्वच्छता के प्रति लोगों में जागरूकता और प्रशासन में थोड़ा सा भी परिवर्तन ला सकेगा तो मेरी मेहनत

सफल हो पाएगी। आपके आशीर्वाद और प्रेरणा की आकांशा इस आशा के साथ यह लघु शोध प्रबंध आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

**(अनुज सिंह रावत)**

# दो शब्द.....

जैसा की हम सभी जानते है कि किसी भी जगह की पहचान, उसका स्वरूप और उसका चरित्र वहाँ के सहवासियों द्वारा तय होता है। जैसे लोग वैसे ही शहर। शहर को सजाने-संवारने वाली कोई भी सरकारी, गैर सरकारी संस्था बिना जनता के सहकार्य के न चल सकती है और न चली ही है। इसी तरह वर्धा नगर परिषद् भी अपने प्रयोजनों में तभी सफल हो पाएगी जब शहर के लोग शहर को स्वच्छ रखना अपना दायित्व समझेंगे। शहर में इधर-उधर फेंके गए कचरे में घातक जीवाणु पैदा होते हैं। यह जीवाणु हवा के साथ हमारी, आपकी और अन्य लोगों की साँसों में आसानी से चले जाते हैं और घातक बीमारियों को जन्म देते हैं। यदि देखा जाए तो छोटे बच्चों जिनकी रोगप्रतिरोधक क्षमता (Antibodies) कम होती है, अतः इन पर इसका असर बहुत तेजी से होता है। ऐसी नालियाँ जहाँ पर एक लंबे समय से पानी एकत्र है और कभी भी सफाई नहीं की जाती है ऐसे में मच्छरों को पनपने में कोई देर नहीं लगती है और यही मच्छर मलेरिया जैसी घटक बीमारी का कारण बनते है। एक विशेष महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि किसी भी शहर में कोई भी संक्रामक रोग या महामारी फैलती है तो उसमें वहाँ के नागरिकों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

हम सभ्य है या असभ्य है, यह हमारे व्यवहार, आचरण और संस्कारों से तय होता है। यह मेरा अपना व्यक्तिगत मत है शायद किसी को इससे आपत्ति हो, यदि ऐसा हो तो मै क्षमा चाहता हूँ पर मेरा मानना है कि समाज में जाति से न कोई शूद्र नहीं होता है और न कोई ब्राह्मण। यह सब कुछ संस्कारों से तय होता है। यदि कोई शूद्र सभ्य और संस्कारवान है तो मेरी नज़रों में वही सच्चा ब्राह्मण

है और यदि किसी ब्राह्मण में संस्कार नहीं है तो वह शूद्र से भी बदत्तर है। केवल किताबी ज्ञान से कोई सभ्य नहीं हो जाता है क्योंकि यह डिग्री केवल साक्षर बनाती है, जीवन की शिक्षा नहीं देती है। साक्षर या शिक्षित होने से कोई सभ्य और संस्कारवान नहीं हो जाता है। यही कारण है कि हम भौतिक तरक्की के बावजूद और भी असभ्य होते चले जा रहें है।

यह बात पक्की है कि यदि शहर के नागरिकों में स्वच्छता का संस्कार नहीं आया तो नगर परिषद् कितना ही कुछ कर ले शहर में सफाई नहीं हो सकती है। इसके लिए जरूरी है कि गांधी जी, संत गाडगे बाबा, तुकड़ों जी महाराज की शिक्षाओं पर अमल करें। इनकी आरती उतारने से कहीं ज्यादा बेहतर है कि इनके द्वारा अधूरे छोड़े गए काम को पूरा करें। यही समाज की सेवा है। यहीईश्वर की पूजा है और यही मानव धर्म है।

विषय सूची पृष्ठ संख्या

अध्याय 1- शोध का परिचय

1.1 - परिचय

1.2 - अध्ययन का उद्देश्य

1.3 - अध्ययन की प्रकृति

1.4 - परिकल्पना

1.5 - शोध की उपादेयता

1.6 - शोध की सीमा

1.7 - शोध-प्रविधि

अध्याय 2- वर्धा एक परिचय

2.1 - वर्धा की भौगोलोक स्थिति

2.2 - वर्धा का जनसांखिकीय विश्लेषण

2.3 - वर्धा का सांस्कृतिक अध्ययन

2.4- वर्धा का धार्मिक अध्ययन

अध्याय 3- नगर परिषद् की संरचना ववर्धा नगर परिषद् का विवरण

3.1- नगर परिषद् की संरचना

3.2- नगर परिषद् का गठन

3.3- नगर परिषद् के अधिकार

3.4- वर्धा नगर परिषद् की स्थापना और विवरण

3.5- वर्धा नगर परिषद् में सफाई से संबंधित तथ्यों का विवरण

अध्याय 4- गांधी और स्वच्छता

4.1- गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम

4.2- गांधीजी के स्वच्छता संबंधी विचार

4.3- स्वच्छता पर कार्य करने वाले संगठन एवं उनकी भूमिका

अध्याय 5- वर्धा में गंदगी : वास्तविकता, जिम्मेदारी एवं निदान

5.1- आँकड़ों का प्रस्तुतिकरण - सारणीयन और आरेख

5.2- आँकड़ों का विश्लेषण

5.3- विश्लेषण पश्चात प्राप्त निष्कर्ष

संदर्भ सूची

परिशिष्ट

# परिचय

भारत में लगातार बढ़ रही जनसंख्या के कारण कई तरह की समस्याओं का जन्म हुआ है। आज लगातार ग्रामीण क्षेत्र नगरीय क्षेत्रों में तब्दील हो रहे हैं। आज बहुत तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण नगरीकरण हो रहा है। यदि देखा जाए तो आज तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या ने ही नगरीकरण को जन्म दिया और इसी के कारण आज गंदगी की एक विकराल समस्या हम सभी के सामने आ खड़ी हुई है। बहुत से विद्वानों ने नगरीकरण को समझाते हुए इसकी परिभाषा अपनी-अपनी तरह से किया है।

यदि हम नगरीकरण को समझें तो **फेयर चाइल्ड के अनुसार,** "नगरीकरण का अर्थ नगर बनाने की प्रक्रिया से है, अर्थात व्यक्तियों और प्रक्रियाओं का नगरीय क्षेत्रों को गमन तथा नगरीय प्रक्रियाओं, जनसंख्या तथा क्षेत्रों की वृद्धि।"[1]

"आज कहीं न कहीं स्वच्छता की समस्या के जन्म में औद्योगिकीकरण का भी बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। जब भी कसी उद्योग को स्थापित किया जाता है तो उसको चलाने के लिए मानव शक्ति की जरूरत पड़ती है। रोजगार की तलाश में विभिन्न क्षेत्रों से व्यक्ति आते हैं और नौकरी पाने के बाद स्थायी या अस्थाई रूप से वहीं बस जाते हैं। इसीलिए औद्योगिकीकरण ने लगातार ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से औद्योगिक क्षेत्रों में देशांतरण होता है। अतः इसीलिए औद्योगिक क्षेत्रों में निवास निवास करने वाली आबादी वहाँ की मौलिक आबादी नहीं है।"

अतः इन सभी कारणों से आज स्वच्छता की समस्या ने भयावह रूप धारण कर लिया है। आज सफाई को लेकर सभी का ध्यान इस ओर केंद्रित हुआ है। अभी कुछ वर्षों पहले मुंबई जैसे महानगर में गंदगी के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। जब इस बात की चर्चा की गयी तो पता चला कि पालिथीन के कारण यह समस्या उत्पन्न हुई थी।

---

[1] **नगरीय समाजशास्त्र, सिंह, प्रो. आनंद प्रकाश सिंह, संस्करण 2007, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 231**

औद्योगिकीकरण और जनसंख्या घनत्व में वृद्धि के कारण आज गंदगी की समस्या आन पड़ी है। प्रत्येक व्यक्ति अपने घर की साफ-सफाई रखना चाहता है। घर से निकलने वाले कूड़े को, कूड़े के ढ़ेर पर फेंकने के बाद वह मुड़कर नहीं देखता है कि उस कूड़े का क्या होगा ? 'एक आकलन से पता चला है कि विश्व भर में प्रतिवर्ष लगभग 10 अरब टन ठोस कचरा निकलता है। इस ढ़ेर की ऊँचाई की कल्पना भी भयावह जान पड़ती है।' [i]

घरों में हम सफाई के पश्चात कागज, धूल-मिट्टी, काँच, प्लॉस्टिक , चमड़े का टूटा-फूटा सामान, बालों के गुच्छे, तरह-तरह के रैपर्स, गोबर, पेड़-पौधों की गंदगी आदि बाहर फेंक जाते हैं। आज यही कूड़ा जमा होकर पृथ्वी को कूड़ेदान बना देता है।

एक रिपोर्ट के अनुसार उद्योगों का लगभग 50% कच्चा माल कूड़ा-कचरा ही बन जाता है। उद्योगों से निकले अवशिष्टों में धातु के टुकड़े, रसायनिक पदार्थ, अम्लीय तथा क्षारीय पदार्थ, विषैले ज्वलनशील पदार्थ तथा राख़ आदि होते हैं। औद्योगिक अपशिष्टों को उपचारित करने वाले संयंत्रों से निकले कीचड़ से भी बहुत कचरा फैलता है।"[2]

आज नगर पालिका अपशिष्टों में मल-मूत्र, मकानों का मलबा, मृत जानवरों के अवशेष आदि को भी गंदगी में ही शामिल किया जा सकता है।

आज अस्पतालों के द्वारा बहुत अधिक मात्र में इस तरह का कचरा फेंका जाता है। इसमें टीके की सिरिंज, पट्टियाँ, व्यर्थ शारीरिक मल, काँच व अवशोषक शामिल हैं। यह कचरा अनेक प्रकार के रोगों का वाहक है। इनसे अनेक रोगों के विषाणुओं के फैलने का ख़तरा और भी बढ़ जाता है।

[2] यामिनी, रचना भोला प्रदूषण सनस्य एवं निवारण, प्रथम संस्करण -2005, अखिल भारतीय प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-17

प्लॉस्टिक  की थैलियों का बढ़ता प्रचलन भी आज हमारे समाज और धरती के लिए कम हानिकारक नहीं है । आज यह थैलियाँ तो कचरे का सबसे बड़ा वाहक बन गयी हैं । आज प्लॉस्टिक  की थैलियों में कचरा भरकर कहीं भी आसानी से फेंका जाता है । यह थैलियाँ इतनी ज्यादा खतरनाक होती है की इनकी वजह से ही बम्बई जैसे महानगर में बाढ़ का आलम तक आ गया था । यह थैलियाँ नाले-नाली में जाकर उसको जाम कर देती हैं ।

एक रिपोर्ट के अनुसार बताया गया है कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका जैसे देश में प्रतिवर्ष अवशिष्ट पदार्थों की मात्रा 4.34 करोड़ टन होती है तो भारत की दशा का अनुमान तो स्वयं ही लगाया जा सकता है ।

20 वीं सदी के प्रारंभ में महात्मा गांधी ने घोषणा की थी कि “भारत की आत्मा गाँव में निवास करती है ।” 2012 ईस्वी में भी देश की तस्वीर करीब-करीब वैसी ही है । यद्यपि गगनचुंबी इमारतें बनी है और गाँव के लोगों का शहरों की ओर बेतहाशा पलायन हुआ है । 2011 ईस्वी की जनगणना के अनुसार 68.84 प्रतिशत भारतीय देश के 6,40,867 गावों में ही निवास करते हैं  । भारत में 2,36,004 गाँव ऐसे है, जहाँ की आबादी 500 से भी कम है, जबकि 3,676 गाँव की आबादी 10,000 व्यक्तियों से भी अधिक है । अन्य मुद्दों को छोड़ दिया जाए मात्र स्वच्छता जैसी बुनियादी जरूरत देखें तो स्थिति सोचनीय ही नहीं, लज्जास्पद भी है । आज भी हमारे देश में लगभग 62.6 करोड़ भारतीय शौच के लिए रेलवे लाइन, सड़कों के किनारे, नहर, नदी, तालाब या अन्य खुली जगह का प्रयोग करते हैं । इनमें से अधिकतर लोग गाँव के ही निवासी होते है । यदि देखा जाए तो भारत के 1000 बच्चे सफाई की अव्यवस्था के कारण डायरिया जैसी बीमारी से प्रत्येक दिन मरते है, जिनमें से 65 प्रतिशत बच्चे गाँव के होते है ।

यदि देखा जाए तो आज से कुछ वर्षों पहले तक वर्धा में सफाई का संकट इतना ज्यादा गहरा नहीं था क्योंकि पहले पेड़-पौधों से आच्छादित हरे-भरे स्थान और अन्य कुटीर उद्योगों से यहाँ के लोगों को जीविका चलाने के लिए पर्याप्त राशि मिल जाती थी, वातावरण अत्यंत शांत और आनंदित जीवन था। भारतीय स्वतंत्रता की बात हो या दलित कल्याण की हमेशा से ही महाराष्ट्र और यहाँ के अन्य जगहों का अपना अलग ही स्थान और छाप निर्मित कर रखी है।

भारत में अनेक रमणीय एवं आदर्श जगह हैं, जो स्वच्छता और विकास के प्रतीक है। परंतु इस विशाल देश में ये गिने-चुने ही हैं और यह बात पर्यावरणविदों के लिए वस्तुतः अत्यंत चिंतनीय है। भारत-सरकार सतत प्रयत्नशील है कि सभी गाँवों को स्वच्छ एवं आदर्श बनाया जाए, यह और भी स्पष्ट हो जाता है जब केंद्रीय मंत्री श्री जयराम रमेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'देश में मंदिरों की अपेक्षा शौचालयों की अहमियत अधिक है।'

आजकल सामाजिक-आर्थिक विकास, पर्यावरण, प्रदूषण व मानवीय विकास के परस्पर संबंधों पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है। सामाजिक विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता व सफाई, पेय जल आदि पर विशेश बल दिया जा रहा है। स्थायी सामाजिक विकास के लिए पर्यावरण की सुरक्षा पर उचित एवं पर्याप्त ध्यान देना होगा। यह सर्वविदित है एवं विभिन्न सामाजिक एवं प्राकृतिक वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि अगर अगर किसी भी प्रकार का विकास कार्यक्रम अथवा योजना पर्यावरण को क्षति पहुंचाता है तो ऐसा विकास स्थायी, सुस्थिर व हानि रहित नहीं हो सकता है। ऐसा विकास भविष्य में समाज और मानव पर घातक प्रभाव डालता है। विद्वानों का मानना है कि सामाजिक विकास कार्यक्रम - पर्यावरण-मैत्रीपूर्ण तथा जन-मैत्रीपूर्ण होना चाहिए।

अब मैं क्रमवार अपने अध्यायों के संदर्भ में उनका संक्षिप्त परिचय प्रदान करता हूँ। जो की निम्नवत हैं -

**प्रथम अध्याय** - इस अध्याय में मैंने अपने शोध प्रबंध में जिन भी प्रविधियों का प्रयोग किया है, शोध का महत्व, शोध में समस्याएँ, उपकल्पना तथा साथ ही साथ अपने लघु शोध प्रबंध के संबंध में ही जानकारी का विवरण दिया है।

**द्वितीय अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अपने शोध के लिए चयन किए गए स्थल वर्धा के परिचय का विवरण दिया है। इसमें मैंने यहाँ की भौगोलिक स्थिति, जनसांखिकीय अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन का विवरण दिया है।

**तृतीय अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अपने शोध विषय के लिए चयन किए गए नगर परिषद् की संरचना, कार्यविधि, स्वरूप तथा वर्धा नगर परिषद् में सफाई के संदर्भ में जितने भी आँकड़ों का संकलन किया है उनका प्रस्तुतिकरण किया है।

**चतुर्थ अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अपने शोध विषय को अपने विषय से संबंधित गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों से संबद्ध किया था तथा गांधी जी के स्वच्छता संबंधी विचार और उनकी उपादेयता तथा मेरे लघु शोध प्रबंध इनकी महत्ता पर प्रकाश डाला है।

**पञ्चम अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अब तक किए गए कार्य में जितने भी प्रकार के तथ्यों का संकलन किया है तथा उनका विश्लेषण आरेख और सारणीयन के माध्यम से किया है। इसमें मैंने तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर अपना निष्कर्ष तथा सुझाव को भी प्रतिपादित किया है।

मेरा यह लघु शोध प्रबंध पूर्णतः मौलिक कार्य है और इसमें तथ्योंको अत्यंत जटिलता से प्राप्त किया गया है।

## अध्ययन का उद्देश्य -

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य वर्धा नगर परिषद् के क्षेत्र में सफाई की स्थिति का मूल्यांकल करना तथा लोगों के समक्ष वर्धा में स्वच्छता की वास्तविक स्थिति को लाना मेरे इस लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है। साथ ही गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों की उपयोगिता और व्यवहारिकता को जनमानस के सामने लाना भी मेरे इस लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य है।मेरे इस अध्ययन का सबसे ज्यादा महत्व यहाँ के स्थानीय लोगों और स्थानीय प्रशासन नगर परिषद् के द्वारा बरती जा रही असावधानी और लगातार गंदगी के कारण वर्धा में बढ़ रहे प्रदूषण और बीमारियों से लोगों को परिचित करना ही मेरे इस लघु शोध प्रबंधका उद्देश्य है।

1- वर्धा में आखिर किन कारणों से लोगों में सफाई के प्रति कोई रुझान नहीं आ पा रहा है?

2- वर्धा नगर परिषद् के कार्यकर्ता क्यों इतनी खामोशी बनाए हुए है?

3- वर्धा की इस स्थिति का जिम्मेदार कौन है जनता, नगर परिषद् या सफाई कर्मी?

4- वर्धा में इन गांधीवादी संस्थाओं की क्या भूमिका है?

5- स्वच्छता को लेकर वर्धा में चलाई जा रही स्वच्छता योजनाओं का मूल्यांकन करना।

6- वर्धा एक खास ऐतिहासिक समय को प्रदर्शित करता है। गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का असर यहाँ पर सबसे ज्यादा रहा है और गांधीजी ने यहाँ पर सबसे ज्यादा समय व्यतीत किया था तो आखिर ऐसे शहर के ऐसे हालात का जिम्मेदार कौन है ? अतः इसी लिए यह एक लंबी चर्चा का विषय हो सकता है।

मैंने अपने क्षेत्र कार्य के लिए कुछ उपकल्पनाओं का निर्माण किया था जो इस प्रकार से है।

## उपकल्पना (Hypothesis) -

**जार्ज लुंडवर्ग के अनुसार** "उपकल्पना एक काम चलाऊ निष्कर्ष है जिसकी सत्यता की परीक्षा शेष रहती है। अपने प्राथमिक स्तरों पर कोई संकेत, अनुमान, काल्पनिक विचार अथवा इरादा या जो कुछ भी बात कार्य या सर्वेक्षण का आधार बनती है, उपकल्पना कहलाती है।"

इसको कई नामों से जाना जाता है जैसे की प्राककल्पना, परिकल्पना आदि अनेक नामों से भी जाना जाता है।

शोध विषय के बारे में जानने के बाद या ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् शोधकर्ता अपने दिमाग में एक ऐसा सिद्धांत बना लेता है जिसके बारे में वह कल्पना करता है कि यह सिद्धांत शायद उसके अनुसन्धान का आधार सिद्ध हो सके, ऐसे काल्पनिक निष्कर्ष को वह अंतिम नहीं मानकर चलता है। उसकी प्रमाणिकता अपने अनुभव तथा वास्तविक तथ्यों द्वारा सिद्ध करने की कोशिश करता है। अतः मैं अपने लघु शोध प्रबंधके लिए चुने गए विषय "वर्ध नगर परिषद् में सफाई की स्थिति" पर जो भी मेरे मार्गदर्शन में सहायक तथ्य हो सकते है, उन सभी को मैंने समाहित कर लिया है। अतः मै अपने इस लघु शोध प्रबंध में इसके महत्वपूर्ण पहलुओं को एकत्र करने की पूरी-पूरी कोशिश करूँगा।

1 - सफाई का जो मानक होता है वह नगर परिषद् की स्थापना में अंतर्निहित होता है।

2 - गांधीजी ने दस वर्षों तक वर्धा में रहकर रचनात्मक कार्यों को चलाया था। अतः यहाँ पर गांधीजी की स्पष्ट छाप नज़र आती होगी।

3 - लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता के महत्व को समझते होंगे।

4 - महाराष्ट्र में सिविल सोसाइटी का चलन ज्यादा है इसीलिए यहाँ के नागरिक अपने अधिकार और उत्तरदायित्व के प्रति ज्यादा जागरूक होंगे।

5 - वर्धा गांधी शहर होने के कारण प्रदूषण रहितहोगा।

6 - यहाँ के स्थानीय लोग अपने अधिकार, कर्तव्यों और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति बहुत संवेदन शील होंगे।

7 - यहाँ पर साक्षरता का प्रतिशत अधिकतम होने के कारण लोगों में भी जागरूकता चरम सीमा पर होगी।

8 - यहाँ का प्रशासन भी गांधी शहर की वजह से अपने कार्य के प्रति पूर्णतः ईमानदार होगा।

9 - शासन स्तर पर भी वर्धा को काफी महत्ता प्रदान होगी।

10 - वर्धा में औसतमान एन.जी.ओ. की संख्या किसी भी जिले से ज्यादा और उनके एजेण्डे में शहर की सफाई और स्वास्थ्य एक प्रमुख एजेण्डा होगा।

**ध्ययन की महत्ता -** जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किसी भी जगह की पहचान, उसका स्वरूप और उसका चरित्र वहाँ के सहवासियों द्वारा तय होता है। जैसे लोग वैसे ही शहर। शहर को सजाने-संवारने वाली कोई भी सरकारी-गैर सरकारी संस्था बिना जनता के सहकार्य के नहीं चल सकती हैं। इसी तरह वर्धा नगर परिषद् भी अपने प्रयोजनों में तभी सफल हो पाएगी जब शहर के लोग शहर को स्वच्छ रखना अपना दायित्व समझेंगे। एक विशेष महत्वपूर्ण बात है कि यदि किसी भी शहर में कोई भी संक्रामक रोग या महामारी फैलती है तो उसमें वहाँ के नागरिकों का बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

यह बात पक्की है कि यदि शहर के नागरिकों में स्वच्छता का संस्कार नहीं आया तो नगर परिषद् कितना ही कुछ कर ले शहर में सफाई नहीं हो सकती है। इसके लिए जरूरी है की संत गाडगे बाबा कि शिक्षाओं पर अमल करें। गाडगे बाबा कि आरती उतारने से कहीं ज्यादा बेहतर है कि उनके द्वारा अधूरे छोड़े गए काम को पूरा करें। यही समाज की सेवा है।

1- लोग अपनी कोई ऐसी योजना बनाए पाए जिनको स्वच्छता की ज्यादा जरूरत है।

2- प्रशासन स्तर पर भी लोगों में एक दबाव की स्थिति आएगी।

3- लोगों को अपने स्थान के विषय में संपूर्ण जानकारी के साथ-साथ इसकी महत्ता का ज्ञान होगा।

4- स्वच्छता औए स्वास्थ्य को समझने के लिहाज से भी हमारा यह शोध कार्य महत्वपूर्ण है।

5- लोगों को स्वच्छता के साथ-साथ स्वास्थ्य पर भी ध्यान की ओर केंद्रित करना है।

## शोध कार्य के दौरान समयाएँ

शोध कार्य के अंतर्गत मुझको जिन-जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा मै उनका जिक्र आपके सामने कर रहा हूँ।

**समय सीमा -** शोध एक ऐसा विषय है जो कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया होती है। इस कार्य को करने में जितना भी समय दिया जाए वह कभी भी पर्याप्त नहीं होता है। अर्थात किसी भी शोध कार्य में समय की सीमा अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। शोध कार्य की अपनी एक अलग ही विशिष्ठता होती है क्योंकि स्थान और परिस्थिति के अनुसार तथ्यों में परिवर्तन होता रहता है।

**अध्ययन क्षेत्र विस्तृत -** मेरे शोध कार्य का अध्ययन के व्यापक और वृहत क्षेत्र था। किसी भी शोध कार्य में शोध क्षेत्र की अपनी एक अलग विशिष्ठता होती है। मुझको वर्धा नगर में थोड़ा समय व्यतीत होने के कारण जानकारी थी किन्तु एक दूसरे राज्य का नागरिक और सबसे बड़ी बात यह थी की यहाँ के लोगों के मन में यू.पी., बिहार का नाम सुनते ही लोग आवेशित और सतर्क नज़रों से देखते हैं इसलिए अन्य राज्य का नागरिक होने के नाते कई तरह की समस्याओं का भी सामना करना पड़ा है। अतः इन सारी समस्याओं और जटिलताओं को सरल करते हुए मैंने अपने शोध कार्य यथासंभव अधिक से अधिक सार्थक बनाने का प्रयास किया है।

**समस्या-** मेरे समक्ष एक मुख्य समस्या थी सफाई कर्मी महिलाओं के साक्षात्कार की। अतः मै सुबह 6 बजे जागकर तैयार होकर इनकी तलाश करते हुए इधर-उधर जाती थी। जैसे ही कोई सफाईकर्मी महिला नज़र आती तो मुझको उससे बात करने के लिए इंतज़ार करना पड़ता था। किन्तु काफी प्रयास के बाद मै अपने इस शोध कार्य में आंकड़ा संकलन में सफल हुई।

## शोध में प्रयुक्त विधियाँ

शोध के दौरान कुछ कठिनाइयाँ तो आती ही रहती है पर उन कठिनाइयों को सख्त किया जा सकता है। इन कठिनाइयों को सरल किया जा सकता है अगर हम सामाजिक शोध में प्रयुक्त होने वाली विधियों को अपनाएँ। ये विधियाँ शोध कार्य करने के लिए हमारी सहायता करती है ये विधियाँ इस प्रकार है जिनकी सहायता से मैंने अपने शोध कार्य को सरल करने का प्रयास किया है। अतः अपने शोध कार्य में इन्हीं विधियों को प्रयुक्त किया है।

### साक्षात्कार Interview :

पी०वी०यंग के अनुसार "साक्षात्कार को एक क्रमबद्ध प्रणाली माना जा सकता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आंतरिक जीवन में अधिक अथवा कम काल्पनिकता से प्रविष्ट होता है, जो की उसके लिए तुलनात्मक रूप से परिचित है।"

मैंने अपने शोध कार्य के लिए चुने हुए लोगों से साक्षात्कार के माध्यम से सूचनाओं को एकत्रित किया।

### तथ्यों का संकलन Data Collection :

मैंने आँकड़ों के संकलन के लिए क्षेत्र का एक पायलट सर्वे लिया। तत्पश्चात मैने शोध कार्य हेतु चयनित क्षेत्र में जाकर अपने शोध से संबंधित आँकड़ों का संकलन किया।

मेरा यह लघु शोध प्रबंध पूरी तरह से प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है क्योंकि इसमें मैंने बहुत सी जानकारी क्षेत्र में जाकर और बहुत सारी जानकारी इंटरनेट और पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से एकत्र किया है । तथ्य संकलन का सुलभ और सीधा अर्थ है कि 'किसी विषय पर जानकारी लेना और सामग्री निर्माण करना ।' शोधार्थी जब अपने शोध के लिए आवश्यक जानकारी संकलित करते हैं तो उस पद्धति को तथ्य संकलन में सम्मिलित किया जाता है।

अतः मेरा यह लघु शोध प्रबंध पूर्णतःतथ्यों पर आधारित है। यह एक मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य है।

**प्राथमिक श्रोत :** सीधे क्षेत्र में जाकर एकत्र किए गए आँकड़ो को ही इसमे सम्मिलित किया जाता है।

**द्वितीयक श्रोत :** किसी भी तरह के लिखित या अलिखित प्रलेख, पुस्तक, अख़बार, शोध-पत्र, ऐतिहासिक शिला लेख, किसी भी तरह की सूचना जो कि लिखित हो व हमारे लिए आवश्यक हो इत्यादि को इसी में सम्मिलित किया जाता है।

## अनुसूची Schedule :

गुडे और हैट के अनुसार "अनुसूची प्रायः प्रश्नो के लिए एक समूह के लिए प्रयुक्त किया नाम है जो साक्षात्कर्ता द्वारा दूसरे व्यक्तियों के आमने- सामने की स्थिति में पूछा और भरा जाता है।"

मैंने अपने लघु शोध प्रबंध के लिए पहले से ही अनुसूचीका निर्माण कर लिया था जिसमे मैंने अपने लघु शोध प्रबंध से संबंधित विषय पर पूरी तरह से दृष्टि डालने वाले प्रश्नों का ही प्रयोग किया था।

## निदर्शन Sampling :

गुडे और हैट के अनुसार "एक निदर्शन, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट करता है, संपूर्ण समूह का एक अल्पतम प्रतिनिधि है।" एक शब्द में कहा जाए तो "संपूर्ण का प्रतिनिधित्व"।

सबसे पहले मुझे अध्ययन क्षेत्र में से 100 लोगों का अध्ययन करना था। मैंने वहाँ जाकर उद्देश्य के आधार पर लोगों का चुनाव किया। मैंने अपने अध्ययन के लिए क्षेत्र के किसी विशेष वर्ग, जाति या लिंग का चयन नहीं किया। मैंने सीधे शोध कार्य के लिए चयनित क्षेत्र में जाकर आँकड़ों का संकलन किया।

मैंने निदर्शन के प्रकारों में से उद्देश्य पूर्ण निदर्शन (Purposive Sampling) का उपयोग यहाँ पर किया है।

# अध्याय दो

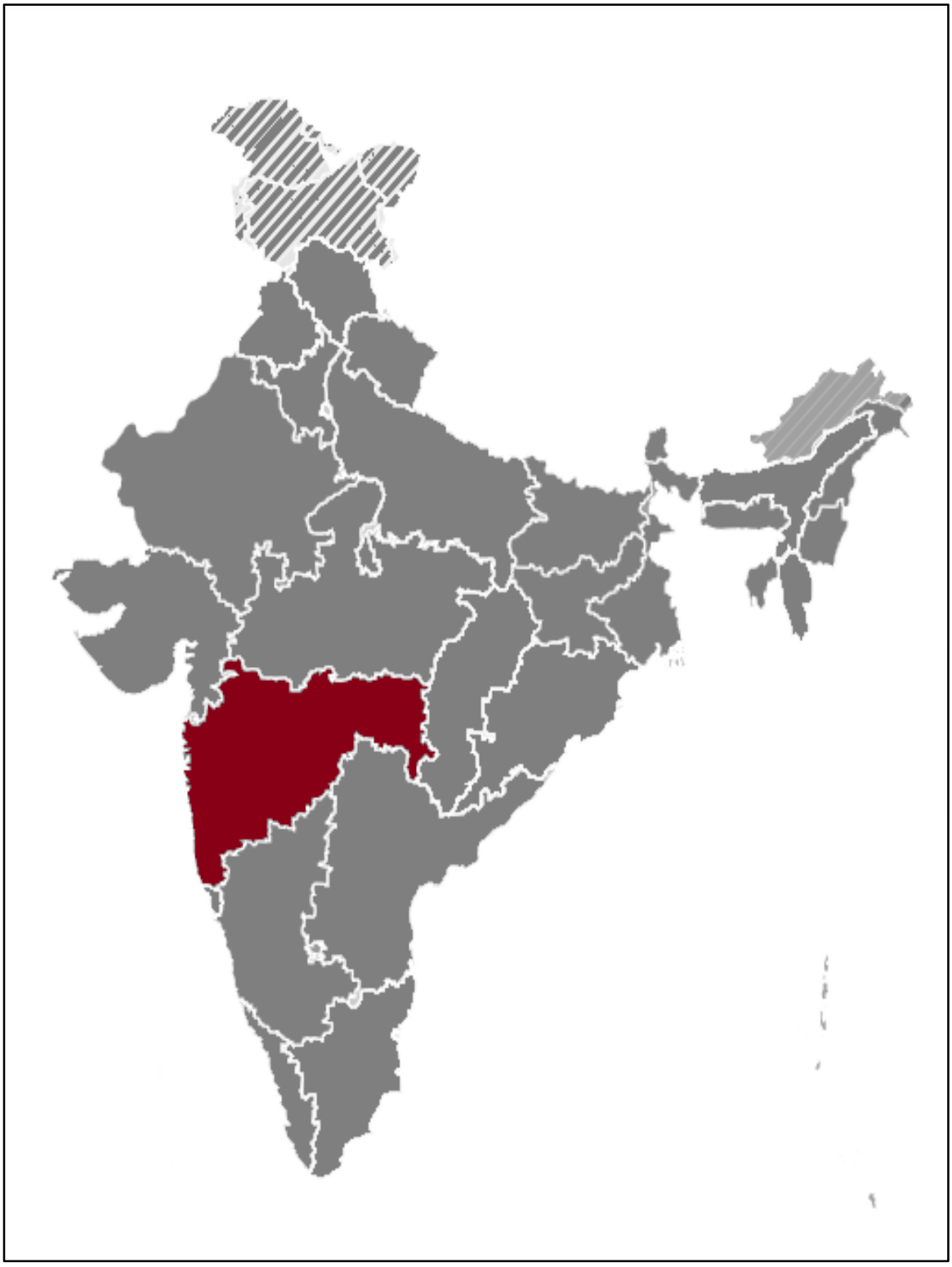

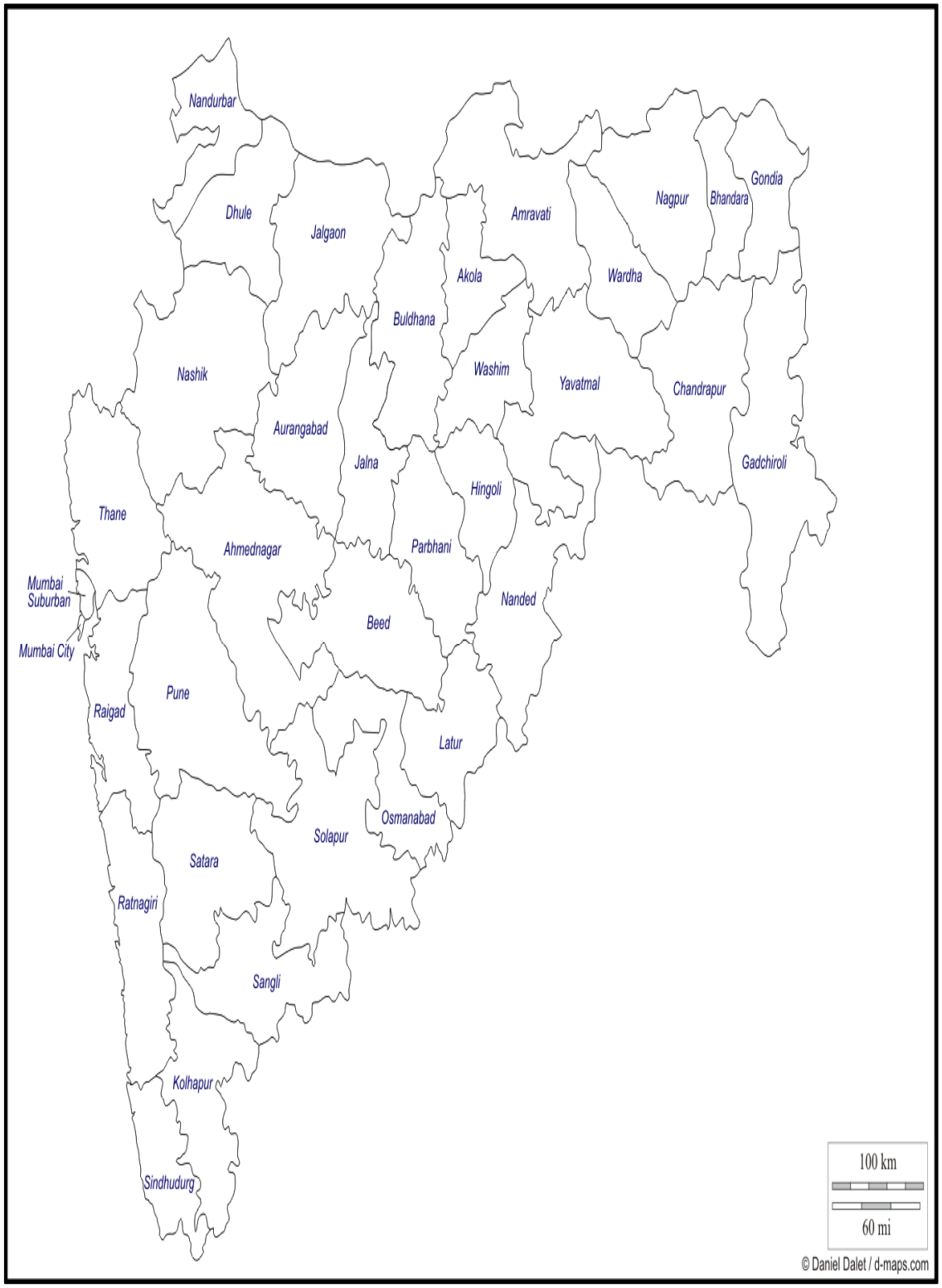
Nandurbar
Dhule
Jalgaon
Amravati
Nagpur
Bhandara
Gondia
Akola
Wardha
Buldhana
Washim
Yavatmal
Chandrapur
Nashik
Aurangabad
Jalna
Hingoli
Gadchiroli
Thane
Ahmednagar
Parbhani
Mumbai Suburban
Mumbai City
Beed
Nanded
Pune
Raigad
Latur
Osmanabad
Solapur
Satara
Ratnagiri
Sangli
Kolhapur
Sindhudurg
100 km
60 mi
© Daniel Dalet / d-maps.com

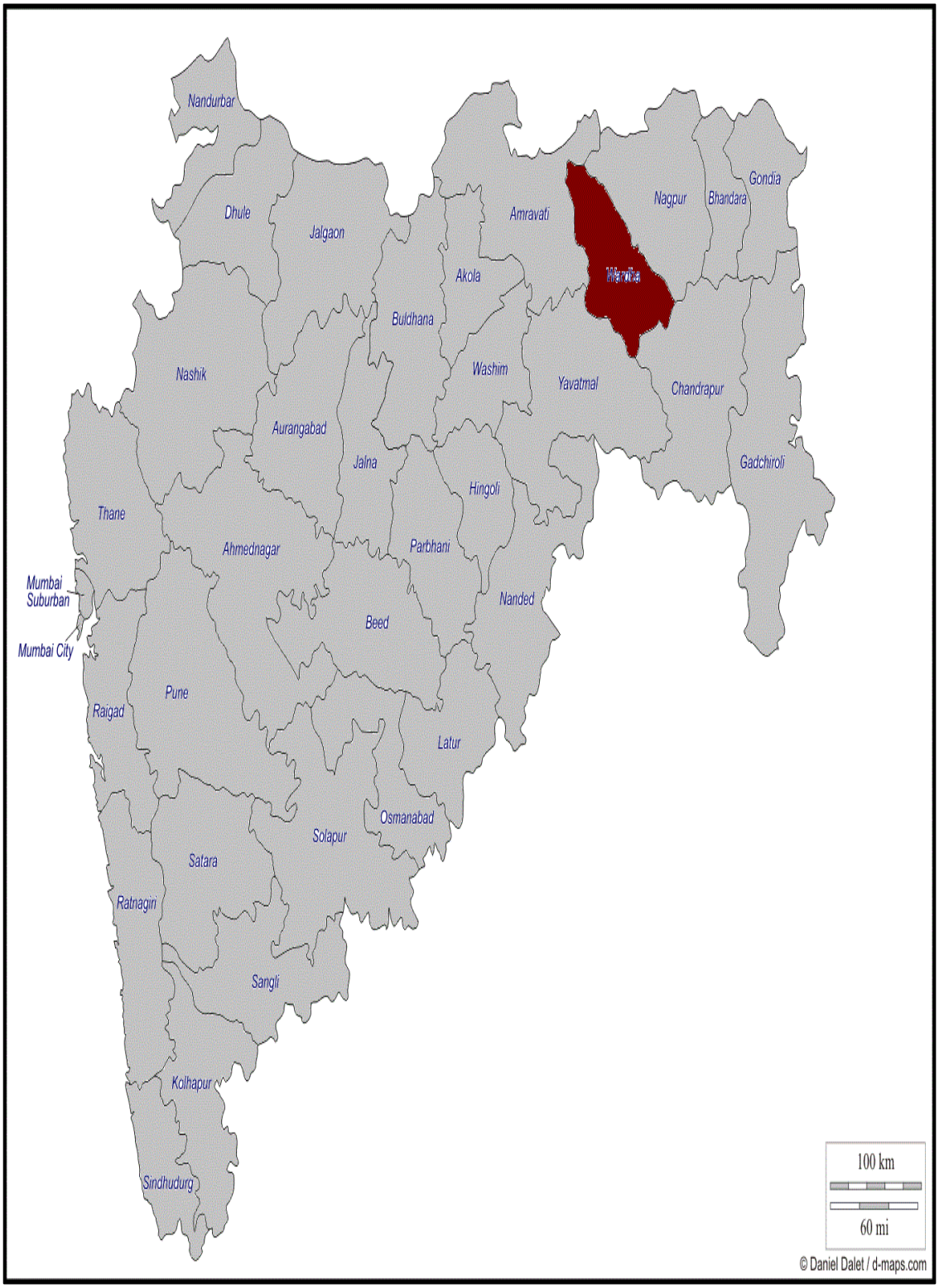
Nandurbar
Dhule
Jalgaon
Amravati
Nagpur
Bhandara
Gondia
Wardha
Akola
Buldhana
Washim
Yavatmal
Chandrapur
Gadchiroli
Nashik
Aurangabad
Jalna
Hingoli
Thane
Ahmednagar
Parbhani
Nanded
Mumbai Suburban
Mumbai City
Beed
Pune
Raigad
Latur
Osmanabad
Solapur
Satara
Ratnagiri
Sangli
Kolhapur
Sindhudurg
100 km
60 mi
© Daniel Dalet / d-maps.com

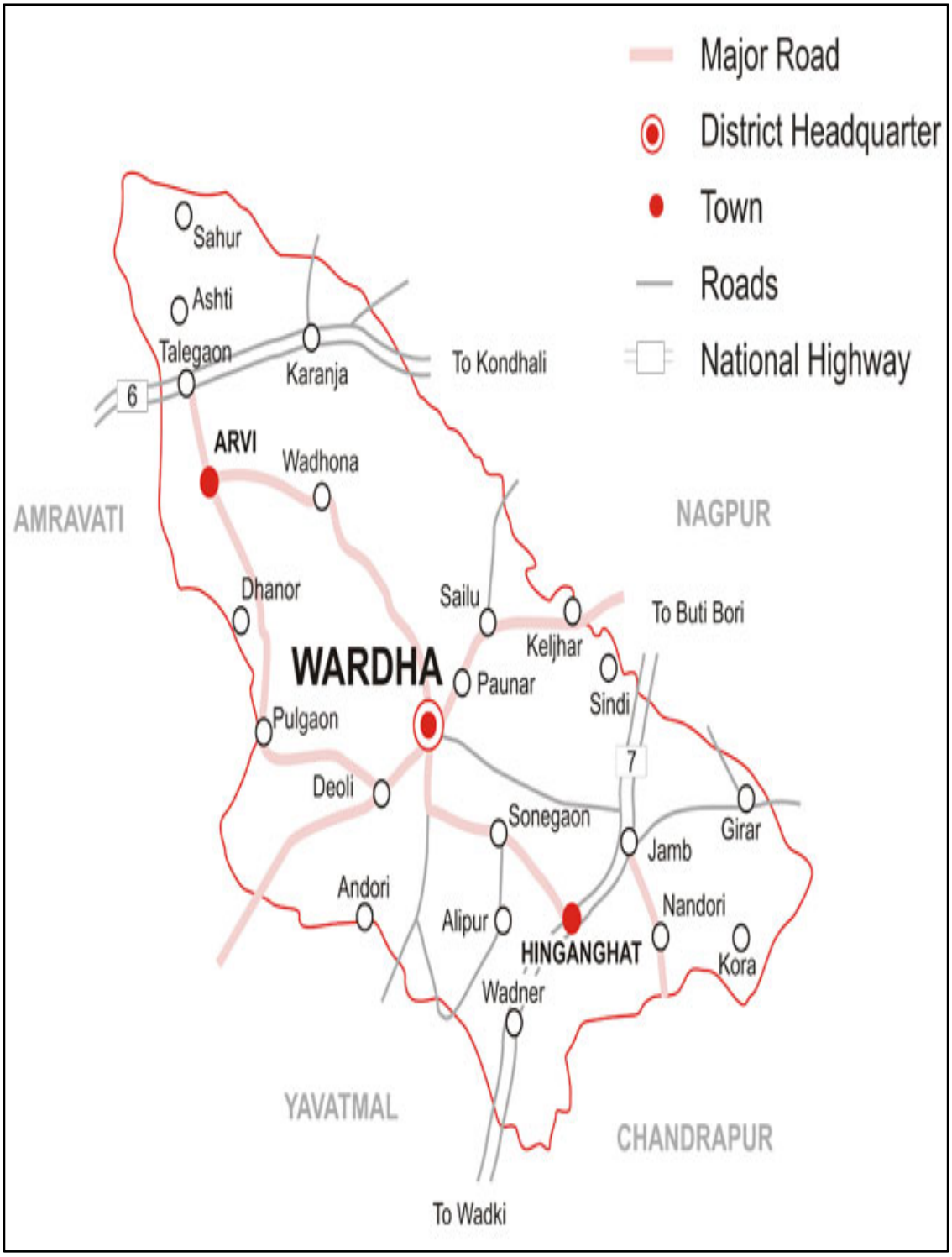
Major Road
District Headquarter
Town
Roads
National Highway
Sahur
Ashti
Talegaon
Karanja
To Kondhali
6
ARVI
Wadhona
AMRAVATI
NAGPUR
Dhanor
Sailu
To Buti Bori
Keljhar
WARDHA
Paunar
Sindi
Pulgaon
7
Deoli
Sonegaon
Girar
Jamb
Andori
Alipur
Nandori
HINGANGHAT
Kora
Wadner
YAVATMAL
CHANDRAPUR
To Wadki

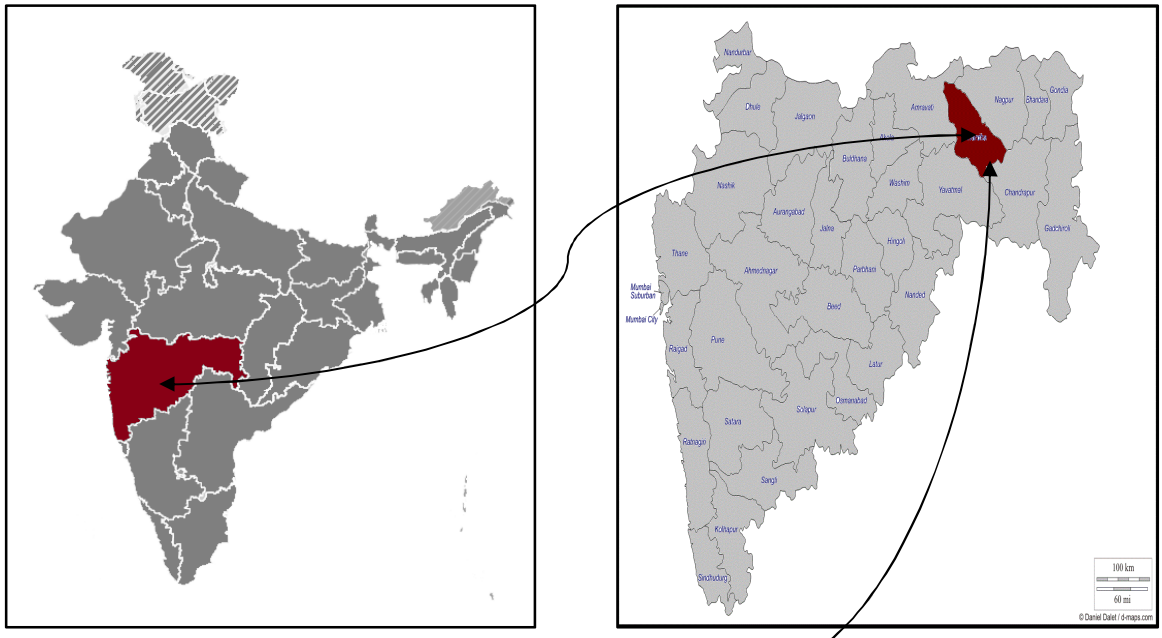

# वर्धा जिले का परिचय : एक नज़र

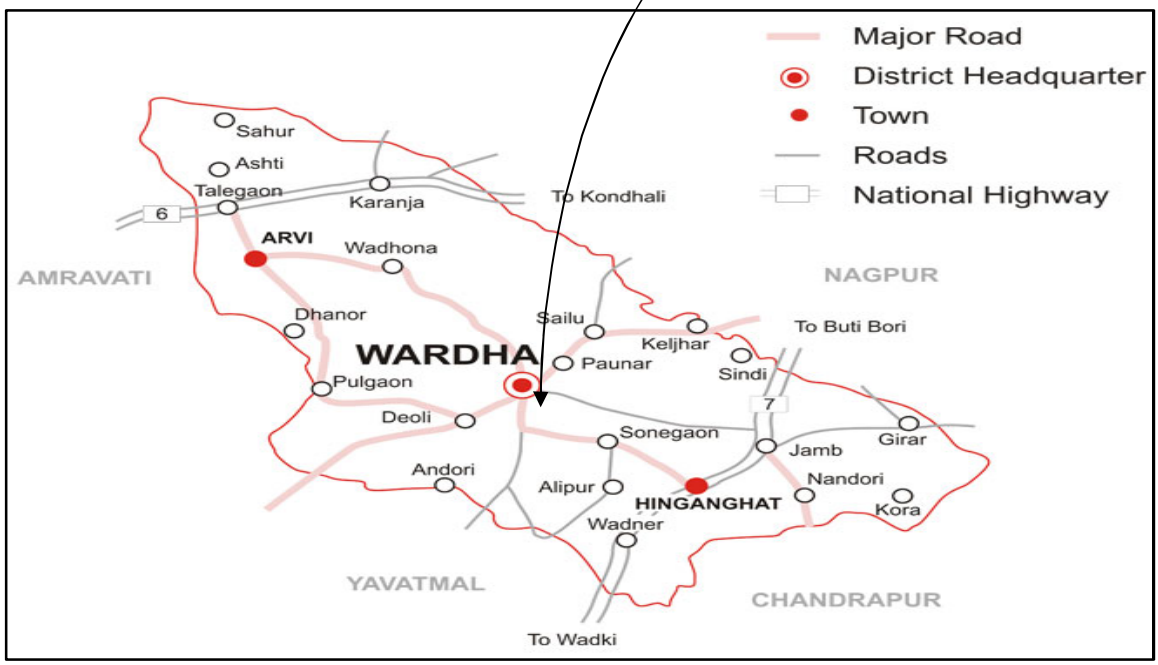


**वर्धा जिले का कुल क्षेत्रफल** - 6310 वर्ग किलोमीटर

**वर्धा जिले का वन आरक्षित क्षेत्र** - 1046 वर्ग किलोमीटर

**वर्धा जिले में वर्षा का औसत** - 1062.88 M.M.

**वर्धा जिले का अधिकतम तापमान का औसत** - 46 डिग्री सेल्सियस

**वर्धा जिले का निम्नतम तापमान का औसत** - 18.4 डिग्री सेल्सियस

**भौगोलिक स्थिति** - वर्धा जिला उत्तर में 20.18 से 21.12 ऊँचाई तथा पूर्व में 78.33 से 79.15 ऊँचाई पर स्थित है।

**वर्धा की कुल जनसंख्या** - 1236736

**वर्धा में कुल पुरुषों की संख्या व प्रतिशत** - 638990 व 51.67%

**वर्धा में कुल महिलाओं की संख्या व प्रतिशत** - 597746 व 48.33%

**वर्धा जिले में अनुसूचित जातियों की कुल जनसंख्या**- 158630

**वर्धा जिले में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या**- 154415

**जन्मदर** - 16.58

**मृत्युदर**- 8.14

**0-6 वर्ष आयु वर्ग के कुल बालक - बालिकाओं की संख्या** - 155612 (2001 की जनगणना के अनुसार) तथा 124536 (वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार)

**वर्धा जिले में कुल साक्षारता का प्रतिशत** - 80.10

**वर्धा जिले में कुल पुरुषों की साक्षरता का प्रतिशत** - 87.20

**वर्धा जिले में कुल महिलाओं की साक्षरता का प्रतिशत** - 72.50

## वर्धा जिले की भौगोलिक स्थिति

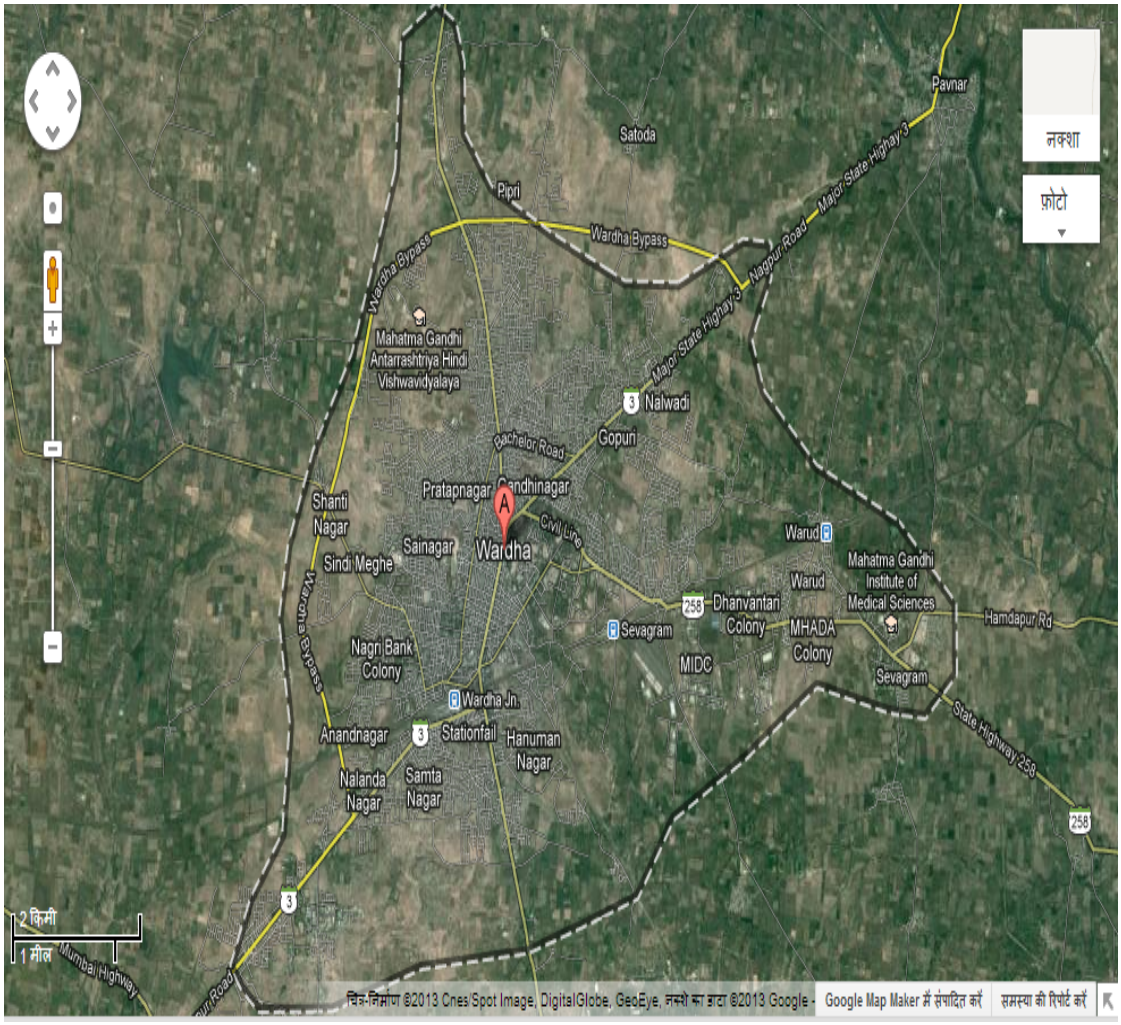


**वर्धा जिले की भौगोलिक स्थिति का विवरण इस प्रकार से है -**

वर्धा उत्तरी अक्षांश 20.18से 21.21 और पूर्वी अक्षांश 78.33 से 79.15 पर स्थित है। यह पूर्णतः प्राकृतिक छटा से युक्त स्थान है।

वर्धा जिले के दक्षिण में यवतमाल, पूर्व में चंद्रपुर, उत्तर में नागपुर और पश्चिम में अमरावती की सीमाओं से लगा हुआ है। नागपुर पठार के पश्चिम दिशा में वर्धा जिला और उत्तर-पश्चिम दिशा में वरदा नदी है। जिले का अधिकांश भाग नदी के दोनों किनारों पर बसा है। वर्धा जिले का कुल क्षेत्रफल महाराष्ट्र राज्य के कुल क्षेत्रफल का 2% है।

## वर्धा शहर की कुल जनसंख्या -

वर्धा शहर की कुल जनसंख्या सेन्सस 2011 के अनुसार 1,06,539 है। जहाँ पर 54,231 पुरुष और 52,308 महिलाओं की संख्या को अंकित किया गया था।.

## वर्धा शहर में (0-6) आयु वर्ग की संख्या -

भारतीय सेन्सस 2011 की रिपोर्ट के अनुसार वर्धा शहर में (0-6) आयु वर्ग की संख्या 9,754 थी, जहाँ पर 5,139 लड़कों पर मात्र 4,615 लड़कियों की संख्या थी। कहीं न कहीं यह एक नयी आने वाली समस्या को आमंत्रित कर रहा है।

## वर्धा नगर परिषद् क्षेत्र में स्त्री-पुरुष जनसंख्या का अनुपात -

भारतीय सेन्सस की एक अस्थायी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2011 में वर्धा नगर परिषद के क्षेत्र में कुल 1,06,539 की जनसंख्या को अंकित किया गया था।

वर्धा शहर में सेक्स अनुपात 982 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुषों पर है। यही शिशुओं में 898 लड़कियाँ प्रति 1000 लड़कों की संख्या में है।

## वर्धा शहर में शिक्षा की स्थिति -

वर्धा शहर में साक्षरता का प्रतिशत 94.05 है। जिसमें की कुल 90,091 लोग साक्षर है। यहाँ पर 46,752 पुरुष और 43,339 महिलाएँ साक्षर हैं।

**ऐतिहासिक महत्व :**

निजाम और नागपुर के रघुजी भोसले का राज भी इस शहर में रहा था। सर्वोदय जननी 'विनोबा भावे', सेवाग्राम 'गांधीजी' की वजह से यहाँ का महत्व न केवल भारत में अपितु यह अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त स्थान हैं। राष्ट्र संत तुकड़ोंजी महाराज की वजह से भी इस स्थान की बहुत ज्यादा शान है। 1933 में गांधीजी ने जामुनलाल बजाजजी के बुलाने पर शेगाँव को ही अपने लिए चुना था। सेवाग्राम आश्रम को ही बापू कुटी के नाम से जाना जाता है। भारत छोड़ो आंदोलन का जन्म भी इसी सेवाग्राम आश्रम में हुआ था। 1940 में गांधीजी ने सेवाग्राम में ही सरकारी नीतियों के विरुद्ध व्यक्तिगत सत्याग्रह किया था और विनोबा भावे इस सत्याग्रह के पहले सत्याग्रही थे। गांधीजी की ही प्रेरणा से विनोबा भावे जी ने पवनार में ही 'परम धाम' नामक आश्रम की स्थापना की थी। आश्रम में कृषि, ग्रामोद्योग, ग्रामों की सफाई आदि इस संबंध में भिन्न-भिन्न प्रयोग किए। 1 मई 1960 को वर्धा एक स्वतंत्र इकाई के रूप में अपनी पहचान बना पाने में सफल हुआ।

## वर्धा का परिचय

वर्धा यह शहर मुंबई-नागपुर और दिल्ली-मद्रास रेलवे मार्ग पर स्थित एक महत्वपूर्ण जंक्शन है। सन् 1866 में यहाँ का जिला मुख्यालय कवड़ से बदलकर वर्धा में स्थानांतरित किया है। यदि देखा जाए तो पारम्परिक तौर पर वर्धा को देखने के लिए हज़ारों विदेशी और देशी पर्यटक जाते हैं। यहाँ का मगन संग्रहालय आकर्षण का मुख्य केंद्र माना जाता है। मगन संग्रहालय में हस्तकला, कुटीर उद्योग और खादी से निर्मित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का संग्रहालय है।

वर्धा गांधीजी की कर्मस्थली है। यहाँ पर आने के लिए यह रेल मार्ग, वायु यान मार्ग और परिवहन इन सभी परिवहन व यातायात की सुविधाओं से युक्त है। यहाँ का मुख्य रेल स्टेशन सेवाग्राम है, जैसा की यहाँ के बारे में थोड़ी सी भी जानकारी रखने वाले को यदि बापू की कर्मस्थली के बारे में जानने की स्वतः ही एक जिज्ञासा मन में आ जाती है। ऐसी ही जिज्ञासा लोगों के ध्यान का आकर्षण यह केंद्र बना रहा है। सेवाग्राम स्टेशन की शांति और वातावरण में गंभीरता कुछ अलग ही प्रतीत होती है और लगता है कि वाकई में बापू की कर्मस्थली में आकार जीवन धन्य हो गया। जो की इसकी हकीकत से बिल्कुल परे है। बापू की स्मृतियों में स्थान के नाम पर अभी भी साबरमती आश्रम (अहमदाबाद), पोरबंदर और वर्धा की अभी भी अहमियत बची है। सबसे ज्यादा इन सभी जगहों में वर्धा की अहमियत अभी भी सबसे ज्यादा है, क्योंकि यह बापू की कर्मस्थली रही है और चाहे 'भारत छोड़ो आंदोलन' का विचार हो या 'नोआखाली' जाने की बात हो, सबके बीज यहीं पड़े हैं। यदि देखा जाये तो गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद अपने जीवन का सर्वाधिक समय यहीं पर व्यतीत किया था और इसीलिए इस स्थान की महिमा किसी तीर्थस्थल की भाँति तो नहीं पर फिर भी बापू के द्वारा दिये गए एकादश व्रत और रचनात्मक कार्यक्रमों की छाप इस शहर की धूल मिट्टी या कहें शहर की संस्कृति में गोचर तो होनी ही चाहिए। ऐसा विचार किसी के मन में स्वाभाविक है की उठना ही चाहिए। पर हमारे मन की सारी सात्विकता तब धूल सारित हो जाती है जब हम वर्धा शहर का वास्तविक रूप देखते हैं। सेवाग्राम स्टेशन से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर गंदगी और बदबू का जो आलम है वह वाकई में हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हो गया है यहाँ के स्थानीय लोगों को और यहाँ के शासन के लोगों को जो की राष्ट्र पिता कहे जाने वाले महात्मा गांधी की इस कर्मस्थली का इतना बुरा हाल होने पर भी इतने अमन और चैन के साथ हाथ पर हाथ धरे हुए बैठे हैं।

किसी समय में पालकवाड़ी के नाम से जाना जाने वाला वर्धा शहर (वरदा नदी के नाम पर जो मुलताई (बैतूल, मध्य-प्रदेश) से निकालकर गोदावरी (चंद्रपुर,महाराष्ट्र) में मिलती है) आज शासन और यहाँ के निवासियों और तथाकथित गांधीवादियों की उपेक्षा के चलते जान पड़ता है, जिसे न घर का कह सकते हैं न घाट का। जगह-जगह गंदगी, कचरे और मलबे के ढ़ेर देखकर कभी-कभी तो मन में यह विचार आता है कि लगता है कि यह बापू को जानबूझकर कलंकित करने कि साजिश हो। शायद यह अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि कहा जाए कि शहरों में गंदगी और मलबे को सहेजकर रखने की कोई प्रतियोगिता हो तो निश्चय ही वर्धा बाजी मार ले जाएगा। घरों के सामने हो या पिछवाड़े, गली के नुक्कड़ पर हो या सड़क के चौराहों पर कूड़े और मलबे के ढ़ेर जगह-जगह परोसे से मिलते हैं। घरों, दुकानों के आगे बह रही नालियों में महामारी के सारे लक्षण मौजूद हैं और रही सही कसर शहर के आवारा घूमते पशु गाय, सुअर, कुत्ते और बकरियाँ पूरी कर देते हैं। सड़कों पर फैला इनका मल-मूत्र वैसे तो हर समय कष्ट का कारण बना रहता है पर जब बारिश का मौसम रहता है तो यह बारिश में घुलकर पैदल चलने वालों के लिए और रुकावट बनता है। इन पशुओं के कारण ट्रैफिक में आने वाली बाधा अलग ही है। गलियों और कच्चे रास्तों का बखान कर पाना तो संभव ही नहीं है। वर्धा का जीवन देखकर ऐसा लगता है की यहाँ के लग हालात से समझौता किए बैठे है।

गांधी जिन्होनें ग्यारह व्रतों, रचनात्मक कार्यक्रमों के अतिरिक्त आरोग्य और साफ-सफाई पर हमेशा अतिरिक्त ध्यान दिया और खुद को समाज में सबसे निम्न समझे जाने वाले 'हरिजन' या कहे तो 'भंगी' शब्द से खुद को संबोधित किया था। गांधी जिनको हम राष्ट्रपिता कहते हैं यदि कोई इनकी कर्मस्थली को देखने के लिए आएगा और यहाँ की स्थिति को देखता है तो इस बात का सहज ही अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उसके मन में यहाँ की क्या छवि निर्मित होगी। पर इस बात से न तो यहाँ के शासन, स्थानीय लोगों और गांधीवादी विचारकों, उनकी संस्थाओं और आम जन पर। घर की महिलाएँ उन्हीं नालियों पर खड़ी होकर बतियाती है या नंगे पैर घर से बाहर सड़क तक हो आती है। पुरुषों को इस समस्या से झिंझोड़िए तो वे मानते तो हैं कि शहर में गंदगी है पर सारा दोषारोपण नगर परिषद पर ड़ाल देते हैं पर एक नागरिक इसके लिए कितना जिम्मेदार है इस बात से बिल्कुल भी बेखबर है। नगर परिषद अध्यक्ष अशोक शेंदे की समस्या है कि पार्षद उनका साथ नहीं देते है, ग्रांट (सरकारी पैसे की सहायता) नहीं मिलती और

इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण समस्या है कि सफाई कर्मियों की कमी । यदि देखा जाए तो गांधीवादी संस्थाएँ  इस मामले में मौन रहना चाहती हैं क्योंकि वे मानती है की उनकी संस्था का जो क्षेत्र, ध्येय और संबंधित कार्य है वह वे बखूबी निभा रहीं है।

भारत में गंदगी और गंदे शहर कोई नई बात नहीं है। हिमालय से कन्याकुमारी तक और पोरबंदर से पूर्वोत्तर तक गंदगी का शास्त्र भी एक सा है। पर वर्धा भारत के नक्शे में कुछ अलग होना चाहिए। शासन और गांधी विचार में आस्था रखने वाले लोगों और संस्थाओं-समितियों को इसके मौजूदा हाल से गुरेज रखना चाहिए तो इसलिए की यह एक ऐसे संत की पवित्र भूमि रही है जिसके विषय में प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने जो कहा वह भविष्य में शब्दशः सच होना है। यह किसी तथाकथित ईश्वर की जन्मस्थली नहीं है, जिसका कोई मिथक या आस्था का प्रश्न हो, बल्कि हाड-मांस के ऐसे संत फकीर की की भूमि है जिसका संपूर्ण जीवन इंसानियत की पहली शर्त है और जिसकी सत्या और अहिंसा प्रदत्त विश्वशान्ति की लौ पूरी दुनिया अपने हाथों में समेटे रखना चाहती है इसीलिए वर्धा भारत के नक्शे में अलग चिन्हित भी हो सकता है। सेवाग्राम में  भी पूरे आश्रम का माहौल हमें आधुनिक भगवाद और भौतिकता से अलग ले जाता है। आश्रम में आदि निवास, बापू कुटी में शाम को लालटेन का जलना, रामभाऊ जी का घंटा बजाकर चरखे की कताई पर बैठना, छोटे से छोटे कीट-पतंगे का वहाँ पर अहिंसा की परिधि में सुरक्षित रहना। कौन कह सकता है की  वहाँ बापू नहीं हैं बल्कि यह मानिए कि वे किसी काम से अन्यत्र विराजमान हैं।

आज वर्धा का दूसरा पक्ष है जिसे आश्रमवासियों ने अभी भी सहेजकर रखा है। आश्रम पर सरकार की कोई छाया नहीं पड़ी है, जैसा कि पोरबंदर में सरकार ने कीर्ति मंदिर ( बापू का माकान ) और उसके पीछे बा का माकान अपने कब्जे में ले लिया है। लेकिन दोनों माकानों के बीच कोई रास्ता नहीं बना है। पीछे की गली से जाइए और पशुओं के मल और गंदगी से कूदते - फाँदते बा के मकान तक पहुँचीएँ।

आज वर्धा में गांधीजी  के ही कारण यहाँ पर पूरी तरह से शराब को प्रतिबंधित किया गया है। इस शहर की अपनी एक अलग पहचान होती लेकिन पिछले दो दशकों में यह उक्ति बादल सी गयी है। आज पश्चिम संस्कृति की बयार चल रही हैं और यह बयार हमारी सांस्कृतिक विभिन्नता को नष्ट करने पर तुली हुई है और उससे वर्धा भी अछूता नहीं है। पर यदि देखा जाए

तो महानगरों से छन कर आती हवा ने वर्धा को उतना नम नहीं किया है जितना देश के दूसरे हिस्से में हुआ है। यहाँ पर अभी आधिनिकीकरण ने पूरी तरह से अपनी जगह बानने में सफलता नहीं प्राप्त की है। पर यदि जल्दी ही कुछ ठोस और कारगर प्रयास नहीं किया जाएगा तो निश्चित ही वर्धा से बापू और उनके आदर्शों को मिटने में कोई विशेष समय और समस्या नहीं होगी। यहाँ के लोगों में अभी भी इंसान पर विश्वास की परतें उतनी ही गहरी हैं जितनी पहले रहीं होंगी । गांधी विचार यदि यहाँ सोया हुआ है ( मृत नहीं हुआ है ) तो इसलिए कि गांधी की ज्योति को जलाए रखने वालों ने उसके लिए भरसक प्रयत्न नहीं किए। दूसरा यह की गांधीजी के बारे में व्याप्त भ्रांतियों को तोड़ने की कोशिश नहीं की गयी। महज किताबें लिखकर भ्रांतियाँ कभी दूर नहीं होती है। पढ़ने की आदत आम इंसान में ज्यादा नहीं होती है। एक ओर तो कमियां दूर नहीं हुई और दूसरी ओर गांधीजी के विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं हुआ। लेकिन वहीं गांधीजी के नाम पर यहाँ पर शराब बंदी भी हुई और उन्हीं के कारण यहाँ पर कोई फैक्ट्री आदि भी नहीं लगने दी गयी। यह शराब बंदी एक तरह की बेईमानी साबित हुई क्योंकि चोरी - चुपके से शराब लोगों को मिल ही जाती हैं और हाँ फैक्ट्री आदि के न आने से लोगों में एक तरह का गुस्सा जरूर व्याप्त हुआ। जबकि इन सबका तोड़ यह था कि इन सब चीजों को कायदे से बताएँ - समझाए जाने की जरूरत थी। समझाया तो यह भी जाना चाहिए था कि यदि शहर का कूड़ा एकत्र किया जाए तो उसका उपयोग कंपोस्ट खाद और अन्य उपयोग में किया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि वर्धा में गांधी वादी संस्थाएँ या केंद्र सक्रिय नहीं हैं बल्कि कुछ की सफलता काबिले तारीफ है। लेकिन वे अपने तक सीमित है और जनसंपर्क वहाँ पर न के बराबर है।

गांधीजी जब 1933 में वर्धा आए थे, तो सबसे पहले वे सत्याग्रह आश्रम में आकर रहे थे। यही आश्रम आज कल महिला आश्रम के नाम से चल रहा है। उसके बाद शहर के बीचों-बीच मगनवाड़ी में रहने लगे। आज कल यहाँ मगन संग्रहालय है। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की स्थापना भी गांधीजी की ही देन हैं। इसके अलावा पवनार आश्रम, ग्रामोपयोगी विकास केंद्र ( शाखाएँ - कारला और कुमारप्पा ), कुष्ठ आश्रम, चेतना विकास केंद्र, गौ सेवक मंडल, गांधी विचार परिषद्, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, बजाज वाडी, गांधी ज्ञान मंदिर आदि ऐसे केंद्र हैं जहाँ गांधी विचार और दर्शन किसी न किसी रूप में विराजमान हैं। महात्मा

गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में तो अहिंसा एवं शांति अध्ययन्नामक विभाग भी चलता हैं जहाँ पर छात्रों को पी.एच.डी. तक का अध्ययन कराया जाता है। यहाँ पर गांधीजी के विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी जो की स्वयं इसके विभागाध्यक्ष हैं और गांधीजी की स्पष्ट छाप आपमें देखने को मिलती हैं की मानव अपने जीवन में कितना संयमित और आदर्शों में खरा रहना कोई आपसे मिलते ही जान सकता है। प्रो. मनोज कुमार जो की गांधी विषय में पारंगत और इतने ज्यादा विद्वान हैं की आपसे गांधीजी का कोई भी पक्ष बचा नहीं हुआ है। इसी तरह यहाँ पर पी.एम.टी. की परीक्षाओं में गांधी विचार से संबंधित एक पेपर भी पढ़ाया जाता है और जिसको पास करना सभी के लिए अनिवार्य किया गया है। मात्र बजाजवाडी ही एक ऐसा केंद्र हैं जहाँ पर गांधी से संबंधित कोई कार्य संचालन वर्तमान में नहीं होता हैं। लेकिन यही वह बाजाजवाड़ी है जहाँ सबसे पहले 'भारत छोडो आंदोलन' का विचार पनपा था। इसी में गांधीजी के अलावा जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, खान अब्दु ल गफ्फार खां, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सरोजनी नायडू, सुभाषचंद्र बोस जैसे महारथी आते, ठहरते और बापू से मंत्रणा करते थे।

वर्धा में खादी, गोरस (दूध) से बने पकवान और गो मूत्र से बने कई उत्पाद आज भी काफी चलन में हैं और साथ ही उपयोगी भी हैं। गोरस से बने पकवान 'गोरस भंडार' के लगभग आठ केंद्रों पर मिलता हैं। यह केंद्र यहाँ पर बहुत ज्यादा लोकप्रिय हैं। जितना माल बंता है सारा बिक जाता है। सेवाग्राम में बा के नाम से 'कस्तूरबा गांधी चिकत्सालय' में दू-दू से लोग आकर बेहतर सेवा पाकर यहाँ से जाते हैं। वर्धा में सबसे बड़ी कमी दिखती है जनसंपर्क और जनसहयोग की। सेठ जमना लाल बजाज के आग्रह पर गांधीजी ने वर्धा में आकर जिस सेगाँव (तब सेवाग्राम का यही नाम था जिसे बापू ने सेवाग्राम नाम दिया) में बसने तथा गाँव के लोगों की सेवा का भार अपने काँधों पर लिया था, वहाँ आज स्थितियाँ करवट ले चुकी हैं। सेवाग्राम आश्रम और गाँव के लोगों के बीच सहयोग की भावना न के बराबर रह गई है। वहीं वर्धा शहर के आम नागरिकों को गांधी से जुड़ी संस्थाओं में भरोसा इसलिए नहीं रहा क्योंकि आज इनमें आपसा में ही भेद नज़र आता है। आज इनके कार्य शैली और विचारों में भी जमीन-आसमान का अन्तर दिखाई देता है। बात जे.पी समर्थक और विनोबा समर्थकों के बीच न दिखने वाले अलगाव की भी है। आजादी बचाओ आंदोलन को शंका की नज़र से देखने

वाले गांधीजी  यह बात पहले से जानते थे और आज तकाजा यह है कि यह मतभेद सतह के ऊपर नहीं है। सबको पता है की कौन कितने पानी में है और किसका अतीत कैसा है पर फिर भी सब एक दूसरे के आदरणीय हैं। वर्धा के प्रबुद्धजन इन बातों से नावाकिफ नहीं है। फिर इन संस्थाओं में एक आरामतलबी का भाव भी खूब पसर गया है। यदि देखा जाए तो इस संस्थाओं में काम मात्र दो या तीन घंटों तक ही चलता है इसके बाद यह सब सो जाती हैं। पवनार आश्रम का हाल तो यह है कि वहाँ देखने तक को कुछ भी नहीं है फिर भी वर्धा आने वाले श्रद्धा भाव से वहाँ जाते हैं।

सन् 1856 के पहले यहाँ पर महार नामक जाति का विशाल समुदाय था पर इसी वर्ष डॉ॰ भीम राव आंबेडकर के द्वारा लोगों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दिलाई गयी। यहाँ के बहुतायत महार समाज के लोगों ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया। डॉ॰ भीम राव आंबेडकर के प्रयासों के द्वारा आज इस समाज में बहुत ज्यादा सुधार आया है। पूर्व में इस समाज में महारों के लाडवण, सोमवंशी, बावने, कोकरे, अंधवन, बारके, भाट इत्यादि स्वरूप दिखते है। वर्धा जिले में सोमवंशी और लाडवण की संख्या अधिक है। डॉ॰ भीम राव आंबेडकर ने दीन्हीन दर्जे के पारंपरिक गाँव और कस्बों के लोगों को यह काम बंद करने को कहा। बौद्ध धर्म स्वीकार करने पर पुराने हिंदूरीति-रिवाज बंद कर दिये गए। जिले में केवल खेती पर उपजीविका, भरण-पोषण नहीं होने के कारण खेतिहर लोगों को भी मजदूरी करनी पड़ती है। आज जीविकोपार्जन हेतु बहुत संख्या में लोग पलायन कर रहे हैं और अपना स्तर ऊपर उठाने के लिए प्रयासरत हैं पर फिर भी बहुसंख्या में दलित महिलाएँ आर्थिक दृष्टि से दुर्बल हैं।

प्रत्येक वर्ष 14 अप्रैल और 6 दिसंबर में डॉ॰ भीम राव आंबेडकर का जन्म-दिवस और महा-परिनिर्वाण दिन दलित समाज के लोगों के द्वारा मनाया जाता है। 14 अक्टूबर धम्मचक्रप्रवर्तन दिन अर्थात वैशाख पुर्णिमा को बुद्ध जयंती के रूप में बहत ही ज्यादा उल्लास के साथ मनाया जाता है। बौद्ध धर्म के लोग पुर्णिमा को बहुत ही शुभ मानते हैं क्योकि बौद्ध धर्म में बहुत सी घटनाएँ इसी दिन घटित हुई थी। इस अवसर पर यहाँ पर रैली, समारोह, संगोष्ठी और विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज भी वर्धा देश को गांधी वाद के रास्ते पर लौटाने का मंत्र दे सकता है। भ्रांतिवश गांधी पर से अविश्वास खो चुके वर्धा वासियों में फिर भी कहीं न कहीं

कैसे न कैसे गांधी के सूत्र जुड़े हुए हैं। लेकिन वे लोग जो गांधी संदेश के वाहक हैं, यदि समय परिवर्तन की राह में बैठे तो उन्हें चेतना होगा। देश में व्यवस्था परिवर्तन के लिए घूमने से बेहतर और ज्यादा जरूरी है वर्धा को गांधी दर्शन और गांधी मूल्यों का माडल बनाया जाए। सच है कि समय अपनी करवट खुद लेगा।

आज के इस युग में बढ़ रहे अन्याय, अत्याचार, लोगों में लगातार नैतिक मूल्यों के ह्रास का मात्र एक ही मार्ग गांधी मार्ग के रूप में हमारे सामने आता है और यही मार्ग शेष ही रहता है। हमारा काम है प्रयत्न करते रहना इसीलिए प्रयत्न होते रहना चाहिए। यही बापू का संदेश भी था।

## सांस्कृतिक जीवन -

यहाँ का जीवन बहुत ही साधारण और लोगों के मन में बहुत ही ज्यादा शांति का भाव भरा हुआ है। आज यहाँ पर लगभग सभी धर्मों को मानने वाले लोग हैं। महाराष्ट्र का एक जिला होने के कारण यहाँ पर मराठी लोगों की संख्या बहुतायत में हैं। यहाँ पर सारे त्योहारों को मनाया जाता है। यहाँ पर कृषि कार्य करने वालों के लिए **"पोला"** मुख्य त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस त्योहार में **नंदी** बैल की पूजा की जाती है। सभी लोग मिलजुलकर इस त्योहार को मनाते हैं। पहले के समय में यहाँ पर बाज़ार परिसरों में बच्चों के साथ-साथ बड़े भी लकड़ी के बने हुए बैलों की झाकी यहाँ पर देखी जाती थी पर अब धीरे-धीरे यह चलन कम हो रहा है। इसका मिख्या कारण लोगों का कृषि कार्य से उन्मुख होना और शहरों में पालायन के कारण भी इस त्योहार में बहुत ज्यादा असर आया है।

यहाँ पर डॉ. बीम राव आंबेडकर का प्रभाव व उनके अनुयायियों की संख्या भी बहुतायत में है। अतः यहाँ पर 14 अप्रैल को बाजाज चौक बार अनुसूचित जाति (Schedule Caste) के लोगों के द्वारा बहुत ही धूम-धाम के साथ मानया जाता है।

महाराष्ट्र के लोगों का नया वर्ष मुस्लिम संप्रदाय के लोगों के ही भाँति ही होता है। यहाँ पर 'गुडी पाडवा' नमक पर्व मनाया जाता है। यहाँ के स्थानीय लोगों का कहना है कि हमारा नया वर्ष इसी पर्व से ही प्रारंभ होता है।

इस पर्व में ही यहाँ के स्थानीय लोग अपने घर के मुहाने अर्थात मुख्य प्रवेश द्वार पर आम के पत्ते से बना हुआ माला लगते हैं। गाठी नमक एक तरह का माला होता है, उसको भी लोग लगाते हैं। बहुत से लोग अपने घर पर लोटा भी लटकाते हैं। यह भी पर्व मुख्य रूप से कृषि कार्य से संबद्ध समुदायों के द्वारा किया जाता है। यह कोई निश्चित नहीं है कि यह मात्र इसी समुदाय के लिए है। इसको लगभग समूचे महाराष्ट्र में मनाया जाता है।

## भाषा:

यहाँ पर मुख्य रूप से मराठी भाषा का प्रयोग किया जाता है। पर जैसे-जैसे उद्योगों की तलाश में बाहर से लोग यहाँ पर आते है वैसे-वैसे यहाँ पर सांस्कृतिक परिवर्तन होने लग जाता है और अब आलम यह है कि यहाँ भी लगभग लोग हिंदी भाषा का प्रयोग करने लगे हैं। कुछ जगहों पर या कहा जाए तो हिन्दी,मराठी या अन्य कोई क्षेत्रीय भाषा के समझने और बोलने वाले लोगों के लिए यहाँ पर कुछ मात्र में लोग अंग्रेजी (इंग्लिश) का भी प्रयोग करते हैं। बाकी अन्य भाषा का प्रयोग समान्यतः से विशिष्ट लोग ही करते हैं जैसे कि अपवाद स्वरूप लोग सिंधी,पंजभी का भी प्रयोग करते हैं, पर उनकी संख्या यहाँ पर न के बराबर है।

वर्धा जिले में मुख्य रूप से कुणबी, मराठा, तेली, भोयर, कोष्टी और बौद्ध लोग बड़े पैमाने पर देखने को मिलते है। यहाँ पर गांधीजी , विनोबा भावे और जमुनालाल बजाज ने बहुत ही महान कार्य किए थे। जमुनालाल बजाज ने अपना वर्धा में स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर (दुर्गा सिनेमा के पास) पहली बार 1928 में हरिजनों के लिए खोला था।

वर्धा जो की नागपुर के समीप ही है। नागपपुर में भी डॉ॰ भीम राव अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किया था, इसीलिए वर्धा में भी मुख्य रूप से बौद्ध लोगों की संख्या सर्वाधिक है। महाराष्ट्र में महार जाति के लोगों ने वृहत स्तर पर

बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था। यदि देखा जाए तो मेरे इस अध्ययन में वर्धा के 10 प्रभाग या 39 वार्ड ही लिए है जिनकी कुल जनसंख्या 1,06,539 है। इनमें से मैंने अपने लघु शोध प्रबंध के लिए 100 लोगों का चयन किया है। यह सभी मैंने अपने लघु शोध कार्य की समय सीमा को ध्यान में रखकर निर्धारित किया है।

शहर में बोली जाने वाली बोलियों का प्रतिशत

| भाषा | कुल | ग्रामीण | नगरी |
|---|---|---|---|
| आसामी | अत्यल्प | अत्यल्प | ..... |
| बंगाली | 0.01 | 0.01 | 0.23 |
| गुजराती | 0.41 | 0.16 | 1.16 |
| हिन्दी | 6.55 | 4.08 | 13.94 |
| कन्नड़ | 0.02 | 0.01 | 0.04 |
| काश्मीरी | अत्यल्प | ..... | अत्यल्प |
| मलयालम | 0.03 | 0.02 | 0.26 |
| मराठी | 86.64 | 90.65 | 74.62 |
| ओड़िया | 0.02 | 0.01 | 0.54 |
| पंजाबी | 0.13 | 0.07 | 0.81 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सिंधी | 0.63 | 0.04 | 0.82 |
| तमिल | 0.04 | 0.03 | 0.27 |
| तेलगु | 0.30 | 0.25 | 0.44 |
| उर्दू | 2.07 | 1.06 | 5.10 |
| अन्य | 3.15 | 3.61 | 1.77 |
| कुल | 100 | 100 | 100 |

## वर्धा मौसम :-

वर्धा शहर में आम तौर पर गर्म गर्मी और हल्की सर्दी का अनुभव किया जाता है। साल के अधिकांश समय यह गर्म ही होता है। हालांकि सर्दियाँ मुख्य रूप से सूखी होती हैं फिर भी यह समय वर्धा घूमने के लिए उपयुक्त है। तब यहाँ वातावरण सुखद हो जाता है और घूमना दस गुना ज़्यादा आनंददायक होजाता है।

मार्च के महीने से लेकर मई तक बहुत अधिक गर्म मौसम यहाँ की विशेषता है। दिन के समय तापमान 30 डिग्री सेल्सियस के आस पास होता है। कभी कभी तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक जाता है तथा 28 डिग्री सेल्सियस तक गिरता है। वर्ष का मई महीना सबसे अधिक गर्म होता है और आमतौर पर इस समय यात्रा से परहेज़ किया जाता है।

वर्धा में मानसून का मौसम जून से सितंबर तक होता है। इस दौरान दक्षिणी पश्चिमी मानसून के कारण यहाँ बहुत अधिक मात्रा में वर्षा होती है। वर्षा के कारण झुलसाने वाली गर्मी से राहत मिलती है। वर्धा की सैर के लिए मानसून के बाद का अक्टूबर से नवंबर तक का समय उत्तम है ।

वर्धा में ठंड का मौसम दिसंबर से फरवरी तक होता है। वर्धा में सर्दियों का मौसम देर से आता है और जब यह आता है तो एक स्वागत योग्य परिवर्तन होता है । दिसंबर के महीने में यहाँ निम्नतम तापमान की अपेक्षा की जाती है जो वर्ष का सबसे ठंडा महीना होता है जब तापमान लगभग 15 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है । अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस तक होता है।

कृषि - वर्धा एक कृषि प्रधान जगह हैं, प्रायः ऐसा सुना जाता है। यह वास्तविकता नहीं है। आज यहाँ पर कृषि कार्य बहुत ही सम्पन्न परिवारों, समुदायों के ही द्वारा किया जाता है। यहाँ पर ज्वार, कपास, मूंग, तुवर, मुई तुवर आदि का उत्पादन यहाँ पर होता हैं। यहाँ पर कुल कपास का 33% कपास का उत्पादन वर्धा में ही होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर गन्ने, संतरा और केले की भी खेती की जाती हैं।

उद्योग - कपास की अधिकता के कारण यहाँ पर कपास पर आधारित उद्योगों की बाहुल्यता है। इस जिले से ही राष्ट्रीय राजमार्ग -6 और राष्ट्रीय राजमार्ग -7 इसी जिले से होकर गुजरता है ।

## प्रसिद्ध स्थान :

वर्धा की प्रसिद्धि यहाँ के कुछ प्रमुख स्थलों की वजह से ज्यादा महत्ता प्रदान की जाती है। यहाँ के कुछ प्रसिद्ध जगह है जैसे -राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, सेवाग्राम गांधीजी आश्रम , पवनार विनोबा भावे आश्रम, कस्तूरबा स्वास्थ्य समिति, गीताई मंदिर।

**गांधी ज्ञान मंदिर -** बजाजवाडी से सामने बना यह एक सार्वजनिक पुस्तकालय है। गांधी जी द्वारा रचित और उनसे संबंधित समस्त पुस्तकों को यहां देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त साहित्य, अर्थशास्त्र, राजनीति और सामाजिक विज्ञान के संबंधित अनेक बहुमूल्य पुस्तकों का विस्तृत संग्रह भी यहां देखा जा सकता है। इस ज्ञान मंदिर की नींव1950 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने डाली थी और इसका उदघाटन पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 1954 में किया था।

**लक्ष्मी नारायण मंदिर-** यह भारत का प्रथम मंदिर है जिसमें 1928 में हरिजनों के प्रवेश निषेध को हटाया गया था। इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि ऐसा करने के लिए किसी प्रकार का बाहरी दबाव नहीं था।

**बजाजवाडी-** स्वर्गीय जमनालाल बजाज के इस निवास स्थल को स्वतंत्रता सैलानियों के आतिथ्य का सौभाग्य प्राप्त है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, राजाजी, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जसे नेता वर्धा आगमन पर यहां ठहरते थे। वर्किंग कमेटी की अनेक बैठकें यहां हो चुकी हैं।

**मगन संग्रहालय -** यह संग्रहालय खादी और ग्रामीण उद्योगों से संबंधित है। मगनलाल गांधी के नाम पर इस संग्रहालय का नाम पड़ा। मगनलाल ने महात्मा गांधी को सूत कातने के उद्योग को स्थापित करने में सहायता की थी। संग्रहालय की इमारत में एक विशाल हॉल है और यह दो भागों में विभाजित है। एक भाग खादी और दूसरा ग्रामीण उद्योगों से संबंधित है। संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर यक्ष और यक्षी की आकर्षक तस्वीरें देखी जा सकती हैं।

**पवनार-** यह एक ऐतिहासिक गांव है जो धाम नदी के तट पर बसा है। यह गांव जिले की सबसे प्राचीन बस्तियों में एक है। राजपूत राजा पवन के नाम पर इसका नाम पवनार पड़ा। गांव में गांधी कुटी और आचार्य विनोबा भावे का परमधाम आश्रम देखा जा सकता है।

**सेवाग्राम आश्रम-** सेवाग्राम आश्रम की स्थापना 1933 में महात्मा गांधी द्वारा की गई थी। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम 12 वर्ष यहीं व्यतीत किए थे। गांधी जी जिस झोपड़ी में रहते थे वह और उनका चरखा आज की अपने मूल रूप में देखा जा सकता है। यात्रियों की सुविधा के लिए यहां यात्री निवास भी बना हुआ है। आश्रम के निकट ही गांधीजी के जीवन से जुड़ी

प्रदर्शनी भी देखी जा सकती है । यह आश्रम नागपुर स्टेशन से 75 किमी. और वर्धा रेलवे स्टेशन से 8 किमी. की दूरी पर है ।

## नगर परिषद् की संरचना व गठन

पंचायती राज संस्थाओं के लिए 73 वें संविधान संशोधन के द्वारा गांवों के विकास के लिए जैसा प्रबंध शासन के द्वारा किया गया वैसे ही स्थानीय नगर निकायों की स्वायत्त शासन की लोकतान्त्रिक इकाइयों के रूप में कार्य करने की व्यवस्था करने के लिए 74 वें संविधान संशोधन द्वारा किए गए।

नगर पालिका से संबंधित नया भाग 9 (क) संविधान में जोड़ा गया । किसी क्षेत्र की जनसंख्या, स्थानीय शासन के लिए प्राप्त राजस्व, कृषि से इतर कार्य कलापों में नियोजन की प्रतिशतता, क्षेत्र के आर्थिक महत्व आदि आधारों पर नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद् अथवा नगर निगम स्थापित किए जाने का उपबंध किया गया है । ग्राम और नगर के बीच

संक्रमण शील क्षेत्र में नगर पंचायत, छोटे नगरों में नगर पालिका परिषद् और बड़े नगरों में नगर निगम होंगे।

नगर पालिका में सभी स्थान प्रत्यक्ष निर्वाचन के द्वारा चुने हुए व्यक्तियों से भरे जाएँ गे। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात में स्थान आरक्षित होंगे और इन कुल स्थानों में एक-तिहाई स्थान उनकी महिलाओं के लिए होंगे। इसके साथ, कुल सीटों में से एक-तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी और क्रम से आवंटित की जाएँगी। राज्य का विधान मंडल पिछड़े वर्ग के लिए भी आरक्षण का उपबंध कर सकेगा।

प्रत्येक नगर पालिका का कार्यकाल पाँच वर्ष का होगा। किसी नगर पालिका को भंग करने से पहले उसे सुने जाने का अवसर दिया जाएगा और यदि भंग किया जाए तो छः महीने के भीतर ताजा चुनाव करने होंगे।

राज्य का विधान मंडल विधि द्वारा नगर पालिकाओं को ऐसे अधिकार और उत्तरदायित्व सौंप सकेगा जिससे वे स्वशासित संस्था के रूप में काम कर सकें, आर्थिक वकास और सामाजिक न्याय के लिए योजनाएँ तैयार कर सकें, उन्हें सौंपे गए कार्य कर सकें तथा उन्हें सौंपी गई योजनाओं को क्रियान्वित कर सकें। संविधान में एक नई अनुसूची -12वीं अनुसूची- में न विषयों का विवरण दिया गया जिनसे संबंधित योजनाओं के बारे में नगरपालिका को विशेष अधिकार और उत्तरदायित्व दिये जा सकेंगे।

राज्य विधानमंडल विधि द्वारा नगर पालिकाओं को कुछ कर, शुल्क आदि लगाने और वसूल करने का अधिकार दे सकेगा तथा राज्य सरकार द्वारा वसूल किए गए करों आदि से

अनुदान दे सकेगा। नगरपालिकाओं की वित्तीय स्थिति की पुनरीक्षा के लिए एक वित्त आयोग होगा जो नगर पालिकाओं की वित्तीय स्थिति सुधारने के लिए आवश्यक सिफारिश भी कर सकेगा।

नगरपालिकाओं के लिए निर्वाचनों का निरीक्षण, निदेशन और नियंत्रण राज्य निर्वाचन अधिकारी के हाथों में होगा।

चौहत्तरवाँ संविधान संशोधन अधिनियम लोक सभा में 22 दिसंबर, 1992 को पास हुआ और राज्य सभा में 23 दिसंबर, 1992 को। इसे राष्ट्रपति की अनुमति 20 अप्रैल, 1993 को मिली और यह 1जून, 1993 को प्रभावी हुआ।

**नगर निगम** - एक स्थानीय शासी निकाय के लिए कानूनी नाम होता है, जो (लेकिन जरूरी सीमित नहीं) शहर, काउंटियों, कस्बों, बस्ती, चार्टर बस्ती, गांवों, और नगर सहित स्थलों के लिए प्रयुक्त शब्द होता है। नगर निगम के समावेश तब होता है जब ऐसे नगर पालिकाओं हो स्वयं राज्य या प्रांत में वे स्थित हैं के कानूनों के तहत संस्थाओं के संचालकअक्सर, इस घटना को पुरस्कार या नगर निगम के एक चार्टर की घोषणा से चिह्नित है।

भारत में एक नगर निगम एक स्थानीय सरकार के रूप में २ लाख या उससे अधिक की जनसंख्या के एक शहर का प्रशासन करता है। पंचायती राज प्रणाली के तहत, यह राज्य सरकार के साथ सीधे संपर्क रखता है, हालांकि यह प्रशासनिक दृष्टि से जिले के अधीन ही आता है व उसी में स्थित होता है। भारत में सबसे बड़ा नगर निगमों वर्तमान में दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई के बाद मुंबई रहे हैं।

## नगर परिषद् Municipal Council

**गठन -** 74 वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा नगर परिषद् की स्थापना की व्यवस्था छोटे नगरों में की गई है जो महानगर की श्रेणी में नहीं आते अर्थात ये एक लाख से अधिक और पाँच लाख तक की जनसंख्या वाले लघु शहरी क्षेत्र हैं।

**संरचना -** नगर परिषद् के सभी स्थानों की पूर्ति प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा की जाती है इस हेतु समस्त नगर परिषद् प्रादेशिक क्षेत्र को वार्डों में विभाजित किया जाता है। वार्डों के प्रतिनिधि पार्षद कहलाते हैं। नगर परिषद् के अध्यक्ष के निर्वाचन की विधि राज्य विधान मंडलों की इच्छा पर आधारित है। नगर परिषद् में भी नगर पंचायतों / नगर पालिकाओं के समान ही अनुसूचित जातियों, जनजातियों, महिलाओं एवं पिछड़े वर्गों के आरक्षण के प्रावधान किए गए है। नगर परिषद् का कार्यकाल भी 5 वर्ष निर्धारित किया गया है। कार्यकाल संबंधी अन्य प्रावधान भी नगर पंचायत / पालिका के समान है। कार्य, शक्तियाँ एवं उत्तरदायित्व की भी समान व्यवस्था है। नगर परिषद् की संरचना में 1- पार्षद 2- अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष 3- अधिशासी अधिकारी एवं आयुक्त4- समितियाँ सम्मिलित है।

**कार्य शक्तियाँ एवं उत्तरदायित्व -**

नगर परिषद् को एक निगमित निकाय माना गया है अर्थात इसे शाश्वत उत्तराधिकार प्राप्त होता है। इसे संपाती के क्रय व विक्रय का अधिकार प्राप्त है। इसको एक सामान्य मोहर होती है। यह किसी के विरुद्ध वाद ला सकती है तथा इसके विरुद्ध भी वाद लाया जा सकता है। नगर परिषद् पर राज्य सरकार का नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण रहता है।

नगर परिषद् के कार्य बारहवीं अनुसूची में सूचीबद्ध कार्यों के क्षेत्राधिकार तक है। राज्य विधानमंडल इन्हें ऐसी शक्तियाँ व उत्तरदायित्व सौंप सकता है जो इन्हें स्वशासन की संस्था के

रूप में विकसित करें। राज्य विधानमंडल इन्हें सामाजिक न्याय एवं आर्थिक विकास के लिए योजनाएँ तैयार करने एवं इस हेतु कार्यों के संपादन हेतु भी निर्देशित भी कर सकता है। इन्हें शुल्कों, फ़ीसों, संग्रह एवं विनियोग हेतु प्राधिकृत किया जा सकता है। इन पर राज्य सरकार का नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण भी रहता है।

नगर परिषद् राज्य के नगर पालिका अधिनियम द्वारा शासित होती है। इसके सदस्य सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर निर्वाचित होते हैं। नगर परिषद् में तीन प्रकार के सदस्य होते हैं -

1- पार्षद

2- पदेन सदस्य

3- वरिष्ठ सदस्य (एलडरमैन)।

यहाँ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए अलग से सीटें आरक्षित होती है। ऐसी सीटों की संख्या समय-समय पर राज्य सरकार के द्वारा निर्धारित की जाती है। इस परिषद् का आकार नगर की आबादी पर निर्भर करता है। वरिष्ठ सदस्यों का चुनाव निर्वाचित सदस्य करते हैं। वरिष्ठ सदस्य (एलडरमैन) अध्यक्ष या उपाध्यक्ष नहीं हो सकते हैं। नगर पालिका का कार्यकाल तीन से पाँच वर्षों तक का होता है। नगर पालिका परिषद् अपने ही सदस्यों में से एक अध्यक्ष का चुनाव करती है। वह परिषद् का प्रमुख होता है।

# वर्धा नगर परिषद् : एक परिचय

वर्धा नगर परिषद् की स्थापना 1874 में हुई थी। महाराष्ट्र को एक स्वच्छ और स्वास्थ्य प्रद जगह बनाने के उद्देश्य से वर्धा में नगर परिषद् का गठन किया गया था। आज पूरा वर्धा शहर समस्याओं के ढेर पर बैठा नजर आ रहा है। जगह-जगह फैला कचरा चारों ओर दुर्गंध फैला रहा है। इससे मच्छरों की भरमार हो गई है। नगर परिषद् के पास 243 सफाई कर्मचारी लिखित तौर पर मौजूद हैं, जिनके ऊपर शहर से प्रतिदिन 37 टन कचरा उठाने की जिम्मेदारी है। वर्तमान में स्थिति यह है कि करीब 7 टन कचरा सड़क पर ही पड़ा रह जाता है, जो दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। गली-मोहल्लों की सफाई व्यवस्था ध्वस्त हो गई है।

शहर में नगर परिषद् ने गंदगी को समेटने के लिए 45 कंटेनर लगा रखे हैं। शहर के लोगों के साथ ही सफाइकर्मी भी इनमें कचरा नहीं डालकर आस-पास ही बिखेर देते हैं। इन कंटेनरों को खाली करने ट्रैक्टर ट्रॉली या डंपर सप्ताह में एक ही बार पहुँच पा रहे हैं। इससे पूरे क्षेत्र में बदबू फैल रही है।

नगर परिषद् अधिकारियों की मानें तो शहर में 250 सफाई कर्मचारी हैं, जो अपने काम को अच्छे से कर रहें हैं। इसके अलावा सभी एक दिन साप्ताहिक अवकाश व सार्वजनिक अवकाश पर छुट्टी पर रहते हैं।

नगर परिषद् के पास शहर से कचरा उठाने के लिए कुल छः वाहन हैं जिसमें ट्रैक्टर-टॉली, डंपर, प्रेशर मशीन व जेसीबी मशीन है। गंदगी देखते हुए वाहन कम पड़ रहे हैं। अभी नगर परिषद् के आरोग्य विभाग के अधिकारी **सी.एच.टप्पे** की माने तो उन्होंने बताया की अभी हमे

शहर को स्वच्छ बनाने और कूड़ा ले जाने के लिए लोडिंग रिक्शा, जेसीबी और ट्रैक्टर की जरूरत और बताई जा रही है।

नगर परिषद् ने शहर में कुल 45 कंटेनर रखे हैं। इनमें 20 लोहे व 25 सीमेंट वाले हैं। इसके बाद भी कंटेनरों के आसपास कचरा फैला रहता है। अधिकारी के अनुसार प्रतिदिन कचरे के ढेर उठ रहे हैं। जिन्हें ईंजापुर डिपो में फेंका जा रहा है। अभी इस कूड़े का उपयोग कहीं नहीं किया जा रहा है।

## वर्धा में गंदगी की समस्या की उत्पत्ति

आधुनिकीकरण के इस तकनीकी युग में पर्यावरण तथा इससे होने वाले प्रदूषण एक गंभीर समस्या के रूप में हमारे सामने आकार खड़ा हो गया है और इस पर एक प्रश्न चिन्ह लग गया है। भौतिक विकास के लोभ में मनुष्य ने स्वयं ही प्रकृति से सामंजस्य का नाता तोड़ दिया है। ताजी हवा, साफ और स्वच्छ जल, सुंदर पर्यावरण तो जैसे बीती बातें होती जा रही हैं। प्रकृति की जिस ममतामयी गोद में वर्षों से मानव पला-बढ़ा, आज उसी को उसने ठुकरा दिया है। आज वर्धा में गंदगी एक गंभीर और भयावह समस्या के रूप में हमारे सामने आकार खड़ी हो गयी है।

वर्धा, देश का सबसे छोटा जिला है। वर्धा गांधीजी से संबंधित होने के कारण इसको 'ड्राई सिटी' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यहाँ पर पूर्णतः शराब को प्रतिबंधित कर दिया गया था। वर्धा, महाराष्ट्र का ही एक जिला है और यहाँ पर गांधीजी , डॉ. भीम राव आंबेडकर, विनोबा भावे, जमुना लाल बजाज आदि का बहुत ही व्यापक और वृहत्तर स्तर पर प्रभाव देखने को मिलता है। अतः डॉ. भीम राव आंबेडकर के द्वारा दलितों को मिले आरक्षण के कारण यहाँ पर सरकारी नौकरियों में एक विशेष समय में दलितों की नियुक्ति की गयी। यहाँ पर आंबेडकर भवन, आंबेडकर पार्क आदि की यहाँ पर स्थापना की गयी थी क्योंकि गांधीजी

अछूतोद्धार पर ज्यादा बल देते थे। आज यहाँ पर जमुना लाल बजाज जी का गांधी विचार परिषद लोगों के आकर्षण का केंद्र है। मगनवाड़ी के ठीक पीछे एम.गिरि नामक संस्था है। यह संस्था गांधी और विज्ञान को लेकर कार्य करती है। वर्धा में एक समय में ऐसा लग रहा था की लग यहाँ पर अपनी नौकरी या व्यवसाय और फिर एक निश्चित समय के उपरांत सेवानिवृत्त होकर अपना जीवन या तो यूँ ही या फिर कृषि आदि पर व्यतीत कर देंगें। परंतु एक समयान्तराल के बाद यहाँ पर लोयड्स स्टील, उत्तम गलवा जैसी कंपनियों ने यहाँ पर अपना व्यवसाय स्थापित किया और यहाँ पर काम करने के लिए बाहर से भी लोगों का आना हो गया। अतः ऐसे व्यक्ति जो की बाहर से यहाँ पर आए थे ऐसे में उनके सामने रहने की समस्या हुई तो उन सभी लोगों ने अपनी सुविधानुसार कहीं न कहीं अपनी व्यवस्था कर ली।

ऐसे लोग जो की व्यवसाय आदि के लिए यहाँ पर आए और जीविकोपार्जन हेतु रहने लगे ऐसे में शहर में एक तरह का असंतुलन बढ़ने लग गया और एक निश्चित समय के पश्चात आज यह हम सभी के सामने 'गंदगी' की समस्या के रूप में सामने आई है। पहले जब यहाँ पर लोगों की जनसंख्या कम थी उस समय लोगों के पास स्थान की उपलब्धता थी। परंतु अब समय परिवर्तित हो गया है। आज लोगों के पास रहने के लिए भी जगह की कमी हो गयी है। लगातार जनसंख्या घनत्व में होती हुई बढ़ोत्तरी जगह की कमी होती चली जा रही है। आज हमारे यहाँ वर्धा में कूड़े की समस्या एक भयावह रूप धरण करने के लिए तैयार है और यदि जल्दी ही इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया तो वह दिन दूर नहीं जब यह एक महामारी और एक विकराल समस्या का रूप धरण कर लेगी।

आज वर्धा को 2 जोन में बांटा गया है - 1- ईस्ट जोन में आर्वी - बोर गाँव रोड़, 2- वेस्ट जोन। यहाँ के प्रशासकीय अधिकारी रोड़े जी है। यहाँ पर नगर परिषद् के अंतर्गत विभिन्न विभाग क्रियाशील है। यदि टप्पे जी की मानें तो उनका कहना है की यहाँ पर कर्मचारियों की बहुत ज्यादा कमी है। यदि वास्तविकता देखी जाए तो सच में आज वर्धा नगर परिषद् में बहुत ज्यादा भ्रष्टता भरी हुई है।

वर्धा नगर परिषद् की स्थापना के समय यहाँ पर जो प्रारूप बनाया गया और इसके पश्चात यहाँ पर नगर परिषद की स्थापना की गयी मै उस प्रारूप को आपके सामने प्रस्तुत करने जा रहा हूँ।

## Methodology Followed For Preparation Of Wardha ESR

Meeting With WMC Concerned Departments

↓

Review Of Past ESR

↓

Site Visit Data Collection And Monitoring

↓

Data Assessment In DPSIR Framework

↓

Preparation Of Action Plan

↓

Finalization Of ESR

अब इसके पश्चात मैं नगर परिषद् से एकत्रित किए हुए आँकड़ों को आपके समक्ष प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। यह आंकड़ें वर्धा शहर में स्वच्छता की स्थिति का मूल्यांकन और विश्लेषण करने में सहायक सिद्ध होंगे।

**वर्धा नगर परिषद के द्वारा शहर के संबंध में प्रदान की गयी जानकारी का विवरण**

| Sector no | Population 2011 | Household | Total properties no | Residencial | Commercial | Institutional | Other |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 11870 | 2778 | 2437 | 1996 | 411 | 11 | 19 |
| 2 | 11938 | 2749 | 3597 | 2484 | 1008 | 73 | 32 |
| 3 | 10725 | 2401 | 2843 | 1897 | 925 | 7 | 14 |
| 4 | 12346 | 2909 | 2509 | 1973 | 504 | 15 | 17 |
| 5 | 10286 | 2421 | 2534 | 1978 | 525 | 24 | 7 |
| 6 | 11120 | 2626 | 2310 | 1991 | 354 | 13 | 12 |
| 7 | 9163 | 1953 | 3526 | 1508 | 1968 | 12 | 36 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 11850 | 2463 | 2227 | 2007 | 192 | 8 | 20 |
| 9 | 9261 | 2018 | 2045 | 1769 | 245 | 17 | 14 |
| 10 | 7880 | 1826 | 1611 | 1198 | 187 | 13 | 13 |
| **TOTAL** | **1,06,439** | **24,144** | **25,497** | **18,801** | **6,319** | **193** | **184** |

**वर्धा नगर परिषद में प्रभागवार एवं वार्ड वार सफाई कामगारों की संख्या**

| प्रभाग संख्या | वार्ड संख्या | मेठ का नाम | कामगारों की संख्या | कार्यक्षेत्र |
|---|---|---|---|---|
| 1ए | 1 | विनायक शेवकर | 5 | आर्वी नाका |
| 1बी | 7 | प्रशांत मेठे | 5 | शास्त्री चौक |
| 1सी | 6 | प्रशांत मेठे | 6 | |
| 1डी | 2 | विनायक शेवकर | 5 | बैचलर रोड |
| 2ए | | Contract | | |

Basis

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 2बी | 15 | अरुण अंबादे | 8 | प्रधान डाकघर |
| 2सी | 4 | प्रकाश घोडमारे | 5 | हनुमान मंदिर |
| 2डी | 3 | प्रकाश घोडमारे | 5 | |
| 3ए | 18 | दुशान्त वानखेड़े | 8 | हिंगोले चौक |
| 3बी | 14 | दुशान्त वानखेड़े | 6 | |
| 3सी | 13 | सुनील जुमने | 9 | |
| 3डी | | नरेंद्र चरके | | मालगुजारी पूरा |
| 4ए | 11 | चंद्रकांत देव | 6 | आर्वी रोड |
| 4बी | 9 | महेंद्र राऊत | 6 | बैचलर रोड |
| 4सी | 8 | महेंद्र राऊत | 6 | |
| 4डी | 10 | संदीप | 8 | आर्वी |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | नहरकर | | नाका |
| 5ए | 19 | राजू नेखाड़े | 6 | साईं नगर |
| 5बी | 17 | गणेश यादव | 9 | |
| 5सी | 21 | दिलीप कूही | 3 | |
| 5डी | 20 | दिलीप झाडे | 6 | बंजारी चौक |
| 6ए | 37 | अशोक देशमुख | 6 | गणेश मंदिर |
| 6बी | 35 | सुरेन्द्र लोहवे | 8 | तुलजा भवानी वार्ड |
| 6सी | 22 | रामदास खडसे | 11 | भगत सिंह पुतला |
| 6डी | 36 | धर्मदेव कुमरे | 11 | एस.टी. डिपो |
| 7ए | 23 | मो. अंसार | 10 | भामटी पूरा |
| 7बी | 28 | मो. अंसार | 6 | |
| 7सी | 34 | आदिनाथ ताकसानडे | 7 | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 7डी | | चन्दन महादेव खोटे | | शास्त्री चौक |
| 8ए | 16 | Contract Basis | 8 | पुलफैल, रेल्वे क्रासिंग के पास |
| 8बी | 27 | अनिल रतन | 8 | |
| 8सी | 25 | अनिल रतन | 6 | पुलफैल |
| 8डी | 28 | विनायक शिवरकर | 6 | आर्वी नाका |
| 9ए | 29 | प्रह्लाद भिमटे | 6 | शिव नगर |
| 9बी | 32 | ज्ञानेश्वर पंचभई | 4 | स्टेशन फेल |
| 9सी | 31 | ज्ञानेश्वर पंचभई | 5 | स्टेशन फेल |
| 9डी | 30 | प्रह्लाद भिमटे | 4 | |
| 10ए | 33 | मो. अख्तर | 5 | गोरक्षण वार्ड |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 10बी | 38 | मो. अख्तर | 5 | |
| 10सी | 39 | शेखर मानवरकर | 6 | दयाल नगर |
| योग | | | 242 | |

**वर्धा नगर परिषद में प्रभागवार सड़कों और नालियों का क्षेत्रफल .**

| प्रभाग संख्या | सड़कों की लम्बाई | नालियों की लम्बाई | क्षेत्रफल(वर्ग किलोमीटर में) |
|---|---|---|---|
| 1 | 7.12 | 6.70 | 0.746 |
| 2 | 7.10 | 6.65 | 2.369 |
| 3 | 6.84 | 6.90 | 0.345 |
| 4 | 7.32 | 5.10 | 0.909 |
| 5 | 7.44 | 7.05 | 0.626 |
| 6 | 8.78 | 6.25 | 0.635 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 7 | 7.75 | 8.35 | 0.678 |
| 8 | 6.90 | 3.00 | 1.334 |
| 9 | 6.87 | 6.00 | 0.821 |
| 10 | 5.77 | 4.90 | 0.577 |
| योग | 71.897 | 60.892 | 9.04 |

**वर्धा नगर परिषद् में प्रभागवार प्रतिदिन निकालने वाला कचरा -**

| प्रभाग संख्या | प्रतिदिन निकलने वाला कचरा (टन में ) |
|---|---|
| 1 | 3 टन |
| 2 | 6 टन |
| 3 | 5 टन |
| 4 | 2 टन |

| | |
|---|---|
| 5 | 2 टन |
| 6 | 2 टन |
| 7 | 4 टन |
| 8 | 3 टन |
| 9 | 1.5 टन |
| 10 | 1.5 टन |
| कुल | 30 टन |

यहाँ पर प्रतिदिन 30 टन कूड़ा निकलता है जिसको हटाने की जिम्मेदारी यहाँ के 243 सफाई कर्मियों की है। इस कूड़े को यहाँ से ले जाकर नगर परिषद् के डिपो इंजापुर में एकत्र कर दिया जाता है जहाँ पर आज भी किसी भी तरह से पुनरूपयोग का कोई प्रविधि या यंत्रों का उपयोग नहीं किया जाता है।

**वर्धा में गटरों की स्थिति**

| प्रभाग संख्या | गटरों की लम्बाई |
|---|---|

| | |
|---|---|
| 1 | 6.70 |
| 2 | 6.65 |
| 3 | 6.90 |
| 4 | 5.10 |
| 5 | 7.05 |
| 6 | 6.25 |
| 7 | 8.35 |
| 8 | 3.00 |
| 9 | 6.00 |
| 10 | 4.90 |
| कुल | 60.90 |

वर्धा में बड़े नालों की संख्या

| प्रभाग संख्या | बड़े नालों की संख्या |
|---|---|
| 1 | 1 |
| 2 | 3 |
| 3 | 1 |
| 4 | 3 |
| 5 | 1 |

| | |
|---|---|
| 6 | 1 |
| 7 | 4 |
| 8 | 1 |
| 9 | 1 |
| 10 | 1 |
| कुल | 17 |

## गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम

गांधीजी के 19 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम जो कि भारतीय समाज के पुर्ननिर्माण का घोशणा पत्र समझा जाता है या ऐसा यंत्र जो कि गांधी जी के आदर्श समाज के प्रतिमान की ओर ले जाता है।

गांधी जी के आदर्श समाज और उन आधरभूत सिद्धांतों की चर्चा के पश्चात गांधी जी के द्वारा प्रस्तुत 19 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम, का क्रियांवयन करने के द्वारा ही आदर्श समाज का सपना साकार हो सकेगा। उनकी पुस्तक "रचनात्मक कार्यक्रम : उसका अर्थ व स्थान की प्रस्तावना में उन्होंने उसे पूर्ण स्वराज्य या सत्य, आहिंसा के द्वारा संपूर्ण स्वतंत्रता के निर्माण का कार्यक्रम निरूपित किया। इसकी रूप रेखा इस प्रकार से बनाई गई है जिससे कि राश्ट्र का निर्माण निचले स्तर से उपर की ओर हो सके। सत्य और अहिंसा के द्वारा संपूर्ण स्वतंत्रता से तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता, चाहे वह राष्ट्र का सब से दीन हीन व्यकित क्यों न हो, बिना किसी भेदभाव के किसी जाति, रंग और धर्म मिले। इस प्रकार की स्वतंत्रता कभी भी एकांतिक नही होगी परन्तु यह भीतरी निर्भरता के अनुकूल होगी। गांधी जी को मालूम था कि इस कार्यक्रम की आलोचना होगी। उन्होंने लिखा कि "जब आलोचक इस प्रस्ताव पर हंसते है, उनका मतलब यह होता है कि इस कार्यक्रम को पूर्ण के प्रयास में करोड़ों लोग कभी भी सहयोग नहीं करेगें। इसमें कोई शक नहीं कि लोग हसी उड़ायेगें और मेरा उत्तर यही है कि

कोशिश करने में कोई हानि नहीं है। गंभीरता से कार्य करने वालों के समक्ष यदि अदम्य इच्छा शक्ति हो तो यह कार्यक्रम किसी भी अन्य कार्यक्रम की तुलना में सुचारू रूप से क्रियांवित किया जा सकता है। मेरे पास इसका काई दूसरा पूरक नहीं है यदि या हिंसा पर आधारित पर है तो।

## गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम

### सांप्रदायिक एकता

सभी लोग इस एकता से सहमत है। परन्तु सभी को यह ज्ञात नहीं है कि एकता का मतलब राजनीति एकता से नही है जो कि थोपी जा सकती है। इसका अर्थ है दिल का अटूट बंधन। इस प्रकार की एकता प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक भारतीय चाहे वह किसी धर्म का हो उसे अपने व्यक्तित्व के द्वारा ही प्रतिनिधित्व देना चाहिए। हिंदु, मुस्लमान, पारसी, इसाई आदि सभी हिंदू व गैर हिंदुओं को करोड़ों में से प्रत्येक हिंदुस्तानी के साथ तदाद में स्थापित करना चाहिए। उसे दूसरे धर्म के लिए भी उतना सम्मान होना चाहिए जितना स्वयं के धर्म के लिए है।

### अस्पृश्यता निवारण

हिंदूत्व पर लगे इस दाग और श्राप पर जोड़ देना बेमानी होगा। जहां तक हिंदुओं की बात है, हिंदुत्व के असितत्व के लिये यह अनिवार्य है यदि हिंदु इस समस्या को उठाते है तो वे सनातनी कहे जाने वाले लोगों को ज्यादा प्रभावित करेंगें। उनकी तरफ लड़ाकू भावना से नहीं परन्तु अहिंसात्मक तरीके से मित्रता की भावना से बढ़ना चाहिए और जहां तक हरिजनों का सवाल है, प्रत्येक हिंदू को उनसे समभाव रखते हुए उनके निकृष्ट एकांकी पन में उनसे मित्रता करना चाहिए। ऐसी पृथकता जो दुनियां ने कभी नहीं देखी जो भारत में राक्षसी रूप में बहुतायत रूप में

विधामान है। मुझे अपने अनुभव से मालुम है कि यह कितना कठिन कार्य है। यह स्वराज्य के शिखर निर्माण का हिस्सा है तथा स्वराज्य तक पहुँचने का मार्ग संकरा और दुरूह है।

**मद्य-निषेध**

गांधी जी ने एक बार कहा था कि यदि उन्हें भारत का तानाशाह यदि सिर्फ एक घंटे लिए बना दिया जाये तो वे बिना मुआवजा दिये सभी मद्य की दुकानों को बंद कर देगें। उन्होंने आगे कहा कि यदि हमें हिंसा के द्वारा अपने उद्देश्य तक पहुँचना है तो हमें उन लाखों स्त्री-पुरूषों का भाग्य सरकार पर नही छोड़ देना चाहिए। जो नशे के गुलाम है। इस बुराई को दूर करने के लिए चिकित्सा जगत के लोग महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है। इस बदलाव को लाने के लिए महिलाओं व विधार्थियों के सामने अवसर है। प्रेम से सेवा करके वे नशाखोरों को इस बुराई को छोड़ने के लिए बाध्य कर सकते है।

**खादी**

यह पूरे देश में आर्थिक स्वतंत्रता व समानता के आरम्भ को दर्शाता है। सभी को प्रयास करने दो और महिला व पुरूष को स्वयं यह मालूम हो जाएगा किमैं क्या कर रहा हूँ। खादी को अपने सभी निहीतार्थों के साथ अपनाना चाहिए। इसका अर्थ है संपूर्ण स्वदेशी मानसिकता, भारत में जीवन की सभी आवश्यक बातों को ग्रामीणों के श्रम व ज्ञान से ढूँढने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ होना। इसके लिए लोगों की मानसिकता में क्रांतिकारी परिर्वतन की आवश्यकता है। मेरे लिए खादी भारतीय मानवता उसकी आर्थिक स्वतंत्रता, समानता का प्रतीक है। अंत में नेहरू जी की काव्यात्मक अभिव्यक्ति देखें तो "खादी भारत की स्वतंत्रता का पहनावा है।

**ग्रामीण उधोग**

यह खादी से अलग पायदान पर खड़े है। इसमें स्वैचिछक श्रम के लिए बहुत अवसर नहीं है। प्रत्येक उद्योग कुछ ही व्यकितयों का श्रम ले सकते है। खादी के लिये यह उद्योग दासी नौकरानी के समान है। खादी के बिना इनका अस्तित्व नहीं हो सकता और इनके बिना खादी अपना सम्मान खो देगीं। ग्रामों की अर्थव्यवस्था जरूरी ग्रामोद्योग के बिना अधूरी है जैसे- हाथ

से पीसना, हाथ से कूटना, साबुन बनाना, कागज बनाना, माचिस बनाना, चमड़े को रंगना व तेल निकालना आदि।

**ग्रामीण स्वच्छता**

बुद्धिमत्ता का श्रम के मध्य अलगाव के फलस्वारूप ग्रामों के आपराधिक रूप से उपेक्षा हुई है। धरती पर सुंदर ग्राम फैले होने की बजाए हमारे यहां गोबर के ढ़ेर है। अनेक ग्रामों तक पहुँचने वाले मार्ग बहुत बुरा अनुभव कराते है। प्राय: हम आँख व नाक बंद कर लेते है, क्योंकि चारों तरफ ऐसी गंदगी और दुर्गंध फैली होती रहती है। राष्ट्रीय व समाजीक स्वच्छता का हमारे बीच कोई गुण नहीं है। हम स्नान तो करते है पर हमें तो यह भी ध्यान नहीं रहता कि हम जिस जगह निस्तार कर रहे उसे ही गंदा कर रहे हैं। गांधी जी ने हमारे गांव और नदी के किनारें की दैनीय स्थिति को एक बुराई कहा है। जिसकी गंदगी बीमारीयों को जन्म देती है।

**आधारभूत शिक्षा**

इस शिक्षा के द्वारा हमारे ग्रामीण आदर्श ग्रामीणों में परिर्वतित हो जाऐगें। इसे सांस्कृतिक रूप से ग्रामीणों के लिए ही तैयार किया गया है। इसकी प्रेरणा ग्रामों से ही मिली है। स्वराज्य वर्ग संरचना के निर्माण में उसकी नींव से ही बच्चों की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। विदेशियों के राज्य में उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों पर ध्यान दिया है। प्राथमिक शिक्षा की रूप रेखा भारत के ग्रामों व शहरों की आवश्यकता के अनुरूप नहीं बनाई गई है। आधारभूत शिक्षा पद्धिति जो कि चाहे वह गांवों के हो या शहरों के वह भारत का निर्माण करती है। यह शारीरिक वह मानसिक विकास करता है और बच्चों को धरातल से जोड़े रखता है तथा उज्जवल भविष्य को साकार करने के लिए बच्चों को प्रेरित करता है।

**प्रौढ़ शिक्षा**

यदि मुझे प्रौढ़ शिक्षा का प्रभार सौप दिया जाए तो मै सर्वप्रथम प्रौढ़ छात्रों के मस्तिष्क को उनके देश की महानता व विशालता द्वारा खोलूंगा। मेरी प्रौढ़ शिक्षा का अर्थ है प्रौढ़ों को सही राजनैतिक शिक्षा देना। यह बिना किसी भय के प्रदान की जा सकती है। अब बहुत देर हो चुकी है कि कोई अधिकारी इस प्रकार कि शिक्षा में हस्तक्षेप करें, परन्तु यदि हस्तक्षेप होता है तो इस

प्राथमिक अधिकार के लिए लड़ाई होना चाहिए। जिसके बिना स्वराज्य असम्भव है। जो कुछ भी मैंने लिखा है उसमें खुलापन अनुमानित है। अहिंसा डर का विरोधी है। गुप्त बातों के साथ ही साथ बोलने के द्वारा शिक्षा प्रदान करना साहित्यिक शिक्षा होगीं।

**महिलाएं**

महिलाओं का हमेशा रीति-रिवाजों और कानूनों के द्वारा दमन हुआ है। जिसके लिए उत्तरदायी है और जिसके बनाने में महिलाओं का कोई हाथ नहीं है। अहिंसा आधारित जीवन की योजना में महिला को अपना भाग्य तय करने का उतना ही अधिकार प्राप्त है, जितना कि पुरुषों को हैं। अहिंसात्मक समाज में प्रत्येक अधिकार पिछले कार्य के निष्पादन से आरम्भ होता है । सामाजिक व्यवहार के नियम आपसी सहयोग व परामर्श से ही बनाना चाहिए। यह कभी भी ऊपर से नहीं थोपा जा सकता है।

**स्वच्छता और स्वास्थ्य शिक्षा**

अपने को स्वस्थ रखने कि कला और स्वच्छता का ज्ञान अपने आप में अध्ययन का एक पृथक विषय है। एक सुव्यवस्थित समाज में नागरीकों को स्वास्थ्य व स्वच्छता का ज्ञान होता है तथा वे उसके नियमों का पालन भी करते है। यह बात बिना किसी संदेह के स्थापित हो चुकी है कि स्वास्थ्य और स्वच्छता के नियमों की उपेक्षा एवं अज्ञानता अनेक बीमारियों के लिए उत्तरदायी है। हमारे बीच ऊँची मृत्यु दर एवं अत्यधिक गरीबी इत्यादि विद्यमान हैं, परन्तु यह कम की जा सकती है, यदि लोगों को स्वास्थ्य और स्वच्छता की शिक्षा दी जाए।

**स्थानीय भाषायें**

गांधी जी के अनुसार हमारी मातृभाषा के बदले हमारे अंग्रेजी भाषा के लिए प्रेम ने पढ़े लिखें और राजनैतिक विचारधारा के लोगों को तथा जन साधारण के मध्य गहरी खाई बना दी है । भारत की भाषाओं में अपनी समृद्धि है। हम अपनी मातृ भाषा में दुरूह विचार अभिव्यक्त करने की नाकाम कोशिश करते हुए लड़खड़ाते है । विज्ञान से संबंधित शब्दों के लिए समरूपी के शब्द नहीं मिलते है । इसका परिणाम खेद जनक है । भारत की महान भाषाओं की अपेक्षा

करके हमने अपने देश की उपेक्षा की है । इसीलिए हम लोग स्वराज्य की रचना में अपना योगदान नहीं दे सकते है । इसी लिए गांधी जी कहते है कि हम सभी लोगों को अपनी स्थानीय भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है । तभी हम एक सशक्त भारत देश की कल्पना कर सकते है ।

**राष्ट्र - भाषा**

पूरे भारत के सहसंबंध के लिए हमें भारतीय जन्समूह से ऐसी भाषा की आवश्यकता है, जो कि अधिक से अधिक जानते एवं समझते हो तथा आसानी से वार्तालाप कर सके । ऐसी विवादों से परे भाषा हिंदी है। यह उत्तर के हिंदु और मुसलमानों द्वारा बोली व समझी जाती है। जब यह उर्दू के तरीके से लिखी जाती है, तब इसे हम उर्दू कहते है । 1925 में जन साधरण की भाषा समस्त भारत की बोली को हिंदुस्तानी करा दिया गया और उस समय से कम से कम हिंदुस्तानी सैद्धांतिक रूप से राष्ट्र भाषा है । इस प्रकार की राष्ट्र भाषा व्यक्ति को इस योग्य बनाए की वह उसे समझ व बोल सके तथा दोनों लिपियों में लिख सके ।

**आर्थिक समानताएं**

अहिंसात्मक स्वतंत्रता की कुंजी आर्थिक समानता है जिसका उद्देश्य धनी एवं मजदूरों के सतत संघर्ष को समाप्त करना है । इसका तात्पर्य है कि कुछ धनी लोगों को दूसरों के समकक्ष लाना जिनके पास देश का धन का अधिकतम हिस्सा है और अधभूखे और नग्न लोगों को ऊपर उठाना है । एक अहिंसात्मक सरकार का सपना साकार तब तक संभव नहीं है जब तक धनी और करोड़ों भूखे लोगों के मध्य गहरी खाई है । एक दिन खूनी आंदोलन होगा, जबतक कि धन का स्वयं अधित्याग न हो और वह सत्ता जो धन से प्राप्त है का भी त्याग न हो और इनका उपयोग सभी की भलाई के लिए हो ।

**कृषक**

यह कार्यक्रम संपूर्ण नहीं है, स्वराज एक विशालकाय संरचना है । उसके निर्माण के लिए करोड़ों हाथों को काम करना होगा । किसानों में से कृषि का वर्ग बहुत बड़ा है । जब उन्हें अपनी अहिंसा की शक्ति का आभास होगा, तब तक इस धरती पर कोई शक्ति उनका सामना नहीं कर सकेगी । उनका उपयोग सत्ता की राजनीति के लिए नहीं होना चाहिए ।

## श्रमिक

अहमदाबाद मजदूर यूनियन एक प्रतिमान है जिसका अनुकरण पूरा भारत कर सकता है। इसका आधार अहिंसा, शुद्धता और सरलता है। अपने कार्यकाल में उसे कभी भी पीछे मुड़के नहीं देखना पड़ा। यह बिना किसी बहाने व दिखावे के सामर्थ्यवान होती गई। उसके अपने उन बच्चों के लिए जिनके माता-पिता मिल में कार्यरत हैं, अस्पताल व पाठशालाएं हैं। प्रौढ़ों के लिए शिक्षा, प्रिंटिंग प्रेस, खादी और रिहायशी मकान है। सभी लोग वोट देने वाले हैं जो कि चुनाव में भाग लेते हैं। मिल मालिक और मजदूरों ने अपने आपसी संबंध स्वयं मध्यस्थता करके स्थापित किए हैं।

## आदिवासी

आदिवासी की सेवा भी इस रचनात्मक कार्यक्रम का हिस्सा है। वैसे इस कार्यक्रम का यह सोलहवां है, परंतु उनका महत्व कम है। हमारा देश इतना बड़ा है, और उसमें इतनी विभिन्न जातियां हैं कि हम में से सबसे उत्तम व्यक्ति को भी उनकी परिस्थितियों और उनके विषय में जानकारी नहीं हो सकती। जैसे ही व्यक्ति को इस विषय में पता चलता है, तो यह समझ में आता है कि एक राष्ट्र की कल्पना करना बहुत कठिन है, जब तक कि प्रत्येक इकाई को एक दूसरे के साथ एकाकार होने की जीवित चेतना न हो।

## कुष्ठ रोगी

कुष्ठ एक ऐसा शब्द है जिससे दुर्गंध आती है। मध्य अफ्रीका के बाद शायद भारत इसका घर है। फिर ये भी हमारे समाज का हिस्सा है। यद्यपि इसकी ऊँचे एवं संपन्न व्यक्ति को कोई आवश्यकता नहीं, परंतु सामाजिक तौर पर उन्हें कुष्ठ रोगियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। कुष्ठ रोगियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जबकि उनकी जानबूझकर उपेक्षा की जाती है।

## विधार्थी

जैसे कि विधार्थी होते हैं, इन्हीं युवकों और युवतियों में सेभविष्य के नेताओं का उदय होगा। दुर्भाग्य से ये अनेक प्रकार की बातों से प्रभावित होकर कार्य करते हैं। विधार्थियों के लिए गांधी जी की आचार संहिता निम्नलिखित है:

1. विधार्थियों को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए, वे विधार्थी हैं, व खोजी हैं। वे राजनीतिज्ञ नहीं हैं।

2. उन्हें राजनीतिक हड़तालों में भाग नहीं लेना चाहिए। उनके अपने आदर्श हो सकते हैं परंतु उन्हें अपनी श्रद्धा अपने आदर्श की अच्छी बातों का अनुकरण करना चाहिए न कि हड़तालों में सम्मिलित होकर।

3. उन्हें त्यागमय कतई वैज्ञानिक तरीके से करना चाहिए। उनके औजार हमेशा साफ-सुथरे अच्छे हालत में व व्यवस्थित होनी चाहिए। यदि संभव हो तो उन्हें औजार बनाना स्वयं सीखना चाहिए।

4. उन्हें खादी का उपयोग करना चाहिए।

5. उन्हें अपने व्यकितत्व में तिरंगे की भावना को स्थान देना चाहिए और अपने हृदय में अस्पृश्यता और सांप्रदायिकता की भावना नहीं रखना चाहिए।

6. अपने घायल पड़ोसी को प्राथमिक चिकित्सा देना सुनिश्चित करना चाहिए और अपने पास के गांवों में सफाई करके ग्रामीण बच्चों व प्रौढ़ों को निर्देश देना चाहिए।

7. वे राष्ट्र भाषा हिंदुस्तानी सीखेंगे, उसकी दो प्रकार की बोली और लिपि, जिससे उन्हें हिंदी व उर्दू लिपि समझ में आए व अपनापन महसूस हो।

## गौ सेवा

गांधी जी के लिए गाय एक दया की मूर्ति है। मनुष्य से विनम्र सबसे शुद्ध जीवन वाली। मनुष्य गाय के माध्यम से सभी जीवों से तादातम्य स्थापित करता है। मनुष्य के विकास में गाय का संरक्षण एक अद्भुत घटना है। संसार को यह हिंदुत्व की देन है।

धार्मिक भावनाओं के अलावा, मनुष्य के विकास में गाय की भावना अद्वितीय रही है। कृषि, भारत की अर्थव्यस्था की रीढ़ की हडडी है और गाय कृषि की रीढ़ है। गाय के उत्पादो का उपयोग बहुतायत से होता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महात्मा गांधी द्वारा बनाए गए 19 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम ने भारत देश को एक सुदृढ़ या मजबूत राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। क्योंकि महात्मा गांधी ने जो रचनात्मक कार्यक्रम बनाया है उसमें ग्रामीण परिवेश का खास ध्यान रखा है। जिससे कि ग्रामीण परिवेश को अधिक फायदा हो, और भारत एक मजबूत राष्ट्र बने। हम कह सकते है कि गांधी जी ने अपने द्वारा बनाये गए रचनात्मक कार्यक्रम को बहुत ही व्यवहार परक बताया है जो कि आज के युग में भी पूरी तरह से प्रासंगिक है तथा सरकार ने भी अपने योजनाओं मे यथा संभव इसका समावेश किया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गांधी जी का रचनात्मक कार्यक्रम जनमानस के लिए बहुत ही लाभकारी है। गांधी जी ने अपने 18 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम में भारत को स्वस्थ भारत बनाने की संकल्पना की है।

पर्यावरण-संबंधी स्वच्छता और सफाई ऐसे विषय हैं, जो महात्मा गांधीजी को बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण लगते थे। उन्होंने तो कहा था कि "स्वच्छता देवत्व के बाद दूसरे नंबर पर आती है।"[3] उनके अनुसार, करने को तो बहुत सारे काम हैं, हममें हर एक अपनी पसंद का काम चुन ले और हर स्थिति में करता रहे। हम उस काम का चुनाव करें, जिसे सर्वोत्तम ढंग से कर सकते हों। स्वच्छता की बात करते समय गांधीजी के मन में दो विचार थे - पहला यह कि किसी भी व्यक्ति को अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए दूसरे के मल की सफाई-धुलाई नहीं करनी चाहिए। गांधीजी ने 'टट्टी पर मिट्टी' या शौच करने के बाद उस पर मिट्टी दाल देने या गड्ढे का सुझाव दिया था। इस प्रविधि का प्रयोग गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका के फिनिक्स आश्रम में किया था

[3] सत्य के प्रयोग अथवा गांधी आत्मकथा पृष्ठ संख्या 251

।"[4] दूसरी बात यह कि गांधीजी की इच्छा थी कि जो लोग मैला साफ करने के काम में लगे हुए हैं, उनको अछूत न समझा जाए। उन्होंने बल पूर्वक यह कहा था कि उन लोगों को समाज में सम्मान व आदर मिलना चाहिए। गांधीजी ने तो यहाँ तक कहा था कि "भंगी भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना वायसराय।"

## गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम की प्रासंगिकता -

महात्मा गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम को ठीक तरह से चलाने के लिए ऊँचे विचार के त्यागी और सहनशील कार्यकर्ता और शहरों का मोह छोड़कर, गावों में ही आसन जमाकर बैठे ऐसे लोगों के ही द्वारा यह कार्यक्रम सफल हो पाएगा। ऐसे व्यक्ति जो कभी कष्टों और कठिनाइयों की कुछ भी परवाह नहीं करेंगे, वे ही टिक सकेंगे। उन्हें बात और और अपने काम के प्रति निष्ठा का भाव होना चाहिए। नम्रता और सरलता उनके खास लक्षण होंगे। ऐसे पक्के और सच्चे कार्यकर्ताओं के बिना गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में सफल नहीं हो सकता है। हाँ उनमें से कुछ काम थोड़ी दूर तक सफल अवश्य हो सकते हैं पर वह सफलता भी टिकाऊ न होगी, क्योंकि गांधीजी का कार्यक्रम एक प्रकार के सत्य, अहिंसा, प्रेम, त्याग, संयम, साधना आदि की बड़ी कसौटी है। इसलिए सुधार हेतु जब उस कार्यक्रम में काम लिया जाएगा तब कार्यकर्ताओं की एक टोली तैयार करनी होगी। केवल कांग्रेसी और खद्दरधारी होने से ही कोई उस कार्यक्रम को नहीं चला सकता है।

गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों को छपवाकर उनमें से हर एक का पूरा-पूरा ब्यौरा अलग-अलग छपवाकर बंटवाने की जरुरत है। इससे उन कामों को चालू करने में मदद मिलेगी। लेकिन चालू वे तभी होंगे जब सरकार उन्हें चालू करेगी। जब तक सरकार उन्हें चालू नहीं करगी तब तक अकबरों और लेक्चरों में धूम मचाने से कुछ न होगा। ग्रामोद्धार, ग्राम-सुधार, ग्राम-संगठन आदि की चर्चा तो प्राचीन काल से चलती आ रही है, मगर अभी तक कोई ठोस काम नहीं हुआ है। अब लोगों को वैयक्तिक और सामूहिक स्तर पर जागना होगा। दूसरों के

[4] दक्षिण अफ्रीका का इतिहास, गांधी जी, पृष्ठ संख्या 162

भरोसे किसी की उन्नति कभी नहीं हुई है। बस आज हमारे समाज के लोग अपने पाँव पर खुद खड़े हो जाए।

"गांधीजी ने भी **Dignity Of Labour** की बात बताई थी।"[5] यह बात गांधीजी ने टॉल्सटाय से ली थी। टॉल्सटाय ने यह **बुंदारेफ** नामक से ली थी। बुंदारेफ, टॉल्सटाय की भाँति ख्याति नहीं प्राप्त कर पाये किन्तु फिर भी **टॉल्सटाय** इनकी बहुत प्रशंसा एवं सम्मान करते थे।"

गांधीजी को हमेशा ही प्रेरित करने वाली दो चीजें थी वे हैं - अपने देश और देशवासियों के प्रति गहरा प्रेम तथा इनकी समस्याओं की चिंता।

महात्मा गांधीजी के बारे में मुझको नहीं लगता है कि किसी को बताने की कोई आवश्यकता है परंतु फिर भी बापू की कुछ विशेषताओं का जिक्र करना चाहता हूँ। गांधीजी किसी काम को छोटा नहीं मानते थे। बचपन में ही गांधीजी ने **'उका'** नामक भंगी को मिठाई देने के बहाने उसे छुआ था। उच्च जाति के होते हुए भी वह अपने को भंगी कहते थे। भंगियों के साथ रहते थे और भंगियों का काम करते लज्जित न होते थे। दक्षिण अफ्रीका में ही गांधीजी ने लोगों की सेवा करने का व्रत लिया था। यहाँ गांधीजी उनकी सब आवश्यकताएँ पूरी करते थे और उनकी सेवा करते थे। सबेरे उठकर विद्यार्थियों को पढ़ाते और अपने हाथों से पाखाने (लैट्रीन) साफ करते थे। उनके मैले कपड़े धोते थे। सभी स्त्री-पुरूषों का गांधीजी पर पूर्ण भरोसा था। गांधीजी की सेवा स्वार्थ-रहित होती थी। उसके बदले में वह कुछ नहीं चाहते थे। गांधीजी निष्काम सेवा को ही महत्वपूर्ण समझते थे।

गांधीजी ने लगभग 20 वर्षों तक दक्षिण अफ्रीका में रहकर भारतीयों की अनुपम सेवा की। हर भारतवासी उन पर जान देता था और सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार रहता था।

गांधीजी को अपने जीवन में सफाई का सदैव ध्यान रहा है। उनके कपड़े बहुत ही सादे और स्वच्छ होते थे। अपने कपडे गांधीजी स्वयं धो लिया करते थे।

[5] भरत महोदय के साक्षात्कार से

गांधीजी चाहते थे कि भारतवर्ष के सभी गाँव साफ-सुथरे रहें और यहाँ के निवासियों की रगरग में सफाई पसंदगी हो। जब गांधीजी को जमुना लाल बजाज ने वर्धा आने का प्रस्ताव दिया तब गांधीजी ने सेगाँव में ही आश्रम बनाने का प्रस्ताव दिया था। अतएव गांधीजी 1933 में सेगाँव (नवनिर्मित नाम-सेवाग्राम आश्रम) आए। उस समय सेगाँव के लोग घर के सामने ही पेशाब करते थे, पाखाना (लैट्रीन) कर देते थे, जिससे चारों ओर बदबू फैली रहती थी। गांधीजी ने लोगों को बहुतेरा समझाया कि वे टट्टी, पेशाब करने के लिए गाँव के बाहर जाएँ और साथ में गड्ढा खोदने के लिए कोई औज़ार साथ में लेकर जाए। ऐसा कहने के पीछे गांधीजी की मंशा यह थी की जब व्यक्ति पखाने के लिए जाए तो पखाने से पहले गड्ढे को खोद ले और अपने अपशिष्ट को उसी गड्ढे में दबा दे। जिससे किसी भी तरह की गंदगी और बदबू नहीं फैले। गांधीजी यह भी कहते थे कि घर की सफाई के उपरांत घर का कूड़ा भी बाहर फेंके परंतु अनपढ, गवाँर होने के कारण गाँव के लोग उनकी बात नहीं सुनते थे। अंततः गांधीजी ने स्वयं सफाई का काम करके लोगों को दिखलाना शुरू कर दिया। वह रोज सवेरे अपने साथियों को लेकर गाँव की सफाई और टट्टी-पेशाब साफ करने के लिए जाने लगे तब ग्रामवासी में भी सुधार आने लगा। ग्राम की सफाई अच्छी होने लगी।

इसी प्रकार की एक घटना और है। एक बार बापू रेल में सफर कर रहे थे। उन्हीं के पास एक आदमी बैठा हुआ था, जो बार-बार रेल में ही थूक देता था। गांधीजी ने एक बार कागज के टुकडे से थूक पौंछकर साफ कर दिया। उस आदमी ने सोचा यह बडे सफाई पसंद बनकर मुझे नीचा दिखाना चाहते हैं। उसने फिर थूक दिया। बापू ने फिर पौंछ दिया। उस व्यक्ति ने क्रोध में आकर फिर थूक दिया। गांधीजी ने विचलित न होकर फिर अपना काम किया। इस तरह बार-बार वह व्यक्ति थूकता और बापू पोंछ देते। अंत में स्टेशन आया और दिखलाई पडी, जनता की अपार भीड़। "महात्मा गांधी की जय" के नारे लग रहे थे। सब लोग उसी डिब्बे की ओर दौडे। हँसते-हँसते बापू ने जय-जय कार को नमस्कार से स्वीकार किया। वह व्यक्ति तब समझा कि महात्मा गांधी ने ही उसके थूक को बार-बार साफ किया। वह लज्जित होकर बापू के चरणों पर गिर पड़ा और क्षमा मांगी। बापू ने कहा "क्षमा की कोई बात नहीं। मैने कर्तव्य का पालन किया। समय पड़ने पर तुम भी ऐसा करना।"

सैकड़ों सालों की कंगाली के परिणामस्वरूप अज्ञानता का बोझ ढ़ोते-ढ़ोते भारत की जनता के सामाजिक जीवन को एक प्रकार का लकवा मार गया था। उसमें किसी भी घटना या प्रसंग से चेतना जाग ही नहीं सकती थी। यहाँ की जनता की शुष्क भूमि में से आर्द्रता का रहा-सहा अंश भी बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में मानो सूख गया था। डॉ. भीम राव आंबेडकर जी के ही कारण 1932-34 "हरिजनोद्धार आंदोलन" का बिगुल बजा, जिसके कारण भारत में दलितों की जो निम्नतम स्थिति थी उसमें कुछ सुधार दृष्टिगोचर हुआ। स्वयं गांधीजी ने 9 माह तक दलितोत्थान के लिए भारत भ्रमण किया। उस समय भारत की यह स्थिति थी की भारत में वर्णव्यवस्था और जातिवाद अपने चरम पर था। आर्थिक दृष्टि से भी देश की स्थिति बहुत ही निम्न स्तर की थी। इसी समय बापू ने अपने कदम गाँवों की ओर बढ़ाये। उनका मार्ग कष्टमय, लम्बा और तरह-तरह की कठिनाइयों वाला था। यदि हम यह विचार करें कि क्या थी गाँवों की दशा ? तो इस समय वहाँ पर रहने वाले लोग इसकी कल्पना ही नहीं कर सकते। दरिद्रता में से सिर ऊँचा करने की ताकत खो बैठे, ये गाँव ! अस्वच्छता और बीमारियों का घर बने बैठे थे और सैकड़ों वर्षों का अज्ञान भी अपने अंदर समाहित किए हुए थे। उस समय वर्धा में मगनवाड़ी में गांधीजी रहते थे, तभी से बापू ने पड़ोस के सिन्दी गाँव में सफाई का काम शुरु कर दिया था। सिन्दी गाँव की सफाई करने के कारण गांधीजी को बापू की जगह काका कहा जाने लगा था। यदि देखा जाए तो यह कहीं किसी दूर वीराने पर स्थित कोई अपरिचित स्थान नहीं था, बल्कि शहर के समीप ही स्थित इस ग्राम की सफाई का जिम्मा बापू ने अपने कंधों पर उठाया था। उस गाँव के लोग कई महीनों तक गांधीजी, महादेव भाई और उनके साथियों को गाँव की सफाई करने वाले भंगी ही मानते थे। हाँ, यह और बात थे की ये भंगी पैसे नहीं लेते थे, यह लाभ जरूर था ग्रामवासियों को। एक आदमी हाथ में लोटा लिये शौच करके आ रहा था। उसने उँगली से इशारा करते हुए काका (गांधीजी) से कहा, "अरे, उस तरफ जाओ,वहाँ अधिक गन्दगी है। ( त्या बाजूला जा, तिकडे जास्त घाण आहे )। ऐसा था बापू का स्वच्छता के प्रति दृढ़ निश्चय जो किसी भी तरह की कोई भी बात से कभी नहीं घबराते थे।

साबरमती (अहमदाबाद, गुजरात)- अब मै आप सभी लोगों को साबरमती आश्रम के बारे में बताता हूँ कि बापू स्वयं स्वच्छता को कितना अधिक महत्व प्रदान करते थे।यहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए शारीरिक श्रम को करना अनिवार्य किया गया था। वहाँ की सबसे खास

बात थी कि वहाँ पर मानव-मल को बाल्टियों में भरकर खाद के गड्ढ़ों में डालने और नारियल के झाड़ू से बालटियाँ साफ करने का काम था। वहाँ तो बिना ढँका हुआ ताजा मैला फावड़े से या टीन के टुकड़े से सीधे उठाने का काम था । कुछ जगहों पर तो पुराने मैले में कीड़े बिलबिलाते थे, उसको उठाना एक कठिन और बड़े ही संयमशील व्यक्ति का कार्य था, लेकिन काका निष्टापूर्वक वह काम किये जा रहे थे। एक दिन रविवार बापू जी से उनके एक शिष्य ने प्रश्न किया कि 'ऐसे काम से क्या लाभ है?' गाँव वालों पर तो कोई असर ही नहीं हो रहा है । उल्टा वे हमारे पास आकर जहाँ-जहाँ मैला पड़ा होता है, वहाँ-वहाँ जा कर उठाने का हुक्म देते हैं। तब बापू ने उत्तर देते हुए कहा कि, "बस,इतने में ही थक गए? उन्होने महादेव को इंगित करते हुए कहा कि महादेव को पुछो, वह कब से सफाई कर रहा है। महादेव के काम में भक्ति है, वह तुममें आनी चाहिए। 'अस्पृश्यता का कलंक ऐसा-वैसा नही है। उसको मिटाने के लिए हमें दीर्घ तपस्या करनी पड़ेगी।' यह जवाब मिलने के पश्चात उसने पुनः प्रश्न किया कि, 'बापू, उनमें कोई सुधार ही न होता हो तो सफाई से लाभ ही क्या है? 'उसको तालीम मिल रही है ।' तब उसने कहा, तालीम तो गाँव वालों को भी मिलनी चाहिए। बापू हँसकर बोले , 'तू वकील है,वकील। तेरे कहने में सार जरूर है । उन लोगों को तालीम देना हम को आ जाए, तो मैं नाचूँगा ।' अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बापू ने कहा , 'तेरी जगह मैं होता तो ध्यान से देखता। कोई शौच करके उठा हो तो तुरन्त वहाँ दौड़ जाता। उसके मैले में खराबी नजर आती, तो उससे नम्रतापूर्वक कहता, 'देखो भाई, तुम्हारा पेट बिगड़ा है । तुमको अमुक इलाज करना चाहिए। इस तरह उसका हृदय मैं जीत लेता।'

बापू का उत्साह बढ़ा और उन्होंने कहा, 'मेरा बस चले तो उस रास्ते को झाड़ू लगाकर साफ-सुथरा कर दूँ। इतना ही नहीं, बल्कि वहाँ फूल के पौधे लगा दूँ। रोज पानी दूँ और आज जहाँ घूरा है, वहाँ सुन्दर-सा बगीचा बना दूँ। सफाई का काम एक कला है, कला।"[6]

निजी तौर पर सेगाँव के काम को बापू ने हाथ में लिया था, तो सामाजिक तौर पर उन्होंने अपने संस्थागत प्रयोग भी शुरु कर दिये थे। मगनवाड़ी में अखिल भारत ग्रामोद्योग संघ का मुख्य दफ्तर था । लेकिन बापू ने जिन संस्थाओं की स्थापना की, उनका मुख्य दफ्तर उस क्षेत्र की एक प्रयोग-शाला ही बन जाती थी। मगनवाड़ी में एक तरफ तेल घानी चलती थी, तो दूसरी

[6] स्वच्छता और बापू, हरीशकुमार, www.harishchandra.blogspot.com, समय 2.30pm, दिनांक - 22/02/2013

तरफ हाथ-कागज बन रहा था। मगनवाड़ी में जगह-जगह मधुमक्खी-पालन की पेटियाँ दिखाई दे रही थीं। विविध प्रकार की आटा पीसने की चक्कियों के प्रयोगों में खुद बापू भी भिड़ जाते। इन उद्योगों के साथ-साथ ग्रामोद्योगों की तालीम देने के लिए विद्यालय भी चलाया जा रहा था। देश-विदेश में अर्थशास्त्र की विद्या पढ़ने के बाद, 'भारत के अर्थशास्त्र की कुंजी तो ग्रामोद्योगों में ही है। इस श्रद्धा से बैठे हुए जे.सी. कुमारप्पा और उनके छोटे भाई भारतन कुमारप्पा तो मगनवाड़ी की शोभा थे।

## बुनियादी शिक्षा -

महात्मा गांधी की भारत को जो देन है उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है। इसे वर्धा योजना, नयी तालीम, 'बुनियादी तालीम' तथा 'बेसिक शिक्षा' के नामों से भी जाना जाता है। गांधीजी ने 1937 में 'नयी तालीम' की योजना बनायी जिसे राष्ट्रव्यापी व्यावहारिक रूप दिया जाना था। यह दुर्भाग्य की बात है कि इसको गांधीजी के सपनों की भाँति नहीं सफल हो सकी और परिणाम हमारे सामने है जो आज भी हम विकासशील होने का आलाप रागते रहते हैं।

श्रम और बुद्धि के बीच जो अलगाव हो गया है, उसके कारण हम अपने गावों के प्रति इतने लापरवाह हो गए हैं कि वह एक गुनाह ही माना जा सकता है। इस लापरवाही का नतीजा यह हुआ कि देश में जगह-जगह सुहावने और मनभावने छोटे-छोटे गावों के बदले हमें कूड़े के ढेर जैसे गाँव देखने को मिलते हैं। बहुत से या कहा जाए तो लगभग-लगभग सभी गावों में प्रवेश करते समय दिल में जो एहसास होता है वह दिल को ज्यादा सुखदायी नहीं होता है। गाँव के आस-पास और बाहर इतनी गंदगी होती है और इतनी ज्यादा बदबू आती है कि अक्सर गाँव में जाने वालों को अपनी आँखें बंद कर और नाक को बंद करके ही चलना पड़ता है। बापू ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम में कहा कि ज्यादा से ज्यादा कांग्रेसियों को गावों का निवासी होना चाहिए अगर ऐसा हो तो उनका फर्ज बनता है की वो अपने गाँव को सब तरह से सफाई का नमूना बनाए। लेकिन गाँव वालों के हमेशा के यानि रोज़-रोज़ के जीवन में शरीक होने या उनके साथ घुलने-मिलने को उन्होंने कभी अपना कर्तव्य माना ही नहीं। हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो जरूरी गुण माना और न उसका विकास ही किया। यदि देखा जाए तो अपने

ढकोसलों के कारण और रीति-रिवाज़ के कारण हम अपने ढंग से नहा-भर लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुएँ के किनारे हम श्राद या वैसा ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं और जिन जलाशयों में पवित्र होने के विचार से हमें कोई झिझक नहीं होती है। गांधीजी ने लोगों की इस कमजोरी को एक बड़ा दुर्गुण माना है। इस दुर्गुण का एक ही नतीजा है कि हमारे गाँव की और हमारी पवित्र नदियों के पवित्र तटों की लज्जाजनक दुर्दशा और गंदगी से पैदा होने वाली बीमारियाँ हमं भोगनी पड़ती है।

"गांधी, सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा में लिखते हैं कि "तीस वर्षों से मैं जिसकी आतुर भाव से रट लगाए हुए हूँ वह तो आत्म-दर्शन है, ईश्वर का साक्षात्कार है, मोक्ष है।" मेरे सारे काम इसी दृष्टि से होते हैं। मेरा सारा लेखन भी इसी दृष्टि से होता है, और राजनीति के क्षेत्र में मेरा पड़ना भी इसी वस्तु के अधीन है।" इस प्रयोगों के बारे में मैं किसी भी प्रकार की संपूर्णता का दावा नहीं करता।"[7] जिस तरह वैज्ञानिक अपने प्रयोग अतिशय नियम-पूर्वक, विचार-पूर्वक और बारीकी से करता है, फिर भी उनसे उत्पन्न परिणामों को वह अंतिम नहीं कहता, अथवा वे परिणाम सच्चे ही हैं इस बारे में भी वह साशंक नहीं तो तटस्थ अवश्य रहता है, अपने प्रयोग के विषय में मेरा वैसा ही दावा है। मैंने खूब आत्म-परीक्षण किया है, एक-एक भाव की जाँच की है, उसका पृथक्करण किया है। किन्तु उसमें से निकले हुए परिणाम सबके लिए अंतिम ही है वे सच है अथवा वे ही सच हैं, ऐसा दावा मैं कभी नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूँ कि मेरे प्रयोगों को कोई प्राणभूत न समझें। यह मेरी बिनती है। मैं तो सिर्फ यह चाहता हूँ कि उनमें बताए गए प्रयोगों को दृष्टान्तरूप मानकर सब अपने-अपने प्रयोग यथाशक्ति और यथामित करें।

गांधीजी सभी रचनात्मक कामों में सफाई को महत्वपूर्ण स्थान देते रहे हैं। वस्तुतः सफाई प्रकृति का एक मौलिक गुण है। सृष्टि के सभी प्राणियों में मनुष्य सर्वोच्च प्राणी समझा जाता है। अतः मनुष्य में सफाई का स्तर सबसे ऊँचा होना चाहिए। जब सफाई प्रकृति का इस प्रकार मौलिक गुण है, तो हमारे लिए उसका सही-सही परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। खास तौर पर शिक्षा और सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

[7] सत्य के प्रयोग अथवा गांधी आत्मकथा पृष्ठ संख्या 259

**साधारणतः गन्दगी दूर करने का अर्थ 'कूड़े-करकट को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटा देना समझा जाता है । सचमुच इसे सफाई नहीं कहते । इसे तो गन्दगी का स्थानान्तरण ही कहा जा सकता है ।"[8]**

मनुष्य की मूल प्रवृत्ति आत्मरक्षा है, इसलिए उसकी चेष्टा अपनी जान बचाने के साधन एकत्र करने की है । अन्न और वस्त्र जीवन-यापन के मुख्य साधन है। यही कारण है कि हम कृषि और कताई को मूल उद्योग मानते हैं । किन्तु मनुष्य की जिंदगी व्यक्तिगत ही नहीं है। उसकी सामाजिक जिंदगी भी है। उसे अपनी व्यक्तिगत रक्षा के लिए सामाजिक रक्षा की आवश्यकता पड़ती है । सफाई का समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बिना समाज टिक नहीं सकता। अतः जिस प्रकार व्यक्तिगत जिंदगी के लिए कृषि और कताई को मूल उद्योग माना गया है, उसी प्रकार सफाई को सामाजिक जिंदगी का मूल उद्योग मानना पड़ेगा।

**सफाई का अर्थ है - स्थानच्युत वस्तुओं को अपने स्थान पर प्रतिष्ठित करना, अर्थात् कूड़े-करकट को सम्पत्ति में परिणत करना ।**

**रस्किन** ने शिक्षा की व्याख्या ही यह की है कि हवा, पानी और मिट्टी को ठीक ढंग से बरतना आना ही शिक्षा है । याने बिना बिगाड़े उनका कैसा उपयोग करना और बिगड़े हों, तो उन्हें कैसे दुरुस्त करनी ही शिक्षा है । जीवन में आरम्भ से अन्त तक सफाई की जरूरत होती है । इसलिए नयी तालीम में सफाई अनिवार्य और सहज-समवाय का विषय है । आरोग्य के लिए सफाई बहुत जरूरी है । कॉलरा, टाइफॉइड आदि बड़े रोगों और बुखार, खुजली आदि छोटे रोगों का असली कारण अस्वच्छता ही है ।

सफाई जीवन का, सभ्यता का अविभाज्य अंग है । दुनिया के हर-एक धर्म में सफाई की ओर निर्देश करने वाले आचार वर्णित हैं ।

[8] www.wikipedia.org से स्वच्छता पर लेख से, दिनांक - 23/02/2013

**वर्धा में सामाजिक कार्य और एक गैर सरकारी संगठन -**

**नयनतारा संस्था, वर्धा -**

आज वर्धा में सामाजिक सुधार का बेड़ा उठाए हुए नयनतारा संस्था के संरक्षक श्री बसंत पाण्डेय जी का भी मै आभार व्यक्त करता हूँ। आप एक ऐसी शकसियत के रोंप में जाने जाते हैं जिन्होंने दिल्ली जैसी जगह का त्याग कर आज इस गांधी शहर को पूर्णतः स्वच्छ और पावन बनाने का बेड़ा अपने काँधों पर उठा लिया है। आप लगातार नगर परिषद् और यहाँ के स्थानीय प्रशासन पर निशाना साढ़े हुए हैं यही नहीं आपने कई बार सात्यग्रह और अहिंसक आंदोलन भी किए हैं और इनका मुख्य उद्देश्य वर्धा में सफाई व्यवस्था को लेकर रहा है। आप आज भी निरंतर वर्धा में स्वच्छता को लेकर नित्या नए-नए प्रयास कर रहें हैं और बिना किसी स्वार्थ और बिना किसी लोभ है आज भी आप लोगों का कल्याण व सहायता करने में तत्पर रहते हैं।

**नयनतारा है क्या ?**

नयनतारा क्रांति मूलक सोच रखने वाली, परिवार की अवधारणा लिए एक ऐसी सामाजिक संस्था है जो अर्थहीन और अप्रासंगिक रूढ़ियों और परंपराओंको खंडित कर आम जन में स्वावलंबन की भावना जगाकर आत्मनिर्भरता का मोह पैदा करती है। यह संस्था लोककल्याण में संलग्न रहकर जन समस्याओं का मूल रूप से निवारण करने में विश्वास रखती है। भीषण और दुर्गम अमानवीय स्थितियों को सहज और सरल मानवीय गुणों में बदलना नयनतारा का धर्म - कर्म हैं। साथ ही सामाजिक विषमताओं से उत्पन्न विसंगतियों को दूर करने और गरीब तथा असहाय तबकों में अन्याय और शोषण के खिलाफ न्याय की प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए अतिबद्ध है नयनतारा। सरल शब्दों में मानव अधिकारों के लिए संघर्ष करने और सामाजिक विषमता को दूर करने का आधार, सर्वोदय की भावना बने यही नयनतारा का कर्म है और यही उसका सपना है।

आपने बताया कि 'अहिंसक क्रांति के द्वारा सामाजिक परिवर्तन' यही हमारी संस्था की मूल धारणा है।

**नयनतारा के उद्देश्य -**

अंधविश्वास का अंधेरा दूर हो। संपूर्ण सामजिक व्यवस्था में देशव्यापी क्रांतिकारी परिवर्तन हो। देश में दलविहीन लोकतान्त्रिक सत्ता की स्थापना हो। भ्रष्टाचार नेस्तनाबूद हो। मनुस्य जिस रूप में पैदा हुआ, वही रूप सर्वोत्तम है इसका ज्ञान और प्रचार बढ़े। आज वर्धा की पहचान हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से संबद्ध है। अतः मेरी संस्था और स्वयं मै इसकी पहचान को बनाए रखने में प्रयत्नशील हूँ। आज लोगों के अंदर स्व का अहम हो गया है अतः मेरी संस्था लोग को अपने तथा अपने पास-पड़ोस के प्रति भी जागरूक बनाने का काम कर रही है। मेरी संस्था में कोई न अधिकारी न कोई कर्मचारी। सभी समान है और किसी को भी किसी भी प्रकार का कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है। हमारा किसी धर्म जाति या समुदाय से कोई लेना देना नहीं है। हम सिर्फ मनुष्य के एक धर्म या संप्रदाय को मानते हैं और वह है 'मानवता'। बाकी सब कुछ व्यर्थ और भ्रम पैदा करने वाला है।

इस संस्था ने नगर परिषद् से टकराव लिया। शहर की गंदगी को लेकर, जिसका हर शरवासी से सीधा-सीधा मतलब है, हम हाईकोर्ट गए। जनहित याचिका डाली। पर शहर नहीं जागा। नगर परिषद् को दस सवालों का एक पर्चा भी निकाला तब भी यह नहीं जागे। आज धंधा बड़ा, मै बड़ा, मेरा परिवार बड़ा, शहर मरता हो तो मरे। यही कारण है कि आज पूरे वर्धा शहर में बेतहाशा गंदगी का आलम है। नगर परिषद् बेशर्म परिषद् बनकर रह गयी है।

अतः नयनतारा संस्था वर्धा की एक सशक्त और उच्च कोटि की संस्था है। इसके द्वारा किया जा रहा कार्य समाजोपयोगी और जनहित का है।

## नेहरू युवा केन्द्र संगठन(नेयुकेसं)

**नेहरू युवा केन्द्र संगठन** के बारे में ग्रामीण युवाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेने और इसके साथ साथ उनके व्यकितत्व एवं कौशल विकास के सुअवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से नेहरू युवा केंद्रों की स्थापना की गई थी। इन केन्द्रों के कार्य को देखने के लिए वर्ष 1987-88 में नेहरू युवा केन्द्र संगठन (नेयुकेसं) की स्थापना युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त शासी संस्था के रूप में की गई थी॥

नेहरू युवा केन्द्र संगठन विश्व में अपने प्रकार की जमीनी स्तरीय सबसे बडी स्वयंसेवी संस्था है। यह स्वैच्छिकता, स्व-सहायता और सामुदायिक प्रतिभागिता के सिद्धांतों के आधार पर 13-35 वर्ष के युवाओं की शक्ति को सही दिशा देता है। इन वर्षों में नेहरू युवा केन्द्र संगठन ने, जहां इसके नेहरू युवा केन्द्र स्थापित हैं वहां गांवों में युवा मंडलों का नेटवर्क स्थापित किया है। युवा मंडलों के गठन द्वारा विकास हेतु युवाशक्ति का उपयोग करने के लिए क्षेत्रों की पहचान करना नेहरू युवा केन्द्र संगठन का मुख्य लक्ष्य है।

यह युवा मंडल जमीनी स्तर पर ग्राम स्तरीय युवाओंके स्वैच्छिक कार्य समूह होते हैं जो कि युवाओं को राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में शामिल करते हैं। युवा मंडलों के इस

नेटवर्क में ही नेहरू युवा केन्द्र संगठन की मुख्य शक्ति निहित है । युवा मंडल ग्राम आधारित संस्थाएं हैं, जो कि सामुदायिक विकास और युवा सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्यरत हैं। युवा मंडलों का गठन युवा सदस्यों द्वारा किया जाता है जोकि 15-35 वर्ष की आयु के होते हैं।

युवा मंडलों के सृजन का मुख्य उद्देश्य युवा सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए विकासात्मक पहलुओं की गतिविधियों के माध्यम से समाज को सहयोग करता है। युवा मंडलों की गतिविधियां एवं कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होते हुए जिनका कार्यान्वयन विभिन्न स्थानीय विभागों एवं एजेंसियों, जिसमें राष्ट्रीय एवं राज्य-स्तरीय तथा बहु-आयामी संस्थान शामिल हैं, द्वारा, स्थानीय संसाधन एकत्रित करके किया जाता है । युवा मंडल एवं इसके सदस्य नेहरू युवा केन्द्रों के विशाल राष्ट्रीय ग्रामीण नेटवर्क के आधार को तैयार करते हैं।

**उद्देश्य -**

नेहरू युवा केन्द्र संगठन केउद्देश्य दो प्रकार के है :-

- ग्रामीण युवाओं को राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में शामिल करना।
- उनमें ऐसे कौशल एवं मूल्यों को विकसित करना जिससे कि वे आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष तथा तकनीकी राष्ट्र के उत्तरदायी एवं सृजनकारी नागरिक बन सकें।

नेहरू युवा केन्द्र संगठन, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के युवा विकास संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों तथा कुछ अन्य मंत्रालयों के सहयोग एवं समन्यव द्वारा कुछ विशेष कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का कार्य कर रहा है। इन कार्यक्रमों में विशेष रूप से अच्छी नागरिकता के मूल्यों को विकासित करना, धर्मनिरपेक्ष रूप से सोच और व्यवहार को विकसित करना, कौशल विकास करना और युवाओं को सृजनकारी एवं संगठनात्मक व्यवहार को अपनाने में सहायता करने पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।

**दृष्टिकोण -** संगठन के दृष्टिकोण में जमीनी स्तर पर अच्छे नागरिक और युवा नेतृत्व के लिए दीर्घ आवधिक विकासात्मक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। युवा

मंडलों का गठन किया जाता है और उन्हें खेल, सांस्कृतिक और स्थानीय गतिविधियों में प्रतिभागिताओं के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । युवा मंडलों के गठन एवं निरंतरता के लिए युवा नेतृत्व का विकास किया जाता है। यह नेतृत्व निम्नलिखित सृजनात्मक कार्यों के लिए अत्यंत लाभदायक है -

• स्वयं सेवा के नेटवर्क

• मूलभूत लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के सुअवसर उपलब्ध कराना और विकास करना।

• युवाओं के सशक्तिकरण में सहायता करना जैसे कौशल उत्पत्ति, स्वास्थ्य एवं जीवन कौशल के प्रति जागरूकता लाना एवं स्वरोजगार।

भारत की जनसंख्या का लगभग तीन चौथाई हिस्सा ग्रामीणों का है। इसलिए संपूर्ण राष्ट्र का वास्तविक विकास उनकी प्रगति एवं विकास पर निर्भर है। इसके अलावा जनसांखिकीय लाभांश जो इस देश को मिलता है वह युवाओं की जनसंख्या अधिक होने के कारण है। इसलिए नेहरू युवा केंद्र संगठन जैसी सबसे बडी युवा संस्थाओं, के लिए आवश्यक है कि वह अधिक से अधिक इस प्रकार के कार्यक्रम को आयोजित करें क्योकि हमने युवाओं को सशक्त करने का बीडा उठाया है।

## राष्ट्रीय कैडेट कोर (रा0कै0को0) National Cadet Corps

रा0कै0को0 हमारी तीनों सेनाओं - थल सेना, नौ सेना और वायु सेना के सेनाओं का वह संगठन है जो अपने भविष्य के नायक युवाओं को अनुशासित व देशभक्त नागरिक तैयार करने में जुटा है। इस संगठन का इतिहास प्रथम विश्वयुद्ध से जुड़ा है जब अंग्रेजों के द्वारा यूनिवर्सिटी कोर का गठन किया गया जिससे तीनों सेनाओं को दूसरी रक्षा पंक्ति उपलब्ध होने के साथ सशस्त्र सेनाओं में भर्ती के लिए काफी बड़ी संख्या में प्रशिक्षित युवा उपलब्ध हो। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 16 अप्रैल 1948 को रा0कै0को0 अधिनियम-31 के अंतर्गत रक्षा मंत्रालय के अधीन आज का यह राष्ट्रीय कैडेट कोर अस्तित्व में आया और 15 जुलाई 1948 को ग्रीष्म कालीन अवकाश के बाद स्कूल, कालेज खुलने पर रा0कै0को0 का औपचारिक उद्घाटन किया गया। बाद में जुलाई 1949 में इसके छात्रा प्रभाग का गठन किया गया। 1 अप्रैल 1950 को बम्बई तथा कोलकत्ता में एक-एक वायु सेना स्कन्ध जोड़ दिया गया जबकि जुलाई 1952 में इसका नौसेना स्कन्ध स्थापित किया गया। जिससे तीनों सेनाओं के सही प्रतिनिधित्व के साथ आज का यह संगठन खड़ा हुआ है। इस समय लगभग 13 लाख कैडेट नौकरी में हैं।

**उद्देश्य -**

1- देश के युवाओं के बीच चरित्र, भाईचारा, अनुशासन, नेतृत्व, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहस की भावना और नि: स्वार्थ सेवा के आदर्शों का विकास करना।

2 - संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं की एक मानव संसाधन बनाने के लिए, जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान और राष्ट्र की सेवा के लिए हमेशा उपलब्ध रहने के लिए सशस्त्र तैयार करना।

## 'संत गाडगे स्वच्छता अभियान'

**संत गाडगे बाबा : एक नज़र -**

संत गाडगे बाबा का जन्म महाराष्ट्र के अकोला जिले के शेणपुर गांव में 23 फरवरी, 1876 को धोबी जाति के अत्यंत गरीब परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम झिंगराजी और माता का नाम सखूबाई था। माता-पिता ने बालक का नाम डेबू रखा। यही बालक आगे चलकर संत गाडगे बाबा के नाम से विख्यात हो गया। पिता झिंगराजी का 1884 में निधन हो गया। उस समय बालक डेबू की उम्र मात्र आठ वर्ष की थी। माँ सखुबाई को बच्चों को लेकर पिता के घर दापुरे में शरण लेनी पड़ी, जहां से वे कभी शेणपुर नहीं गई। बालक डेबू का बचपन अपने नाना के घर में ही बीता था।। डेबू बचपन से ही सफाई पसंद था। गरीब दिन-दलित लोगो की दैहिक और आध्यत्मिक विकास, अंध-श्रद्धा, और सबसे बड़ी बात अस्वच्छता निर्मूलन के लिए उन्होंने जो लोकसेवा का कार्य किया, इस वजह से लोगउन्हें बाबा के नाम से बुलाने लगे।

उनके जीवन में स्वच्छता और पानी शुद्धिकरण अभियान प्रमुखता से रहते थे। जैसे वो किसी भी गावं में जाते तो वहाँ तुरंत गटर और रास्ते की सफाई का काम करने लगते। लोगों को भी स्वच्छता के लिए उत्साहित करते। गटर में ब्लीचिंग पाउडर डलवाते और अपशिष्ट पानी को पुनः चक्रित कर प्रयोग लायक बनाते थे। उस शुद्ध किए हुए पानी को फल-फूलों-पौधों में डालना, फसलों को सींचने में और कभी कभी बिजली उत्पादन तक

में उपयोग के लिए प्रोत्साहित करते। 20 दिसंबर 1956 को संत गाडगे बाबा इस संसार से विदा हो गये।

उनके इसी योगदान को देखते हुए आज महाराष्ट्र में ज्यादेतर जल शुद्धिकरण और ग्राम-सफाईकरण अभियान बाबा गाडगे के नाम पर ही है। महाराष्ट्र को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाने के लिए यहाँ पर वर्ष 2002-03 में 'संत गाडगे स्वच्छता अभियान' को चलाया गया था। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समूचे महाराष्ट्र को एक स्वस्थ व स्वच्छ राष्ट्र घोषित करना था। इसी उद्देश्य के तहत आज पूरे महाराष्ट्र में इस अभियान को बहुत ज्यादा प्रोत्साहन भी मिला है। किन्तु अब संत गाडगे स्वच्छता अभियान को लेकर सरकार और जनता में कोई विशेष उत्साह नज़र नहीं आ रहा है। आज वर्धा गांधी शहर होने के बाद भी इतना ज्यादा गंदा हो गया है तो हम अन्य जगहों की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

## निर्मल भारत यात्रा

भारत-सरकार ने स्वास्थ्य-संबंधी जागरूकता और स्वच्छता अभियान "निर्मल भारत यात्रा" के तहत देश के पाँच बड़े राज्यों - महाराष्ट्र, मध्य-प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, राजस्थान और बिहार में 02 अक्टूबर से 19 नवम्बर 2012 में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस यात्रा के मूल में यह बात थी कि वर्धा से चलकर पश्चिमी चंपारण की यात्रा के क्रम में महात्मा गांधी जिन मार्गों से होकर गुजरे वहाँ-वहाँ निर्मल भारत यात्रा का संदेश पहुँचाया जाए। यह आयोजन खुले में शौच तथा शरीर की, विशेषकर हाथों कि सफाई के मामले में जन साधारण को जागरूक करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। गाँवों के बच्चों तथा युवा-वर्ग, पुरुषों और महिलाओं ने कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका तथा भागीदारी निभाई। निर्मल भारत यात्रा की अहमियत हमारे देश में स्वास्थ्य तथा बीमारियों के परिदृश्य में बहुत साफ उभरती है। पब्लिक हेल्थ एसोसिएशन के अनुसार, भारत की आबादी में 53 प्रतिशत लोग ही मल-त्याग के बाद साबुन से हाथों की सफाई करते है। 38 प्रतिशत ही खाना खाने के पहले हाथ साफ करते है और मात्र 30 प्रतिशत खाना बनाने के पहले अपने हाथ साबुन से धोते हैं।

यात्रा के दौरान तीन महत्वपूर्ण संदेशों को प्रचारित करने का संकल्प रहा- खुले में शौच का निषेध, हस्त-प्रक्षालन तथा महिलाओं के मासिक-धर्म के प्रति सामाजिक भ्रांतियों का निवारण।

## वर्धा में सफाई को लेकर काम करने वाली संस्थाएं

Center Of Science for Villages ग्रामोपोयोगी विज्ञान केंद्र, दत्तपुर - देखा जाए तो वर्धा अपने आप में कोई बहुत ज्यादा व्यापक क्षेत्र को समाहित नहीं किए हुए है, फिर भी इस जगह की महत्ता यहाँ के सहवासियों के कारण बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। वर्धा को गांधी जी की कर्मस्थली और विनोबा जी के कारण बहुत ज्यादा महत्ता प्राप्त हुई और इसीलिए वर्धा के प्रति लोगों के मन में स्वतः ही कई तरह के विचार और कई तरह की परिकल्पनाएँ सामने आती है और हक़ीक़त कुछ ज्यादा ही भयावह है। आज वर्धा में गंदगी के कारण और शासन तथा यहाँ की जनता की उदासीनता के कारण यहाँ पर आज सफाई (स्वच्छता) जैसी समस्या का उद्भव हुआ है। यहाँ पर लोगों के जीवन और ज्यादा बेहतर तथा उनको ज्यादा से ज्यादा सुविधाएँ प्रदान करने की दृष्टि से यहाँ पर ग्रामोपोयोगी विज्ञान केंद्र नामक संस्था यहाँ पर कार्य कर रही है।

इस संस्था का मुख्य कार्य है यहाँ पर कम कीमत वाले संडास का निर्माण करना, हैंडपम्प के व्यर्थ पानी का उपयोग, कुओं के व्यर्थ पानी का उपयोग कर मानव कल्याण के साथ-साथ लोगों के जीवन को और भी ज्यादा सुविधाजनक बनाने का है। इस संस्था का काम न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु यह संस्था अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपना काम कर रही है। इसके साथ ही साथ कंपोस्ट (Compost) खाद का निर्माण, वार्मी कंपोस्ट (Warmy Compost) खाद का निर्माण आदि का कार्य भी कर रही है। लेकिन यदि हम इसके मूल उद्देश्य को देखें तो ग्रामोपोयोगी विज्ञान केंद्र संस्था का मुख्य कार्य Low Cost Toilet और Low Cost Housing से ही जुड़ा हुआ है। इसकी सबसे ज्यादा खास बात यह है कि इसमें पानी की बहुत ज्यादा बचत होती है और आदमी बहुत ही

कम पानी में स्वच्छ हो जाता है। इसमें निर्माण कार्य बहुत ही ज्यादा उत्तम तकनीकि के द्वारा किया जाता है और लागत भी बहुत ज्यादा नहीं आती है। अतः आज हमारे समाज में जहाँ की लगभग 37 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे है तो ऐसे में हमारे यहाँ ज्यादा से ज्यादा कार्य कम कीमत के हो तो सामान्य जन के लिए ज्यादा उपयोगी और ग्राह्य होगा।

1- आज वर्धा में कूड़े के Recycling की कोई भी व्यवस्था नहीं है। यहाँ से 76 कि.मी. दूर नागपुर में ही कूड़े को Recycling करने के व्यवस्था है।

2- आज वर्धा में श्री सतीश बावसे (सेवानिवृत्त बैंक कर्मी) ने भी स्वच्छता के लिए एक स्वैच्छिक संगठन का निर्माण कर इसमें शारीरिक श्रम की सहायता से भी लोगों में स्वच्छता के प्रति जन जागृति जगाने का भी काम किया है। आप यहाँ पर निःस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं। इनको किसी भी तरह का कोई सरकारी सहायता नहीं प्राप्त होती है। ये लोगों के साथ मिलकर सामूहिक धन का एकत्रण करके यह कार्य कर रहे है।

**नगर परिषद् - वास्तविकता, जिम्मेदारी एवं निदान -**

अब मै यहाँ पर क्रम वार आपके समक्ष अपने क्षेत्र कार्य में जाकर सीधे संकलित किए हुए आँकड़ों को सारणी और ग्राफ आरेख के माध्यम से प्रस्तुत करूँगा। मैंने इन आरेखों में ही उत्तरदाताओं के द्वारा बताए गए उत्तर के आधार पर विश्लेषण कर दिया है। सबसे पहले मैंने अपने लघु शोध प्रबंध के लिए100 लोगों का चयन किया था।

मैंने यह चयन वर्धा नगर परिषद् क्षेत्र में कुल 10 प्रभाग व 39 वार्डों में से जनसंख्या के आधार पर 3 प्रभाग व 9 वार्डों का चयन कर वहाँ से उत्तरदाताओं को अपने उद्देश्य के आधार पर चयन किया। अब इसके पश्चात अनुसूची के माध्यम से सूचनाओं का संकलन किया और विश्लेषण किया। यहाँ पर मै संकलित की हुई सूचनाओं को ग्राफ और सारणी के माध्यम से प्रदर्शित करने जा रहा हूँ।

# आँकड़ों का विश्लेषण

## आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

| क्रम संख्या | आयु वर्ग | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | 18-30 | 24 | 24 |
| 2- | 31-50 | 46 | 46 |
| 3- | 50 से ऊपर | 30 | 30 |
| 4- | कुल | 100 | 100 |

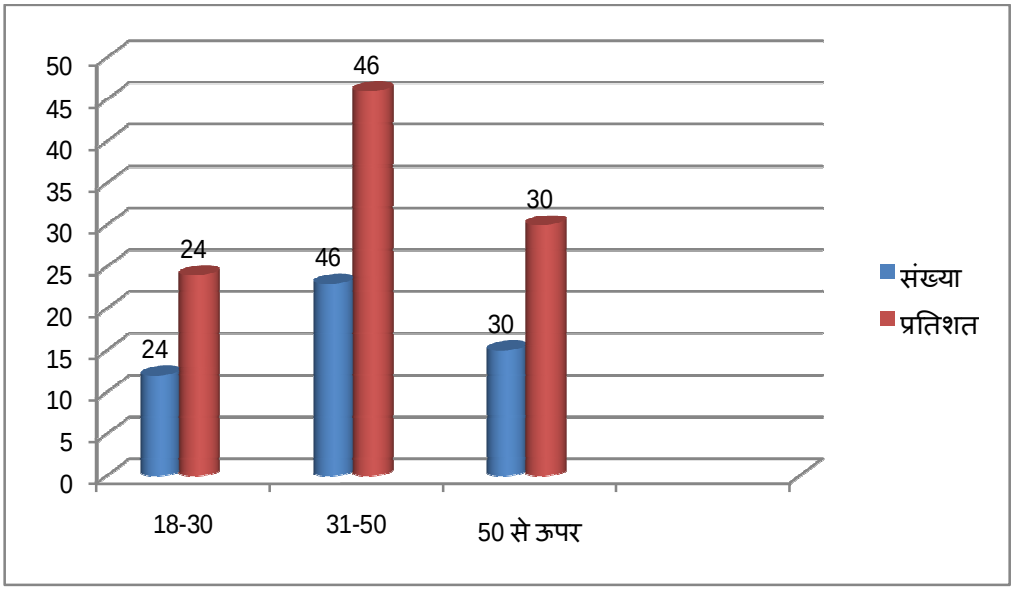


यहाँ पर मैंने उत्तरदाताओं को उनकी आयु के आधार पर वर्गीकृत किया है। यह पूर्व में निर्धारित नहीं था। आँकड़ों का विश्लेषण करने पर मैंने उत्तरदाताओं को उनकी आयु के आधार पर वर्गीकरण कर दिया है। मैंने अपने उद्देश के आधार पर उत्तरदाताओं का

चयन किया था। मैंने अपने लघु शोध प्रबंध के लिए100 लोगों का चयन किया था। जिनमें से 18-30 आयु वर्ग के 24, 31-50 आयु वर्ग के 46 तथा 50 वर्ष से ऊपर के 30 लोगों का चयन मैंने अपने शोध में अनुसूची के माध्यम से सूचनाओं के संकलन हेतु किया था।

लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण -

| क्रम संख्या | लिंग | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | स्त्री | 44 | 44 |
| 2- | पुरुष | 56 | 56 |
| 3- | कुल | 100 | 100 |

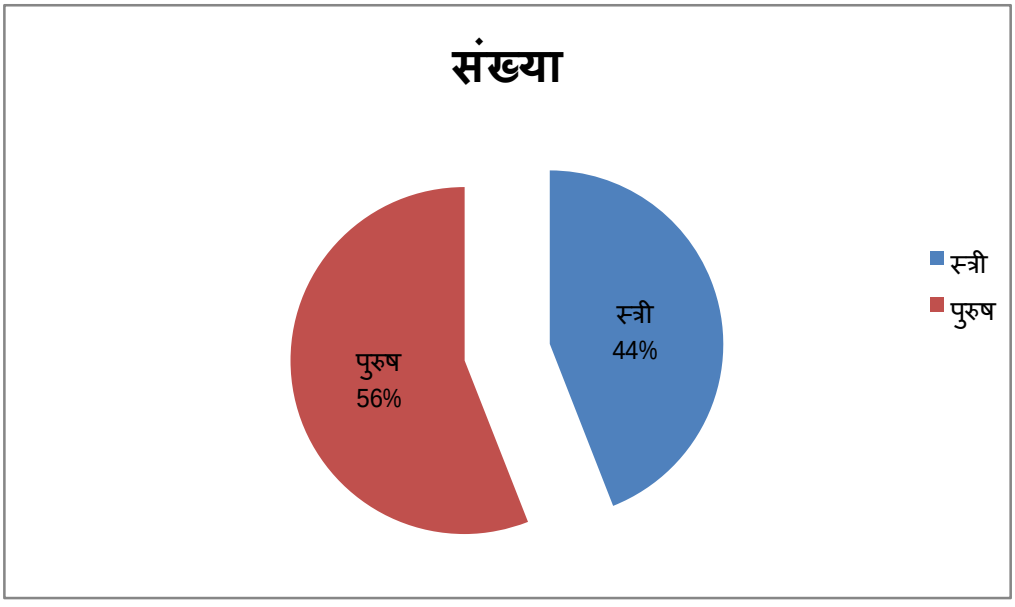


यहाँ पर मैंने उत्तरदाताओं को लिंग के आधार पर वर्गीकृत किया है। यह पूर्व में निर्धारित नहीं था। आँकड़ों का विश्लेषण करने पर मैंने उत्तरदाताओं को उनकी आयु

के आधार पर वर्गीकरण कर दिया है। यहाँ पर मेरा निदर्शन आकार 100 लोगों का था । आँकड़ों के विश्लेषण से पता चला की मेरे उत्तरदाताओं में से 56 % पुरुष उत्तरदाता और 44 महिला उत्तरदाताओं ने उत्तर दिये।

## आँकड़ों का विश्लेषण

### आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

| क्रम संख | आयु वर्ग | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | 18-30 | | |
| 2- | 31-50 | | |
| 3- | 50 से ऊपर | | |
| 4- | कुल | | |

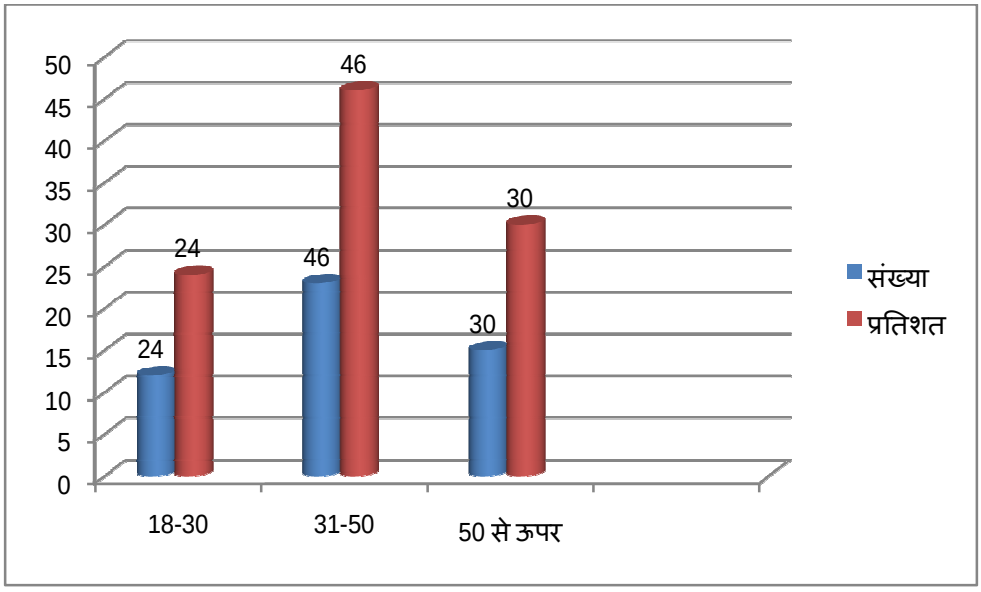


यहाँ पर मैंने उत्तरदाताओं को उनकी आयु के आधार पर वर्गीकृत किया है। यह पूर्व में निर्धारित नहीं था । आँकड़ों का विश्लेषण करने पर मैंने उत्तरदाताओं को उनकी आयु के आधार पर

वर्गीकरण कर दिया है। मैंने अपने उद्देश के आधार पर उत्तरदाताओं का चयन किया था। मैंने अपने लघु शोध प्रबंध के लिए 100 लोगों का चयन किया था। जिनमें से 18-30 आयु वर्ग के 24, 31-50 आयु वर्ग के 46 तथा 50 वर्ष से ऊपर के 30 लोगों का चयन मैंने अपने शोध में अनुसूची के माध्यम से सूचनाओं के संकलन हेतु किया था।

लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण -

| क्रम संख | लिंग | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | स्त्री | | |
| 2- | पुरुष | | |
| 3- | कुल | | |

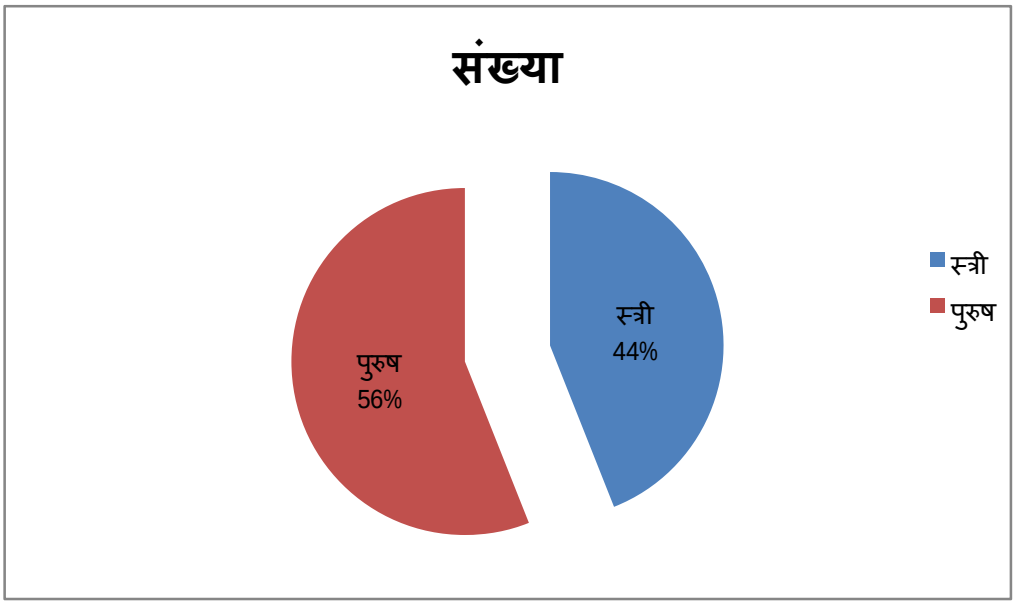

यहाँ पर मैंने उत्तरदाताओं को लिंग के आधार पर वर्गीकृत किया है। यह पूर्व में निर्धारित नहीं था। आँकड़ों का विश्लेषण करने पर मैंने उत्तरदाताओं को उनकी आयु के आधार पर वर्गीकरण कर दिया है। यहाँ पर मेरा निदर्शन आकार 100 लोगों का था। आँकड़ों के विश्लेषण से पता चला की मेरे उत्तरदाताओं में से 56 % पुरुष उत्तरदाता और 44 महिला उत्तरदाताओं ने उत्तर दिये।

## आँकड़ों का विश्लेषण -

प्रश्न संख्या 1- आप अपने घर का कूड़ा कहाँ डालते हैं ?

| क्रम संख्या | कूड़े का स्थान | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | कूड़े दान में | 32 | 64% |
| 2- | खाली स्थान में | 7 | 14% |
| 3- | घर में एकत्रित करते हैं | 11 | 22% |
| | कुल | 50 | 100% |

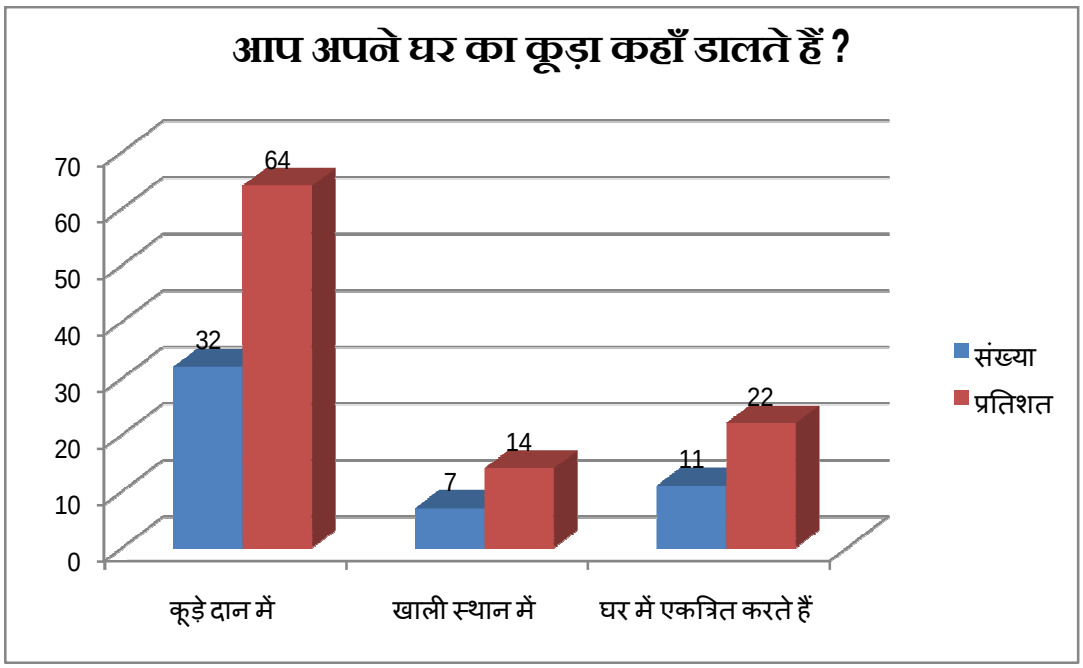


आँकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात यह प्राप्त हुआ की अभी भी लोगों में स्वच्छता के प्रति कोई विशेष उत्साह नज़र नहीं आ पा रहा है। अभी भी लोग रिक्त स्थान में भी कूड़े को दाल रहे हैं। घर में एकत्रित करने वाले भी यदि किसी भी सप्ताह नगर परिषद् का नियुक्त कर्मी यदि नहीं लेने आता है तो वे लोग भी उसको यदि कूड़े दान की व्यवस्था है तो ठीक नहीं तो वे लोग भी घर के समीप स्थित नाली, खाली पड़े मैदान आदि किसी भी जगह पर डालने में किसी भी जगह डालने में संकोच नहीं करते हैं।

## प्रश्न संख्या 2 - क्या आप अपने घर के आस-पास सफाई करते हैं ?

| क्रम संख्या | सफाई की स्थिति | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हमेशा | 44 | 44% |
| 2 | कभी-कभी | 38 | 38% |
| 3 | कभी नहीं | 18 | 18% |
| 4- | कुल | 100 | 100% |

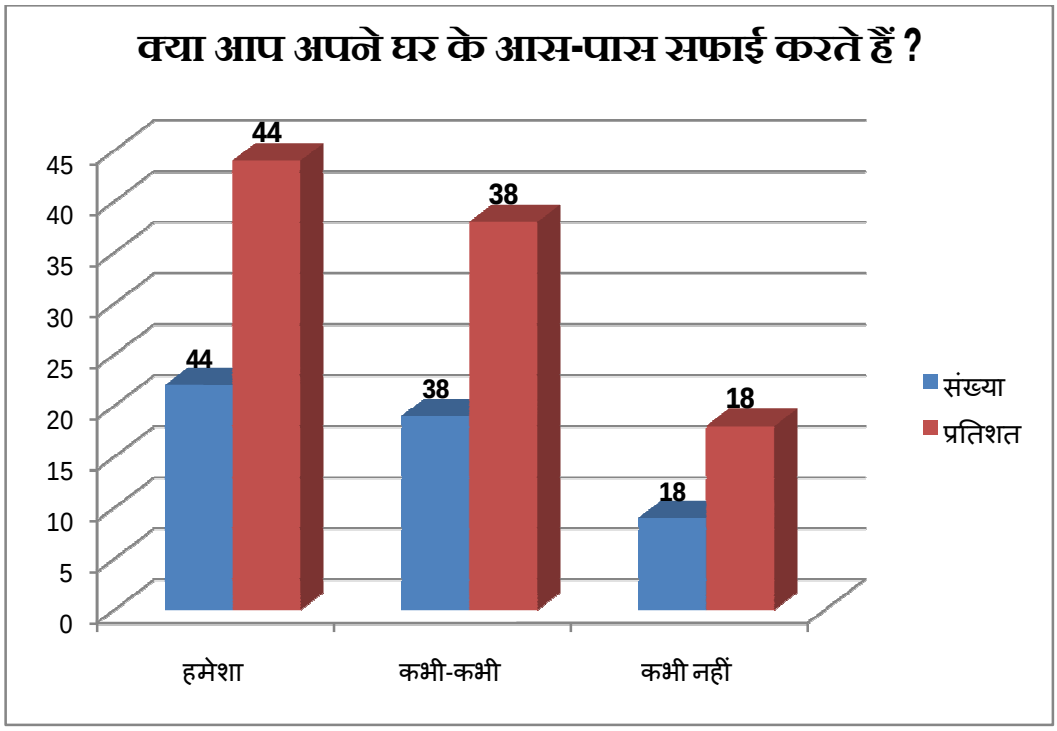


आँकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात पता चला की लोगों में अपने पास-पड़ोस के स्थानों की स्वच्छता को लेकर कोई विशेष रुचि नहीं है। सभी अपने-अपने कामों में व्यस्त है और लोगों को गांधी जी के आदर्शों और उनकी शिक्षाओं से किसी भी तरह का कोई ज्ञान भी नहीं है। यहाँ पर मात्र 44%लोग ही अपने घर के आस-पास हमेशा साफई करते हैं। 38%कभी-कभी और 18% कभी सफाई करते ही नहीं है उनका कहना है की यह काम नगर परिषद् का है।

प्रश्न संख्या 3 - आपके वार्ड में कूड़ा एकत्रित करने का स्थान कहाँ है ?

| क्रम संख्या | कूड़े को एकत्र करने का स्थान | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सामूहिक कूड़ा दान | 46 | 46% |
| 2 | नियत स्थान | 24 | 24% |
| 3 | वार्ड से बाहर स्थित किसी भी स्थान में | 18 | 18% |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4 | कहीं भी | 12 | 12% |
| 5 | कुल | 100 | 100% |

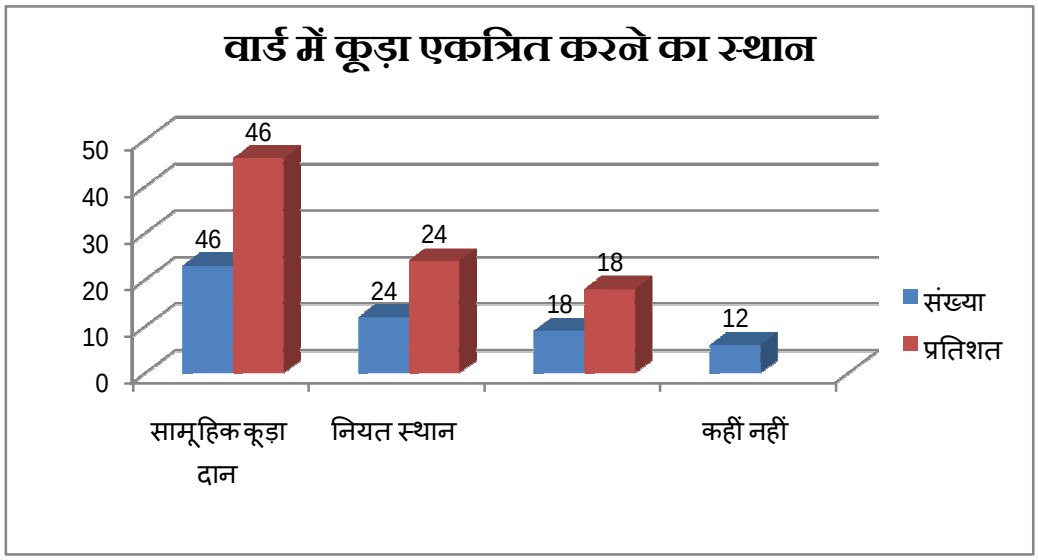


आँकड़ों के विश्लेषण से साफ पता चला है की आज भी लोग गंदगी की समस्या को गंभीरता से नहीं ले रहें है। अभी भी कुछ वार्ड ऐसे हैं जहाँ पर गंदगी का अंबार लगा हुआ है। लोग अपनी इच्छा के अनुसार कहीं भी कूड़ा दाल देते हैं। मात्र 46%लोग सामूहिक कूड़ा दान में, 24%नियत स्थान में, 18% लोग कहीं भी और 12% लोग अपने घर में ही व्यवस्था किए हुए हैं। आँकड़ों से साफ़ पता चलता है की आज वर्धा में गंदगी को लेकर लोगों में कितनी जागरूकता है। आज भी लोग यहाँ पर किसी भी तरह का कोई उत्साह या साहस नहीं दिखा रहें हैं।

प्रश्न संख्या 4 - क्या आपके घर के आस-पास सफाई के बाद ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव होता है ?

| क्रम संख्या | ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1- | हमेशा | 10 | 10% |
| 2- | कभी-कभी | 36 | 36% |
| 3- | कभी नहीं | 54 | 54% |
| 4- | कुल | 100 | 100% |

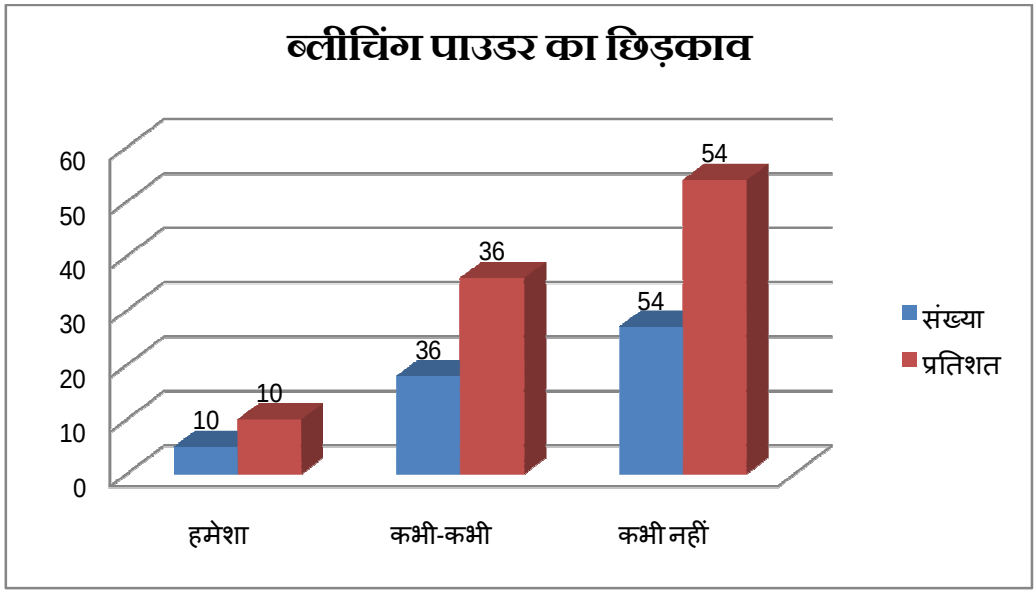


इस प्रश्न के उत्तर से साफ-सार नगर परिषद् की जागरूकता का पता चलता है। यहाँ पर आज भी बहुत से ऐसी जगह हैं जहाँ पर कभी नगर परिषद् ने ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव तक नहीं कराया हैं। यहाँ पर मात्र 10% लोगों का कहना है की हाँ यहाँ हमेशा ब्लीचिंग पावडर का छिड़काव होता है, 36 लोगों का कहना है कि कभी-कभी और 54% लोगों का कहना है की कभी नहीं। यह स्थिति साफ बताती है की हमारा स्थानीय प्रशासन वर्धा में सफाई व्यवस्था को लेकर कितना संवेदनशील है।

प्रश्न संख्या 5 - आप अपने घर में उपयोग होने वाली वस्तुओं को लाने के लिए क्या उपयोग में लाते हैं ?

| क्रम संख्या | उपयोग में लाने वाला साधन | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | पॉलिथीन | 36 | 36% |
| 2 | कागज का थैला | 6 | 6% |
| 3 | कपड़े का थैला | 58 | 58% |
| 4 | कुल | 100 | 100% |

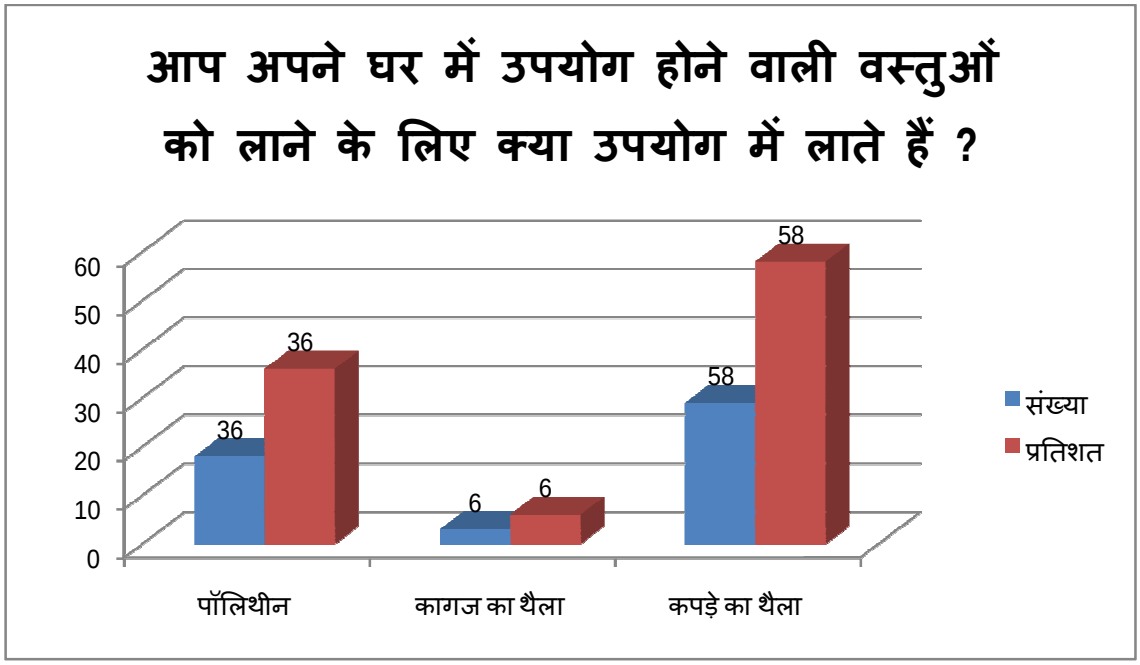


आँकड़ों के विश्लेषण से पता चला की आज भी लोगों में पर्यावरण के प्रति किसी भी तरह की कोई विशेष जागृति नहीं आई है। आज भी यहाँ पर सकार के द्वारा पालिथीन पर प्रतिबंध के बाद भी यहाँ पर 36%लोग आज भी इसका प्रयोग कर रहें हैं। अभी एक वृहत्तर स्तर पर लोगों में जनजागृती को प्रवाहित करना पड़ेगा। आज मात्र 6% लोग कागज का थैला और 58% कपड़े का थैला प्रयोग करते हैं। आज अभी बहुत व्यापक स्तर पर लोगों में पर्यावरण के प्रति चेतना जगाने का काम करना पड़ेगा ।

प्रश्न संख्या 6 - क्या आप इस बात का समर्थन करते हैं की "स्वच्छता के बिना स्वस्थ रहना संभव नहीं हो सकता है" ?

| क्रम संख्या | उत्तरदाता | उत्तर दाताओं की संख्या | उत्तर दाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | हाँ | 94 | 94% |
| 2- | नहीं | 6 | 6% |
| 3- | कुल | 100 | 100% |

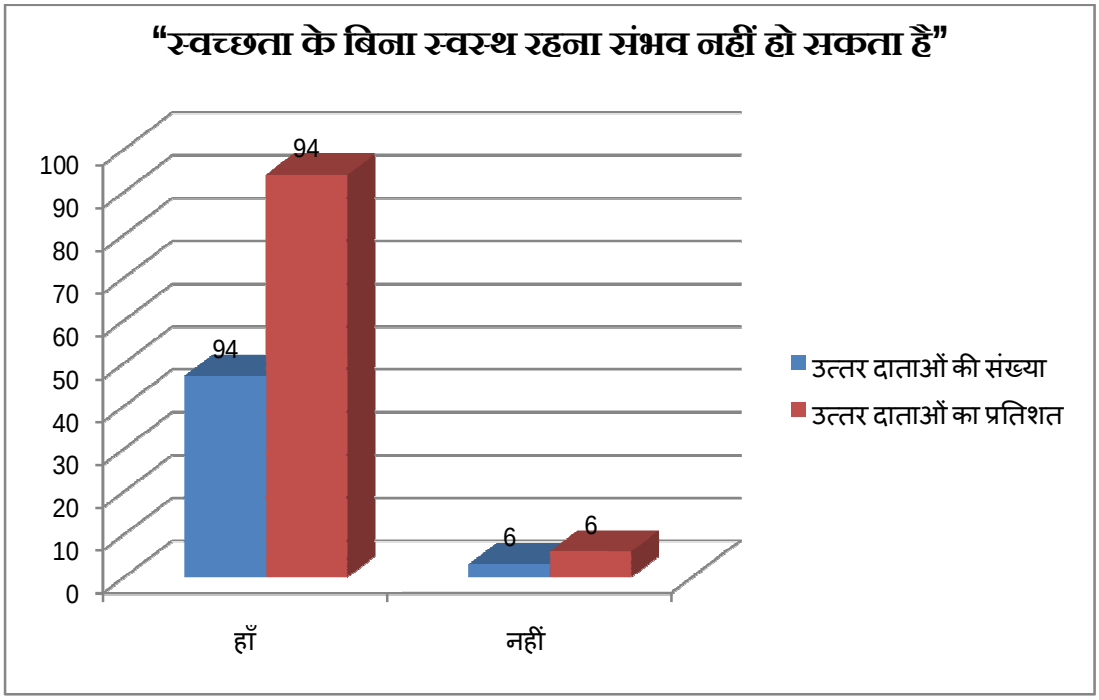


आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है की आज लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आवश्य आयी है परंतु फिर भी वे इसको और ज्यादा बेहतर बनाने का प्रयास नहीं कर रहें हैं। आज 94% लोग स्वच्छता के महत्व को समझते हैं और आज लोगों को ऐसा लगता है की स्वच्छता से ही अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है परंतु वे स्वच्छता केवल अपने तक ही सीमित रखना चाहते हैं। आज मात्र 6% लोगों का कहना है कि इससे मुझको ज्यादा पता नहीं है।

प्रश्न संख्या 7 - आपके द्वारा एकत्रित किए गए कूड़े को कितने दिनों में उठाया जाता है ?

| क्रम सं | दिनों की संख्या | उत्तरदाताओं की संख्या | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | प्रतिदिन | 7 | 14% |
| 2- | तीन - सात दिन | 12 | 24% |
| 3- | सात - पंद्रह दिन | 22 | 44% |
| 4- | निश्चित नहीं | 9 | 18% |
| 5- | कुल | 50 | 100% |

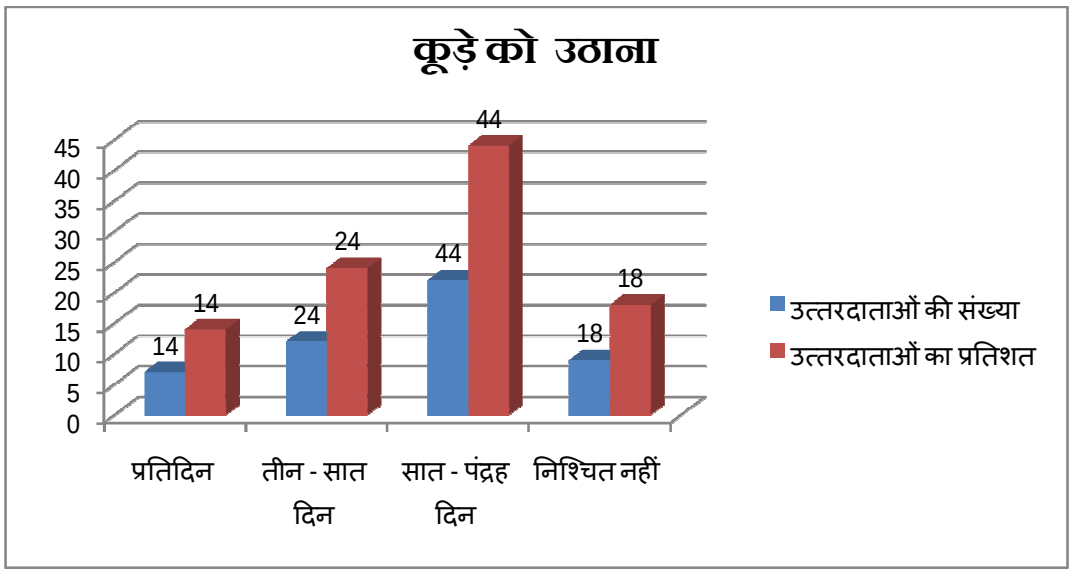


आज भी नगर परिषद् अपने काम के प्रति बहुत ज्यादा सुस्तसी हैं। आज मात्र 14% लोग कहते हैं कि नगर परिषद् प्रतिदिन, 24% तीन से सात दिन, 44% सात से पंद्रह दिन और मात्र 18% निश्चित नहीं है। अभी भी बहुत सी ऐसी जगह हैं जहाँ पर कूड़े को ले जाने का कोई समय ही नहीं हैं। आज भी सप्ताह-सप्ताह भर कूड़ा यही पड़ा रहता हैं और जब मन में आता है ले जाते हैं वरना ऐसे ही कहीं भी पड़ा रहता हैं।

प्रश्न संख्या 8 - बचे हुए भोज्य पदार्थों का आप क्या करते हैं ?

| क्रम संख्या | भोज्य पदार्थ | उत्तरदाताओं की संख्या | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | जानवरों को देते है | 84 | 84% |
| 2 | कूड़े में डालते हैं | 10 | 10% |
| 3 | यूँ ही फेंक देते हैं | 6 | 6% |
| 4 | कुल | 100 | 100% |

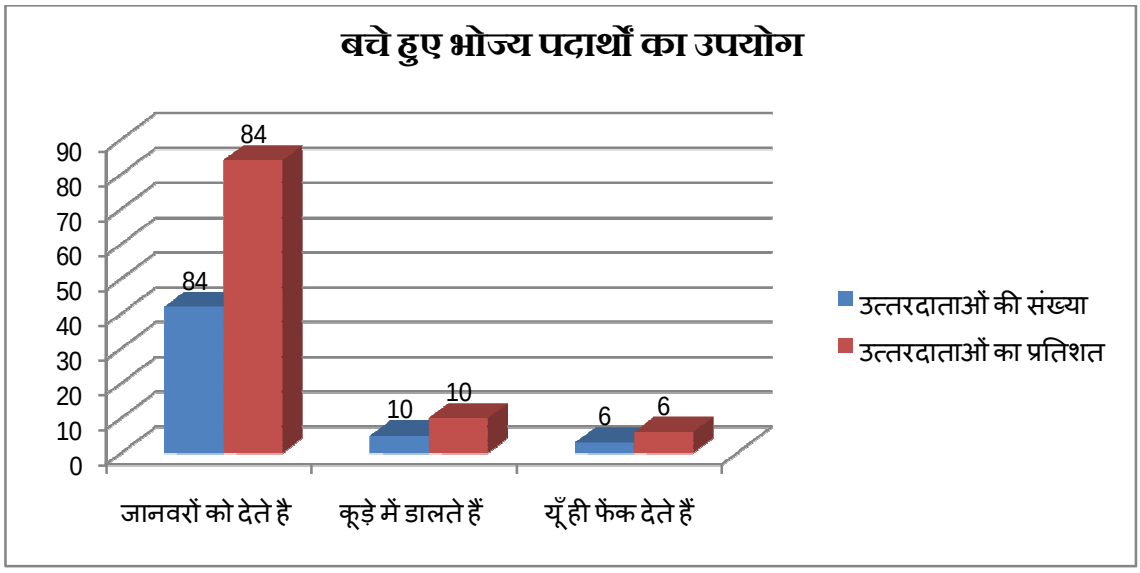


इस प्रश्न का उत्तर विश्लेषण के पश्चात पता चला की 84% लोग घर में बचे हुए भोज्य पदार्थों को जानवरों को ड़ाल देते हैं यह काफी हद तक संतोषजनक हैं। किन्तु 10% लोग ऐसे भी है जो

खाने को कूड़े या खाली स्थान में यूँ ही दाल देते हैं यह बिल्कुल गलत है । इस तरह कहीं भी ड़ाल देने से हमारा ही नुकसान होता हैं। 6% लोग तो ऐसे भी है जो बचे हुए भोज्य पदार्थों को यूँ ही कहीं भी फेंक देते हैं।

प्रश्न संख्या 9 - क्या आपके घर के आस-पास नलियाँ हैं ?

| क्रम संख्या | नालियों की उपलबद्धता | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 78 | 78% |
| 2 | नहीं | 22 | 22% |
| 3 | कुल | 100 | 100% |

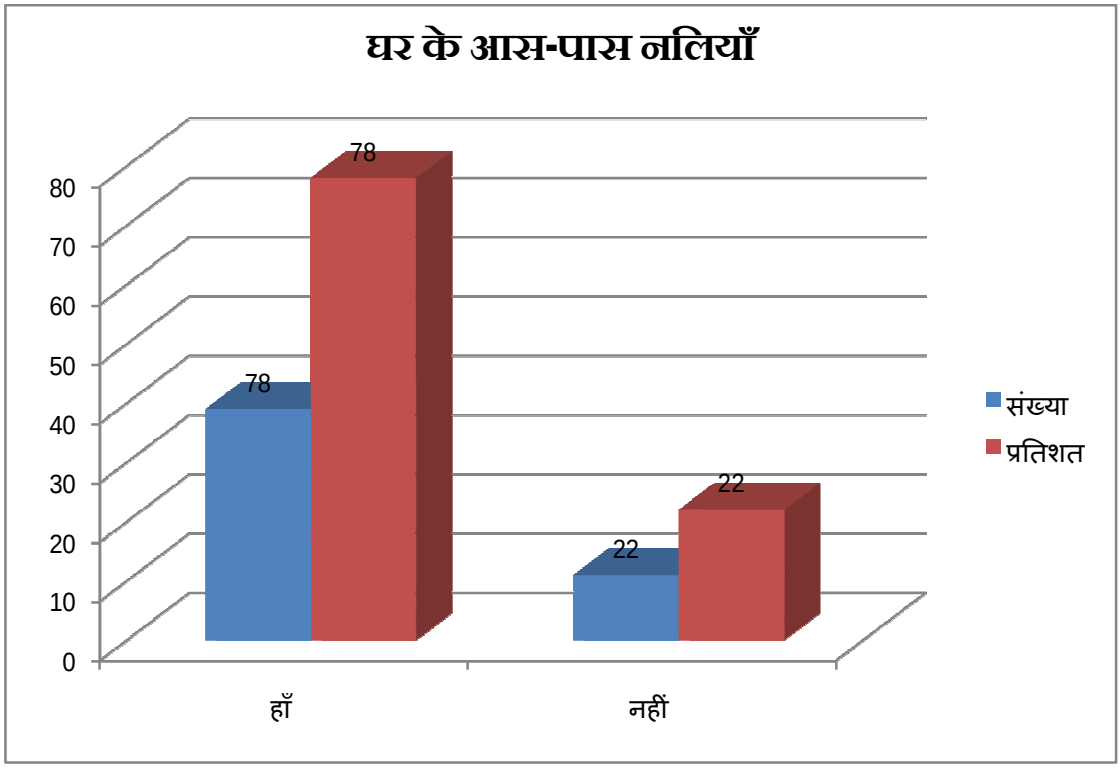


आंकड़ों का विश्लेषण से पता चला की यहाँ पर 78% व्यक्तियों के घर के आस-पास नलियों की व्यवस्था की गयी हैं। परंतु 22% लोगों के घर के आस-पास अभी तक जल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं है। यह हमारी नगर परिषद् की कामचोरी और उसे द्वारा बरती जा रही अनियमित्ता को ही प्रदर्शित करता है। आज वर्धा में नलियों की अवस्था अपने चरमोत्कर्ष पर है। हर जगह नालियों की संरचना और उनके स्वरूप पर प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है।

प्रश्न संख्या 10 - क्या नालियों की सफाई नियमित होती है ?

| क्रम संख्या | नालियों की सफाई | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 58 | 58% |
| 2 | नहीं | 42 | 42% |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3 | कुल | 100 | 100% |

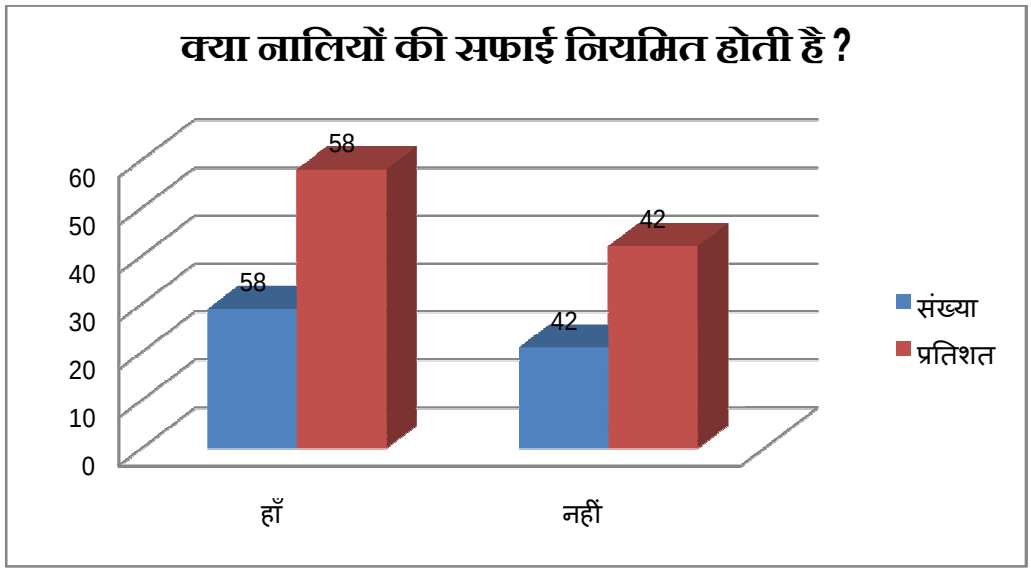


यहाँ पर आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात पता चला की आज भी यहाँ पर नालियों की सफाई को लेकर मात्र 58% लोगों ने ही कहा कि हाँ नियमित रूप से नालियों की सफाई कि जाती है पर 42% लोगों ने बताया है कि नहीं यहाँ पर सफाई नहीं होती है। प्रशासन स्तर पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता हैं। आज भी यहाँ की बहुत सी नालियाँ ऐसी ही हैं जिनकी सफाई आज तक नहीं हुई है। आज वर्धा में नगर परिषद् के काम पर हर जगह प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है। आखिर न तो प्रशासन स्टार पर कोई ठोस कदम उठाए जा रहे हैं और न ही जनता के स्तर पर कोई चेतना जागृत होती दिखाई दे रही है।

प्रश्न संख्या 11 - क्या नालियों को ऊपर से ढ़का जाता है ?

| क्रम संख्या | नलियों को ढकना | उत्तरदाताओं की संख्या | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 22 | 22% |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 2 | नहीं | 78 | 78% |
| 3 | कुल | 100 | 100% |

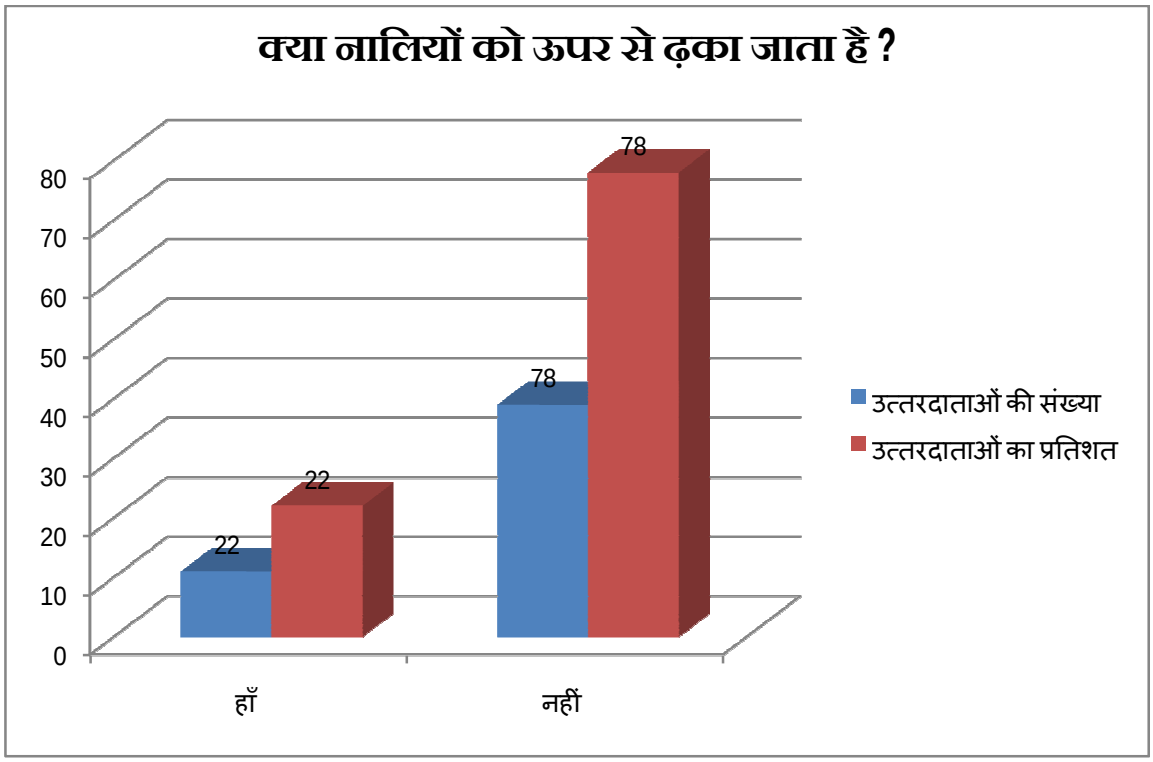


आँकड़ों के विश्लेषण से पता चला की यहाँ की अधिकांश नालियाँ ऊपर से खुली हुई है और इन पर न तो जाल और न ही किसी तरह की कोई चादर तक नहीं डाली गयी है। मात्र 22% लोगों का ही कहना है कि हाँ नलियाँ ऊपर से ढ़की हुई है और सर्वाधिक प्रतिशत 78% लोगों का कहना है की नहीं नलियों को ऊपर से नहीं ढका गया है। अतः यह पूर्णतः नगर परिषद् की लापरवाही का ही नतीजा है जो आज तक नालियों को ऊपर से नहीं ढका है। यहाँ वर्धा नगर परिषद् के संदर्भ में लोगों का कहना है कि यहाँ के अधिकार अपने मन के अनुसार काम करते हैं।

प्रश्न संख्या 12 - नलियों की सफाई व्यवस्था का प्रबंध कौन करता है ?

| क्रम संख्या | नालियों की सफाई व्यवस्था | उत्तरदाताओं की संख्य | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | स्वयं | 18 | 18% |
| 2- | नगर-परिषद् | 54 | 54% |
| 3- | सामूहिक चंदे से | 28 | 28% |
| 4- | कुल | 100 | 100% |

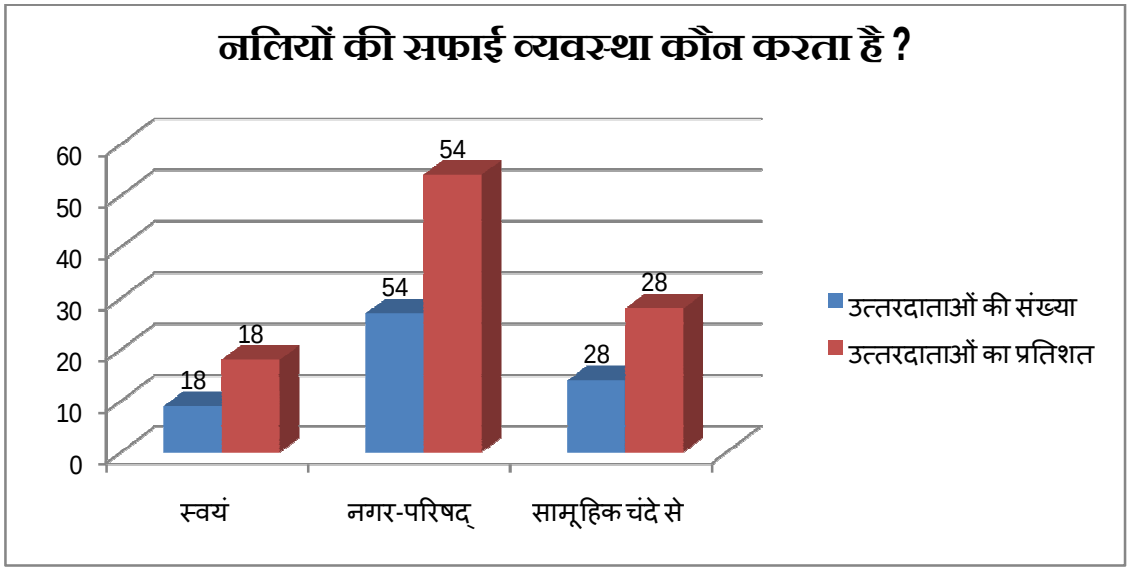


आँकड़ों के विश्लेषण से पता चला की नगर परिषद् अपने कार्य के प्रति बिल्कुल भी सक्रिय नहीं है। यहाँ पर नगर परिषद् के द्वारा कराए जाने वाले काम को मात्र 54% लोगों ने कहा, 18% स्वयं तथा 28% सामूहिक चंदे सफाई का कार्य करते हैं। आज शहर में नालियों की सफाई व्यवस्था का काम नगर परिषद् के जिम्मे आता है पर आज हमारी नगर परिषद् इसके प्रति बिल्कुल भी संवेदनशील नहीं है। आज गंदगी के चलते लोग सामूहिक स्तर पर और कुछ लोग वैयक्तिक स्तर पर भी प्रयास कर रहे हैं।

यह लोगों के मन में एक तरह का अच्छा भाव ही है की वे अपने आस-पास के प्रति स्वच्छता को लेकर सचेत हो रहे हैं।

प्रश्न संख्या 13 - आपके वार्ड में बारिश के पानी के निकालने की क्या व्यवस्था है ?

| क्रम संख्या | बारिश के पानी की व्यवस्था | उत्तरदाताओं की संख्या | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | नालियों के द्वारा | 62 | 62% |
| 2- | नगर परिषद् द्वारा प्रबंध | 6 | 6% |
| 3- | व्यर्थ हो जाता है | 32 | 32% |
| 4- | कुल | 100 | 100% |

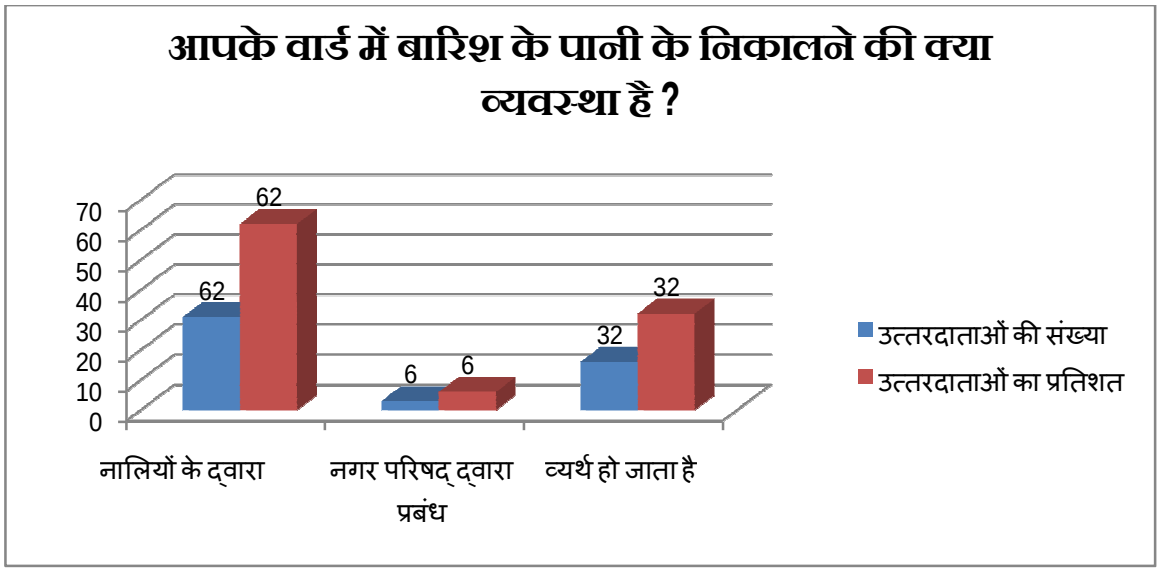


आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है की आज बारिश के समय में यहाँ पर 62% लोगों ने कहा की बारिश का जल नालियों द्वारा व्यर्थ हो जाता है जिससे बहुत ज्यादा समस्या का सामना करना पड़ता है। बारिश के समय में ज्यादा से ज्यादा जल नालियों के सहारे बह जाता है या कहीं पर भी गढ़ढ़े आदि में एकत्र हो जाता है और बीमारी का कारण भी बन जाता है। आज 6% लोगों ने कहा की नगर परिषद् प्रबंध करती हैपर 32% लोगों ने बता या की बारिश का जल ऐसे ही कहीं भी पड़ा रहता है और व्यर्थ हो जाता है।

प्रश्न संख्या 14 - आपके वार्ड में नालियों का क्या स्वरूप है ?

| क्रम संख्या | नालियों का स्वरूप | उत्तरदाताओं की संख्या | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | व्यवस्थित | 38 | 38% |
| 2 | अव्यवस्थित | 62 | 62% |
| 3 | कुल | 100 | 100% |

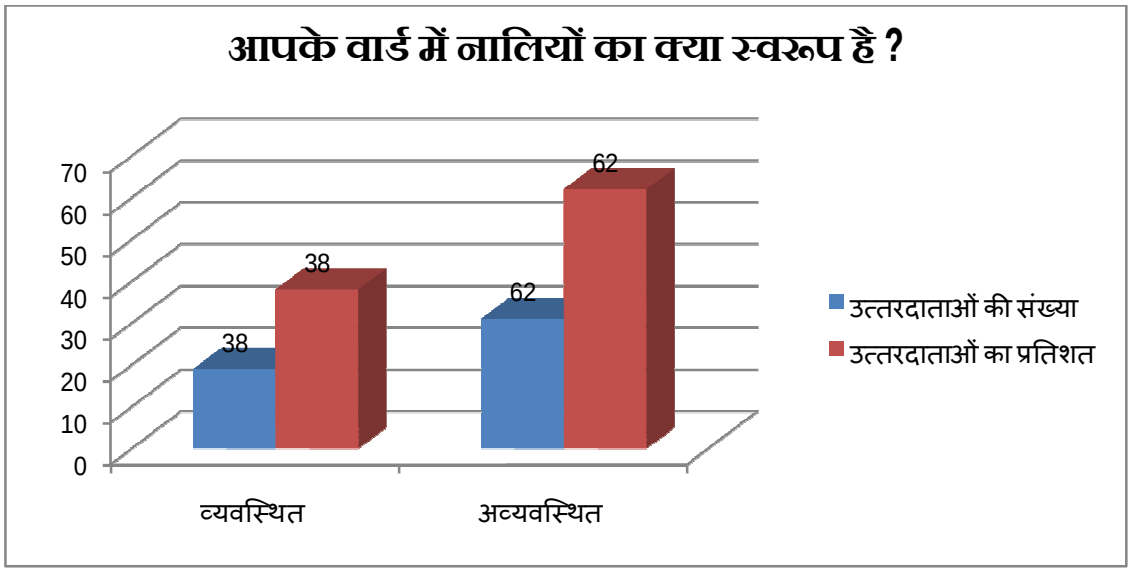


आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है की आज यहाँ पर नालियाँ का स्वरूप बहुतायत में अव्यवस्थित है। नालियाँ, नगर परिषद् ने बनवाई तो थी परंतु उनका स्वरूप कोई निश्चित नहीं किया। आज यहाँ पर 62% लोगों ने बताया है की नालियों का स्वरूप अव्यवस्थित है तथा मात्र 38% लोगों ने बताया है की यहाँ

नालियों का स्वरूप व्यवस्थित है। आज यहाँ पर काम का कोई स्वरूप या संरचना पूर्वनिर्धारित नहीं किया जाता है। वर्धा में नगर परिषद् की उदासीनता उयाके काम से साफ-साफ प्रदर्शित होती है।

प्रश्न संख्या 15 - पीने के पानी हेतु आप क्या उपयोग में लाते हैं?

| क्रम संख्या | पानी का श्रोत | उत्तरदाताओं की | उत्तरदाताओं का प्र |
|---|---|---|---|
| 1 | सरकारी जल | | |
| 2 | कुँआ | | |
| 3 | हैंड पम्प | | |
| 4 | अन्य | | |
| 5 | कुल | | 1 |

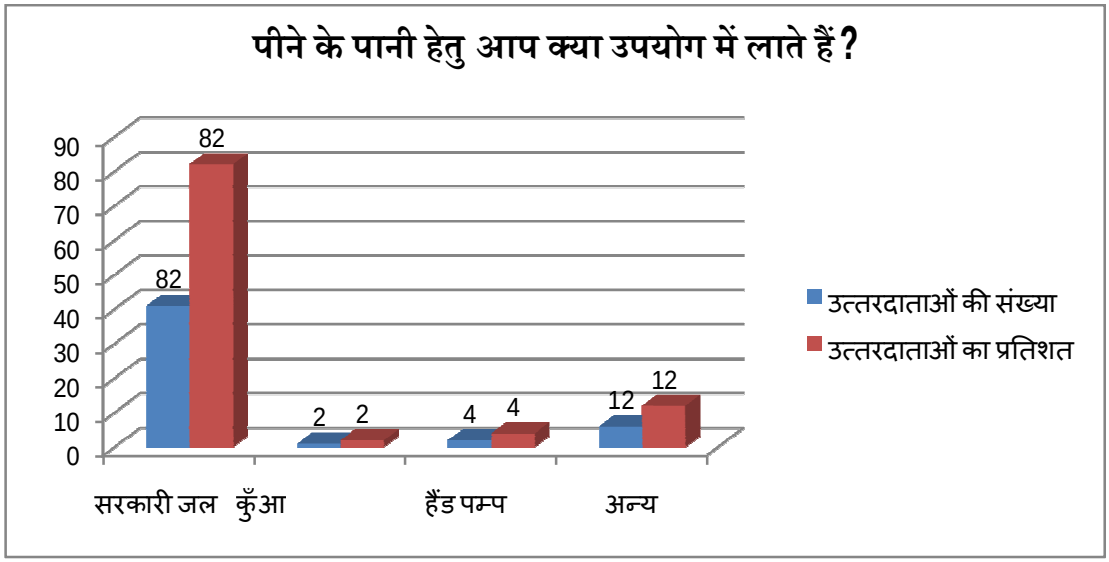


आज अगर वास्तविकता को देखें तो आपको आँकड़ों को देखकर स्वयं पता चल रहा है की आज सबसे ज्यादा 82% लोग सरकारी जल पर निर्भर है। यहाँ पर 2% लोग कुआँ का जल, 4% चापाकल और 12 अन्य साधनों पर निर्भर करते हैं। अभी हमारी नगर परिषद् से एक दिन के अंतराल के बाद ही लोगों को पानी मिल रहा है। अतः यहाँ के स्थानीय प्रशासन से लगाकर नगर परिषद् को भी इस बात की कोई फ़िक्र नहीं है। इसीलिए सम्पन्न व्यक्ति अन्य जैसे की जेट पम्प, समरसेबुल पम्प आदि का उपयोग कर रहे हैं।

प्रश्न संख्या 16 - क्या आपको लगता है कि स्थानीय प्रशासन शहर में स्वच्छता को लेकर जागरूक हैं?

| क्रम संख्य | स्थानीय प्रशासन की जागरूक | उत्तरदाताओं की संख्या | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | हाँ | 38 | 38% |
| 2- | नहीं | 62 | 62% |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3- | कुल | 100 | 100% |

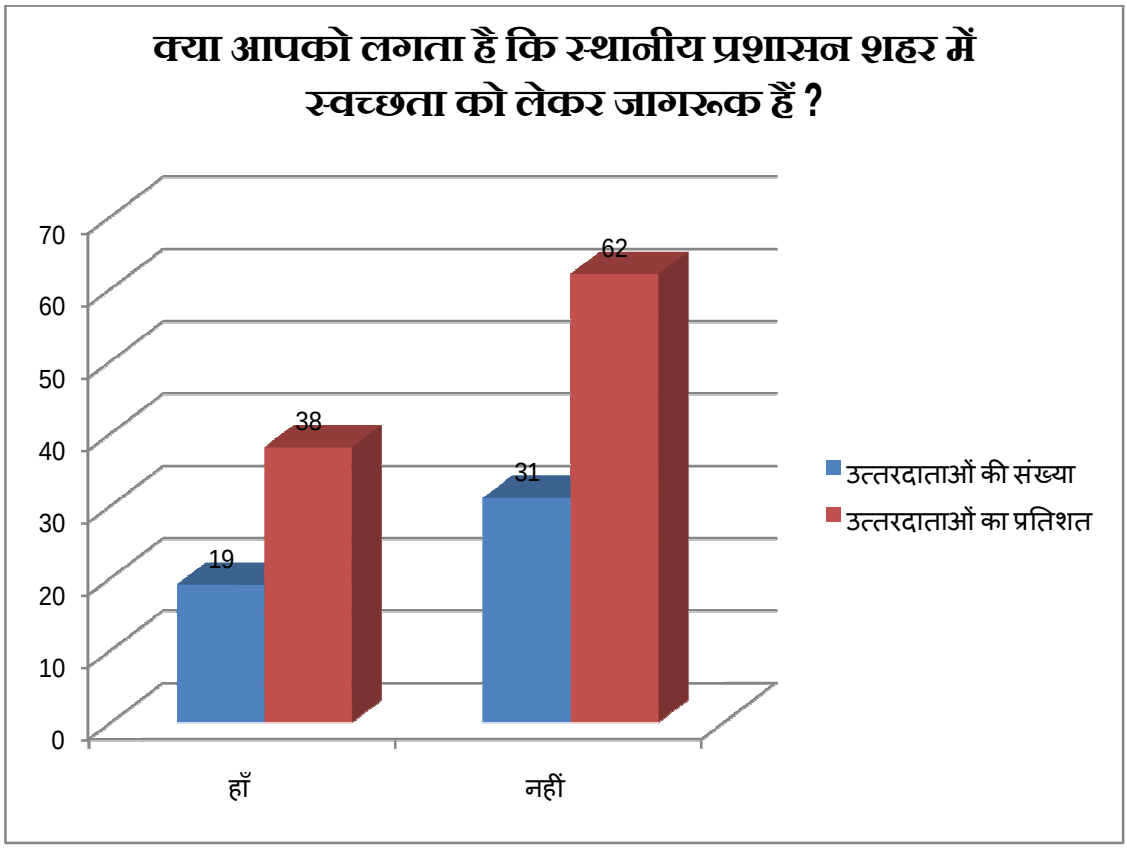


आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है की आज स्थानीय प्रशासन को लेकर यहाँ की जनता में बहुत ज्यादा असंतोष की स्थिति बनी हुई है। यहाँ पर मात्र 38% लोगों का जवाब हाँ और 62 लोगों का जवाब न ही था।

प्रश्न संख्या 17 - क्या आपको लागत है कि नगर परिषद् के द्वारा नियुक्त सफाई कर्मचारी अपना काम सही से कर रहें है ?

| क्रम संर | नगर परिषद् के कर्मचारियों का | उत्तरदाताओं की | उत्तरदाताओं का प्र |
|---|---|---|---|
| 1- | हाँ | | |

2- नहीं

3- पता नहीं

4- कुल

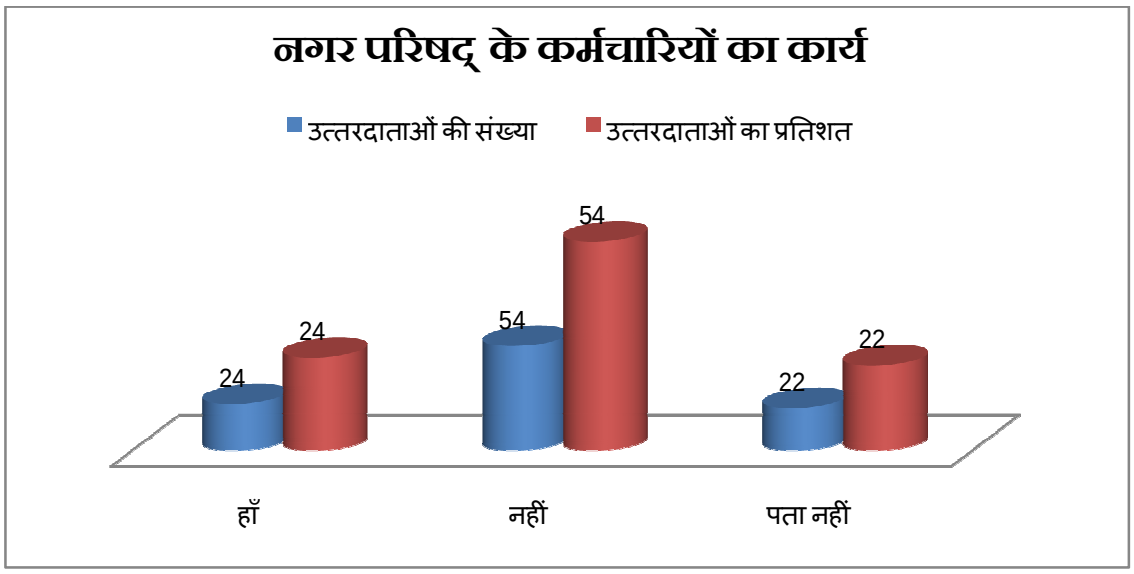


आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है की यहाँ के सफाई कर्मी भी अपने काम के प्रति ज्यादा संवेदनशील नहीं है। आज मात्र 24% उत्तरदाताओं ने कहा हाँ, 54% उत्तरदाताओं ने नहीं और 22% उत्तरदाताओं ने जवाब पता नहीं कहा। यह बार साफ-साफ परदर्शित करती है कि यहाँ के प्रशासन के साथ-साथ सफाई कर्मियों में भी अपने काम के प्रति कोई ईमानदारी और निष्ठाभाव नहीं है। इसका एक मुख्य कारण यहाँ के स्थानीय प्रशासन के द्वारा बरती जाने वाली ढील और स्वयं में न मिल बाँट कर खाने की प्रवृत्ति ज़ोरों पर है।

प्रश्न संख्या 18 - क्या आपके वार्ड अध्यक्ष आपके वार्ड में नियमित रूप से बैठक करते हैं ?

| क्रम संख्या | बैठक | उत्तरदाताओं की संख्या | उत्तरदाताओं का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1- | हाँ | 02 | 02% |
| 2- | नहीं | 72 | 72% |
| 3- | कोई निश्चित नहीं | 26 | 26% |
| 4- | कुल | 100 | 100% |

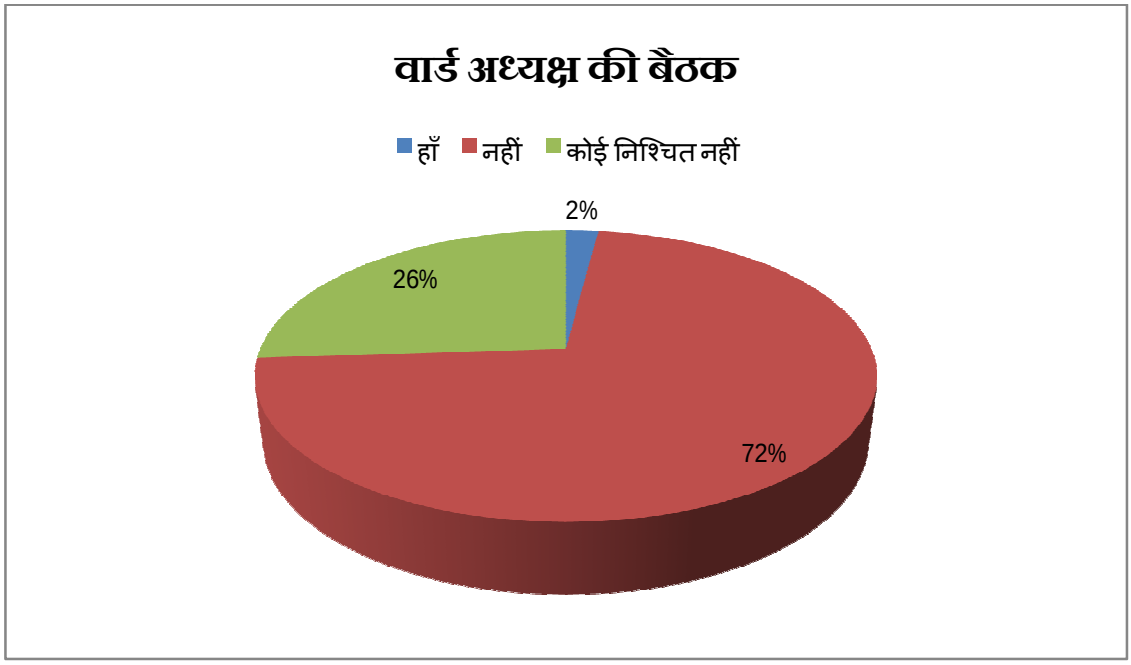


यहाँ पर वार्ड अध्यक्षों के कामों में भी बहुत ज्यादा सुस्ती नज़र आई है। आँकड़ों के विश्लेषण से साफ पता चलता है मात्र 2% लोगों का कहना है की हाँ यान बैठक होती है, 72% लोगों का खना है की नहीं और ऐसे भी है 26% लोग हैं जिनको यह पता भी नहीं है की यहाँ पर बैठक होतो है भी या नहीं। इसमें लोगों का नहाईं अपितु वार्ड अध्यक्ष ही केवल मतदान के समय नज़र आते हैं इसके बाद उनका पता भी नहीं चलता है।

प्रश्न संख्या - क्या आप गांधी जी के द्वारा बताए गए रचनात्मक कार्यक्रम के बारे में जानते हैं?

| क्रम संख्या | रचनात्मक कार्य | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 24 | 24 |
| 2 | नहीं | 76 | 76 |
| 3 | कुल | 100 | 100 |

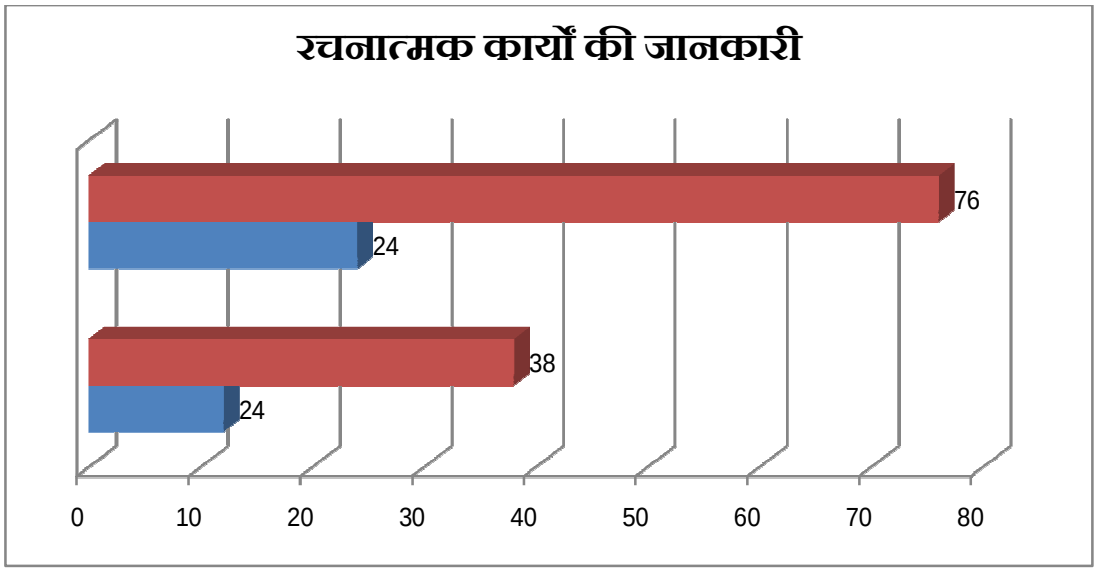


आँ

कड़ों में साफ-साफ परदर्शित हो रहा है की आज वर्धा में मात्र 24 लोग ही गांधी जी द्वारा बताए गए रचनात्मक क्रयों को जनता है जबकि 76% लोगों को गांधी जी के रचनात्मक क्रयों के प्रति कोई भी जानकारी नहीं है। यहाँ के नागरिकों को आज वर्तमान समय में आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण का पर्दा पद जाने के कारण इन लोगों को तो वर्धा शहर के भी बारे में सही जानकारी नहीं है। अतः आँकड़ों के

विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है आज न केवल शासन के स्तर पर अपितु जनता अपने स्तर पर गांधी जी को भूल सी गयी है। अतः यहाँ पर एक तरह से नयी जान डालने के लिए लोगों को पुनः जमीनी स्तर से जगाने की जरूरत आन पड़ी है।

प्रश्न संख्या 20 - क्या आपको पता है कि गंदे पानी/कूड़ा-कचड़े के उपचार पश्चात पुनः प्रयोग में लाया जा सकता है ?

| क्रम संख्या | गंदे पानी का उपयोग | उत्तरदाताओं की | उत्तरदाताओं का प्र |
|---|---|---|---|
| 1- | हाँ | | |
| 2- | नहीं | | |
| 3- | कुल | | |

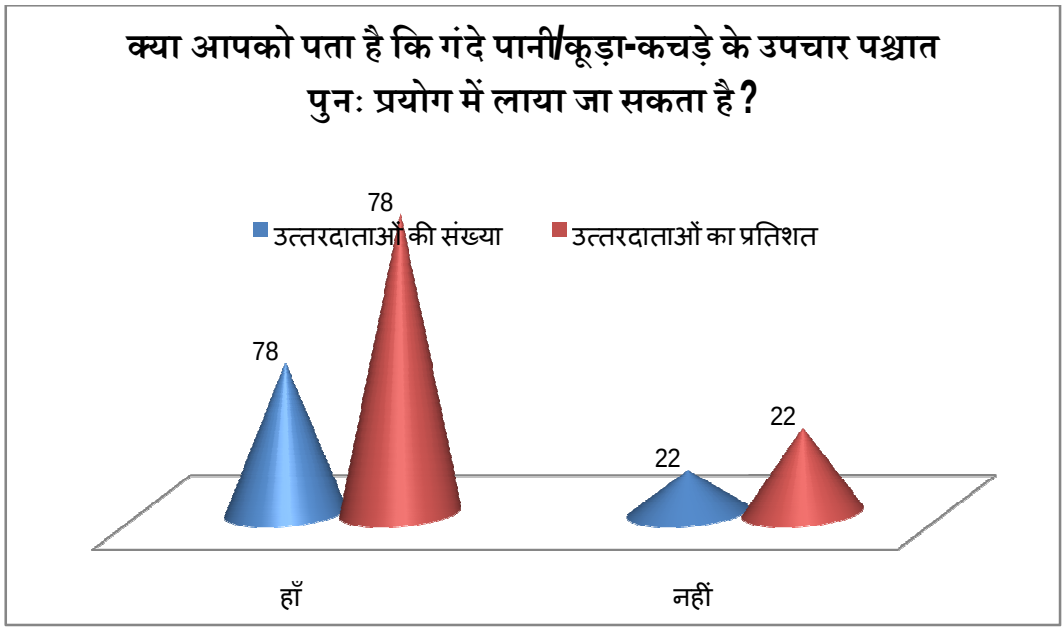


आँकड़ों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं की यहाँ के 78% लोगों को शुद्धिकरण की प्रक्रिया के बारे में पता है, किन्तु हमारे प्रशासन और नगर परिषद् में इसके प्रति किसी भी तरह की जागरूकता का आभाव है। आँकड़ों में मात्र 22% लोगों ने बताया की उनको इस तरह की कोई भी प्रविधि

के बारे में नहीं पता है। एक बात और थी इन लोगों ने बताया कि अगर ऐसा कोई कार्यक्रम है तो प्रशासन को इसके बारे में बताया जाना चाहिए, ताकि आने वाले संकट से बचा जा सके।

**नगर परिषद् की कार्याविधि -** यदि देखें तो शहर में सुविधाओं का प्रबंध करने की जिम्मेदारी नगर परिषद् की होती है जो हमारे वर्धा की नगर परिषद् पूरी ईमानदारी के साथ निभा रही पर केवल फर्ज अदाएगी के लिए। अब मै आप सभी लोगों को नगर परिषद् के द्वारा की गई लापरवाही से लोगों का क्या हाल है आइये इस चित्रा में देखें।

चित्र संख्या - 1

चित्र संख्या - 2

यह दोनों ही चित्र हमारे वर्धा में आर्वी नाका के समीप स्थित आर्वी जाने के लिए बनाए गए यात्री प्रतीक्षालय और बस के ठहरने के लिए नियत स्थान का दृश्य है। वर्धा जहाँ का तापमान हमेशा सर चढ़कर रहता है और ऐसे में यूँ ही कहीं भी बिना किसी भी व्यवस्था के बनाए गए यात्री प्रतीक्षालय में महिलाएँ और छोटे बच्चे हाल बेहाल हो जाते हैं। आखिर क्या है नगर परिषद् की जिम्मेदारी? क्या इसी प्रबंध के लिए जनता आपको मनोनीत और सरकार आपको वेतन इत्यादि सुविधाएँ प्रदान करती है।

यदि देखा जाए तो आज वर्धा में शासन से लगाकर जनप्रतिनिधियों तक अब सभी अपनी-अपनी जेबें गरम करने में व्यस्त हैं। आज लगातार अव्यवस्थाओं के बाद भी हमारे नगर परिषद् के कर्मचारियों के काम में जूँ तक नहीं रेंगती है।

# निष्कर्ष

**नगर परिषद् की वास्तविकता**

"हैमलेट में शेक्सपीयर ने कहा था कि 'डेनमार्क में कुछ तो सड़ गया है', यही बात आज वर्धा नगर परिषद् पर भी लागू होती है।"[1] आज लगातार नगर परिषद् के क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था को लेकर लोगों में बहुत ज्यादा असंतोष व्याप्त है। आज वर्धा में शायद ही कोई ऐसी जगह हो जिसको हम पूर्णतः स्वच्छ मान सकें।

ठोस कचरे से अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ जन्म लेती हैं। कूड़ा रोगवाहक कीटाणुओं का घर बन जाता है और अनेक रोगों को आमंत्रण देता है। अवशिष्ट पदार्थ पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रदूषित करते हैं। आज रासायन मिश्रित जल रिसाव द्वारा भूमिगत जल तक पहुँचकर आज उसको भी प्रदूषित कर रहा है। कूड़ाकरकट सड़ने से अनेक विषैली गैसें उत्पन्न होती हैं। मल जल द्वारा सिंचाई करने से मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीव मारे जाते हैं जो भूमि के लिए आवश्यक हैं। अवशिष्ट पदार्थोंको यदि समुद्र में डाला जाए तो सामुद्रिक पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाएगा। आज पालिथीन पशुओं की आंत में फसकर उनकी मृत्यु तक का कारण भी बन जाती हैं। आज खाने की

वस्तुएं भी पालिथीन में आ रही है जो शरीर के लिए बहुत ज्यादा घातक है। आज हम कूड़े को कहीं भी दूर ले जाकर जला देते हैं या फिर हम उसकी कंपोस्ट खाद बनाई जाती हैं पर बेहतर यही होगा अगर हम इसके पुनः उपयोग का तरीका खोजा जाए।

वर्धा शहर में मेडिकल कचरे का प्रबंधन सुव्यवस्थित तरीके से है। इसमे सबसे अहम भूमिका सरकार की है, जिसने ऐसा तंत्र विकसित किया है कि हर जगह का कचरा इक्कठा करके उसे डिस्पोज़ किया जाता है । इसका ठेका सरकार द्वारा नागपुर स्थित सुपर हाइजीन कंपनी को दिया गया है, जो नर्सिंग होम एवं अस्पताल से निकलने वाले कचरे को खुद आ कर ले जाती है तथा उसे डिस्पोज़ करती है । इसके लिए किसी नर्सिंग होम को पैसा नहीं देना पड़ता है । सरकार द्वारा यह व्यवस्था मुफ्त में उपलब्ध करायी जाती है।

इस बात से साफ-साफ पता चलता है की ऐसा नहीं है की यहाँ के लोगों को या स्थानीय प्रशासन को कचरे को पुनः उपयोग में लाने के बारे में नहीं पता होगा किन्तु वे इस तरह का कोई योजना न लाये हैं और न ही लाना चाहते हैं।

आँकड़ों ने साफ-साफ यहाँ की स्थिति स्पष्ट कर दी है। अतः इस प्रकार से वर्धा में गंदगी अपने चरम पर आ रही और अगर जल्दी ही इसको कोई उपचार नहीं किया जाएगा तो निश्चय ही वर्धा का नाम किसी और नाम से पहचाना जाने लगेगा।

क्या करें, क्या न करें !

सबसे पहले इस विषय में व्यक्तिगत सोंच को जागृत करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति यह न सोचे की ज़रा से कूड़े से क्या होता है। यदि हर कोई ऐसा सोचेगा तो इस धरती पर से हमारा अस्तित्व समाप्त होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। यह पृथ्वी हमारा घर है और अगर अपने ही घर में गंदगी फैलते रहे हम तो एक दिन कहाँ जाएँगे ? समय रहते ही अगर अपनी भूल को पहचान लें तो यह एक सार्थक प्रायस होगा।

1- प्लास्टिक की पन्नियों का इस्तेमाल तुरंत बंद कीजिये क्योकि यह नष्ट नहीं होती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि एक प्लास्टिक दस लाख साल तक नष्ट नहीं होती है और यह हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ही खतरनाक होती है। इसकी जगह पर हमें कपड़ों के थैलों का प्रयोग करना चाहिए।

2 - जिन पदार्थों को रिसाइकलिंग किया जा सके उन्हें आम कूड़े से अलग रखा जाना चाहिए। कूड़े को बायोडीग्रेडेबल व नॉन बायोडीग्रेडेबल भागों में बांटा जा सकता है। अर्थात ऐसा कचरा जो मिट्टी में सड़-गल सकता है और ऐसा कचरा जो मिट्टी में सड़-गल नहीं सकता है। सरकार भी इस विषय में काफी जागरूक हो उठी है। दिल्ली महानगर में इन दो प्रकार के कूड़ों को फेंकने के लिए अलग-अलग हरे व

नीले रंग के डिब्बे लगाए गए हैं। अब हम पर निर्भर करता है कि हम इसका सही उपयोग कर पातें हैं या नहीं।

3 - घर के अपशिष्ट और कचरे को केवल कचरा पेटी में ही डालें, ऐसे ही सड़कों, नालियों या किसी भी मैदान में नहीं फ़ैकना चाहिए।

4 - बच्चों को हमेशा ही संडास(Latrine) में जाने कि शिक्षा दें और बाहर मत जानें दे।

5 - कहीं भी खड़े होकर पेशाब न करें इसके लिए किसी एकांत में अथवा मूत्र घर का प्रयोग करें। अब तो लगभग सभी जगाओन में सुलभ कि व्यवस्था की जा रही है।

6 - सबसे ज्यादा नुकसान दायक पदार्थ जो आज तो एक फैशन में आ गया है जिसके लिए अभी हाल ही में महाराष्ट्र शासन ने प्रतिबंध लगाया है गुटखा कृपया कोशिश करें की इसका प्रयोग बंद कर दे और यदि ऐसा कर पाने में असमर्थ हैं तो इधर-उधर कहीं भी थूंक देने की आदत में सुधार लाएँ।

7 - जलती हुई सिगरेट को यूँ ही सड़क पर कहीं भी मत फेंकें, इसको बुझाकर कचरे कि जगह में ही डाले। ध्यान दीजिये कि गरीब लोग नंगे पैर ही चलते हैं।

8 - नगर परिषद् द्वारा हाईकोर्ट के निर्देश पर बनाए जाने वाले मूत्र घरों में स्वच्छता बनाए रखना आपकी भी जिम्मेदारी है। नगर परिषद के कर्मचारी रोजाना सफाई कर रहें है इस पर भी निगरानी रखना आपका ही दायित्व बनता है।

9 - सप्ताह में एक बार यदि संभव हो सके तो रविवार को घर के सामने की सड़क स्वयं साफ करें या सफाई करवाएँ। नालियों और संडास की सफाई यदि संभव हो सके तो यह भी स्वयं करें या फिर किसी अन्य से जरूर साफ करवाएँ। यदि आपको इसमें किसी भी तरह हीन भावना महसूस होती है तो ध्यान रखिए की आज जिनको हम राष्ट्रपिता कहकर संबोधित करते हैं वह भी अपने घर का संडास स्वयं साफ करते थे। कहा जाता है कि अपने काम में किसी भी तरह की कोई शर्म नहीं होती हैं। आज एन.एस.एस. और सोशल वर्क के कॉलेज में छात्रों को यही शिक्षा दी जाती है।

10 - गणपति और नव दुर्गा उत्सव के दौरान मूर्तियों पर चढ़ाए गए फूल, बेल पत्र, पूजा सामग्री नगर परिषद द्वारा तैयार किए गए निर्माल्य कलशों में डाले। उत्सव के अंतिम दिन राष्ट्रीय युवा संगठन के राजकला चौक स्थित कार्यालय में अंधश्रद्धा नि. समिती व 'होप' संस्था द्वारा मूर्तियाँ व पूजा सामग्री एकत्र की जाती हैं। प्रदूषण से बचने के लिए मूर्तियाँ व सामग्री को इन स्थानों पर ही दें।

# संदर्भ ग्रंथ सूची


**1- सुलभ इंडिया, वर्ष : 27, अंक : 11 नवम्बर 2012 , प्रधान संपादक - पाठक, डॉ॰ विंदेश्वर, नई दिल्ली - 110045, पृष्ठ संख्या - 2**

**2- नगरीय समाजशास्त्र, सिंह, प्रो. आनंद प्रकाश सिंह, संस्करण 2007, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 231**

**3- शर्मा, वीरेंद्र प्रकाश, भारतीय समाज मुद्दे और समस्याएँ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृष्ठसंख्या - 181-195**

**4- भारत में लोकतंत्र, खान, रशीद्उद्दीन, अनुवादक - प्रेम शंकर खरे, प्रकाशन- राष्ट्रीय शैक्षिणिक अनुसंधान और परिषद प्रथम संस्करण- 131 पृष्ठ**

**5- हमारा संविधान : भारत का संविधान और संवैधानिक विधि, सुभाष,कश्यप, 1995 , नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या -294-95**

**6- भारत का संविधान, इलाहाबाद लॉ एजेंसी पब्लिकेशन्स,1995 का भाग एक अनुच्छेद 243 थ (1)**

7- भारत में स्थानीय प्रशासन, डॉ. आर.पी.जोशी और डॉ.अरुणा भारद्वाज, प्रथम संस्करण 2000, शील संस प्रकाशक, जयपुर

8- महात्मा गांधी, रचनात्मक कार्यक्रम, नवजीवन प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 9 - 55

10- भट्ट, महेंद्र, ग्राम स्वराज्य के नए अंकुर, सर्व सेवा संघ प्रकशन, प्रथम संस्करण

11- महात्मा गांधी, मेरे सपनों का भारत, नवजीवन प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 34 - 39

12- मेरा शोध प्रबंध पूर्णतः प्राथमिक तथ्योंपर आधारित था। वर्धा नगर परिषद् के संदर्भ मैंने सूचनाओं का एकत्रण ज्यादातर लोगों के द्वारा सामूहिक परिचर्चा के द्वारा एकत्र किया।

13- स्थानीय कार्यकर्ताओं के साक्षात्कार से लिया गया।

14- नगर परिषद् के द्वारा प्राप्त सूचनायें।

**परिशिष्ट**

**नाम -** सतीश मधुकर राव वैद्य ( बंटी )

**पद -** वार्ड अध्यक्ष

**आयु -** 34 वर्ष

**शिक्षा -** स्नातक उत्तीर्ण और अध्ययनरत।

**पदावधि -** लगातार दूसरी बार चयनित। कुल 8 वर्षों से सतत कार्यरत।

**वार्ड संख्या -** 07

**प्रभाग संख्या -** 01

**चुनावी पार्टी का नाम -** कांग्रेस

**कार्यभार -** सारा काम मै स्वयं ही देखता हिन और मै शासन के स्तर तथा आवश्यकता पड़ने पर व्यक्तिगत स्तर पर भी काम करवाता और करता हूँ।

**नाम -** शालिनी अरविंद कोपरे

**पद -** वार्ड अध्यक्ष

**आयु -** 36 वर्ष

**पदावधि -** महिला आरक्षित होने के कारण पहली बार इसके दो पंचवर्षीय पहले तक आपके पति अरविंद शाम राव कोपरे ही यहाँ के वार्ड अध्यक्ष थे।

**वार्ड संख्या -** 08

**प्रभाग संख्या -** 04

**चुनावी पार्टी का नाम -** कांग्रेस

**कार्यभार -** सारा काम मेरे पति ही करते हैं और हम लोग मीटिंग जो की तीन माह में होती है उसमें ही जाते हैं।

**नाम -** गीताताई अजय मसराम

**पद -** वार्ड अध्यक्ष व नगर सेविका

**आयु -** 36 वर्ष

**शैक्षणिक स्थिति -** दसवीं पास।

**पदावधि -** पहली बार चयनित और लगभग 2 वर्षों का कार्यानुभव।

**वार्ड संख्या -** 02

**प्रभाग संख्या -** 05

**चुनावी पार्टी का नाम -** भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा.)

**कार्यभार -** सारा काम मेरे पति ही करते हैं और हम लोग मीटिंग जो की तीन माह में होती है उसमें ही जाते हैं।

**नाम -** नलिनी धनराज पिंपले

**पद -** वार्ड अध्यक्ष

**आयु -** 40 वर्ष

**शैक्षणिक स्थिति -** स्नातक।

**पदावधि -** लगातार दूसरी बार चयनित। कुल 8 वर्षों से सतत कार्यरत।

**वार्ड संख्या -** 01

**वार्ड का नाम -** इन्दिरा नगर

**प्रभाग संख्या -** 01

**चुनावी पार्टी का नाम -** कांग्रेस

**कार्यभार -** सारा काम स्वयं ही देखती हैं और आपने हाल ही में नालवाड़ी के समीप स्थित एक वार्ड को लेकर प्रशंसनीय कार्य किया है।

**नाम -** मायाताई मारोतरा काड़े

**पद -** वार्ड अध्यक्ष

**आयु -** 57 वर्ष

**शैक्षणिक स्थिति -** पाँचवीं पास।

**पदावधि -** लगातार दूसरी बार चयनित। कुल 8 वर्षों से सतत कार्यरत।

**वार्ड संख्या -** 09

**प्रभाग संख्या -** 04

**चुनावी पार्टी का नाम -** कांग्रेस

**कार्यभार -** मेरा सारा काम मेरा बड़ा बेटा आकाश ही करता है।

## गांधी विचार परिषद् के डायरेक्टर श्री भरत महोदय जी से स्वच्छता और सफाई के संदर्भ में विशेष परिचर्चा -

आप एक अत्यंत ओजस्वी और प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व से परिपूर्ण व्यक्ति है। आपके द्वारा गांधी विचार परिषद् में संचालन और अध्यापन का कार्य कराया जाता है। आप शिक्षा मंडल नामक संस्था के चेयर मैन भी है। गांधी ज्ञान मदिर पुस्तकालय केआप सेक्रेटरी भी है। सफाई और स्वच्छता को अपनी निधि और यदि कहा जाए तो संस्कृति की धरोहर को संरक्षित करने हेतु आपके द्वारा वैयक्तिक स्तर पर और सामूहिक जन चेतना जगाने में आपका अभूतपूर्व योगदान है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी की आप आज भी गांधी की ही भाँति स्वच्छता के कार्य को निःस्वार्थ भावना से कर रहे हैं। भरत महोदय जी ने बताया की यह मेरे जैसे ही लोगों का मैंने एक संगठन का निर्माण किया है जो न तो किसी पार्टी से संबद्ध है और न ही हमको किसी भी तरह का कोई सहयोग या प्रलोभन है। हमारा उद्देश्य मात्र यही है की वर्धा हमारे राष्ट्र पिता की कर्म भूमि है और साथ ही साथ इसकी पहचान हमारे बापू से जुड़ी हुई है। इसीलिए मुझको स्वयं लगता है कि कहीं न कहीं हम आज उनको नकारते जा रहे है। आपने अपनी चर्चा में बताया कि व्यक्ति आज आत्मकेंद्रित हो गया है आज उसको लगता है कि शहर की सफाई की जिम्मेदारी तो नगर परिषद् की है और हम आज अपने घर को तो साफ कर लेते है पर हमारे ही घर के आस-पास कूड़े से हमको किसी भी तरह का कोई एहसास नहीं होता है। आखिर यह क्या है ? एक ऐसी जगह जहाँ बापू ने स्वयं इतनी ज्यादा भयावह स्थिति के बाद भी लोगों में परिवर्तन लाकर दिखाया था तो फिर आज तो हम उस समय से ज्यादा शिक्षित हो गए है फिर हमको यह बातें क्यो नहीं समझ में आती है। श्री भरत महोदय जी ने कहा कि "नगर परिषद् अपना काम जैसे-तैसे कर रही है पर प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह वैयक्तिक स्तर पर भी स्वच्छता का ध्यान रखें।

जहाँ जब हम बात प्रशासनिक स्तर की करतें है तो हमको वर्धा के प्रशासनिक भवन की याद स्वतः ही आ जाती है। यहाँ के संडास का हाल तो पुछो ही मत। संडास के उपयोग की बात तो दूर उसके आस-पास से गुजरना भी मुश्किल है। वहाँ पर बदबू का इतना व्यापक प्रभाव है

की कोई भी वहाँ जाने के पहले कई बार विचार-विमर्श करता है। इसके पीछे भरत महोदय जी ने हमारे नगर परिषद् की उदासीनता और उनके द्वारा बरती जा रही लापरवाही को ही जिम्मेदार बताया। इसके साथ ही साथ उन्होने बताया की यह मात्र नगर परिषद् की ही जिम्मेदारी नहीं है अपितु यह हमारा भी दायित्व बनता है की हम नगर परिषद् और उसके कर्मचारियों पर दबाव बनाए।

श्री भरत महोदय जी ने अपने कार्य करने की शैली को बताया और साथ ही साथ उन्होने अपने कुछ यंत्र (टूल) की भी चर्चा की। जो कि निम्नलिखित है -

1- **जनता स्वयं अर्थात जन शक्ति -** आपने बताया की जब तक जनता में एकता का भाव नहीं आएगा तब तक किसी भी कार्य को सही रूप में परिणित नहीं किया जा सकता है। क्योंकि आज सभी के मन में अपने पराए का बोध हो गया है और इसी के चलते आज हमारे समाज में स्वच्छता जैसी समस्याओं ने जन्म लिया है। प्राचीन काल में भी ऐसी समस्याएँ थी पर उस समय लोग वैयक्तिक और सामूहिक दोनों ही स्तरों पर एक दूसरे का सहयोग करते थे जो की आज पूर्णतः समाप्त हो गया है।

2- **विद्वान जन शक्ति -** आपने बताया की भीड़ एकत्रित कर लेना ही समस्या का निराकरण नहीं है बल्कि उसमें विषय विशेषज्ञों व विद्वानों का होना अत्यंत आवश्यक है।

3- **धन शक्ति -** आपने बताया की किसी भी कार्य को क्रियान्वित करने से पहले उसकी एक रूप रेखा का निर्माण कर लिया जाता है और उसमें सबसे ज्यादा अहम भूमिका धन की ही होती है। अतः आज हमको चाहिए कि हम कार्य को करने से पहले उसको पूर्णतः सुनियोजित व सुव्यवस्थित रूपरेखा तैयार कर ले।

4- **सज्जन शक्ति -** यह एक नैतिक और मानवीय मूल्य है जो की किसी भी कार्य में लगती है। जन शक्ति के रूप में जो भी व्यक्तियों का समूह है उसमें सज्जनों का होना बहुत ज्यादा आवश्यक होता है।

5- **शासन शक्ति -** आज शासन के स्तर पर भी काफी अनियमित्ता देखने को मिलती है। अतः यदि जन समुदाय किसी भी कार्य को करने के प्रति उन्मुख होता है तो शासन के स्तर पर भी उसको सहायता प्रदान होनी चाहिए।

आपने बताया की यह पाँचों शक्तियों के द्वारा प्रहार करने पर किसी को भी पराजित किया जा सकता है। यह विनोबा भावे का पंचशील सिद्धांत पर आधारित है। इसमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण जनशक्ति को बताया गया है।

अभी हाल के ही दिनों में आपने विद्या नगर वार्ड जो की नागपुर पेट्रोल पम्प के समीप स्थित है वहाँ पर **एन.सी.सी.** के छात्रों, **स्थानीय सहवासियों** और अपने **संगठन के कार्य कर्ताओं** के साथ मिलकर आपने वहाँ की सफाई का कार्य किया। सबसे ज्यादा हर्ष की बात तो तब हुई जब स्थानीय लोगों ने सामूहिक धन एकत्र करके स्वयं ही वहाँ पर सफाई का कार्य किया। पहले जिस जगह पर वह स्वयं जाना पसंद नहीं करते थे आज वे स्वयं उस जगह को देखकर आश्चर्य करते हैं। श्री भरत महोदय जी के साथ में महात्मा गांधी अन्तर राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय के अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष **श्री नृपेन्द्र प्रसाद मोदी** जी भी वहाँ पर उपस्थित थे।

श्री भरत महोदय जी ने एक और बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण बात बतायी कि **"जब सही व्यक्ति सही कार्य के लिए आवाज़ उठता है तो सभी लोग उसका साथ देने के लिए आगे आ जाते हैं।"**

क्योंकि आज सबसे बड़ी समस्या है कि सामने वाला व्यक्ति कैसा है ? आज विश्वास की सबसे ज्यादा कमी हो चुकी है। जनता अपने किए गए फैसले में भी आशंकित ही रहती है। अतः इसीलिए वह व्यक्ति की पहचान पर बहुत ज्यादा निर्भर करता है। श्री भरत महोदय ने बताया कि यदि आपका ह्रदय साफ हो तो आज भी कोई न कोई आपकी सहायता के लिए जरूर आ जाएगा।

श्री भरत महोदय जी ने बताया की जब हम शारीरिक श्रम सामूहिक हो या वैयक्तिक स्तर पर समाज के सामने रहकर करते है तो इससे झूठी शर्म टूट जाती है। क्योंकि आज लोगों के सामने अपनी इज्जत और झूठी शान का बहुत ज्यादा भय रहता है।

गांधी जी ने भी **Dignity Of Labour** की बात बताई थी। यह बात गांधी जी ने टॉल्सटाय से ली थी। टॉल्सटाय ने यह **बुंदारेफ** नामक से ली थी। बुंदारेफ, टॉल्सटाय की भाँति ख्याति नहीं प्राप्त कर पाये किन्तु फिर भी **टॉल्सटाय** इनकी बहुत प्रशंसा एवं सम्मान करते थे।

आप ने शक्ति या Power को केंद्रित करते हुए बताया कि आज कैसे शक्ति का केंद्रीकरण हो गया है और इसका कितना ज्यादा दुरुपयोग किया जा रहा है। यदि हम शक्ति का सही उपयोग करें तो स्वच्छता जैसी समस्याएँ स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।

श्री भरत महोदय ने मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन.सेशन जी का उदाहरण देकर बताया की कैसे उन्होने अपने शक्ति और अधिकार का उपयोग करके पूरी चुनाव की प्रक्रिया में परिवर्तन ला दिया था क्योंकि उन दिनों चुनाव में पैसे का चलन बहुत ज्यादा था। इन्होनें प्रत्येक सदस्य के पीछे अपने चुनाव कर्मियों को नियुक्त कर दिया था। जिसके चलते चुनाव में उस बार पैसों की बहुत ज्यादा बचत हुई थी। यहाँ इस बात का जिक्र उन्होने इसलिए किया क्योंकि आज शक्ति का दुरुपयोग हो रहा है। जो भी शक्ति से युक्त है वह अपनी शक्ति का उपयोग अपने व्यक्तिगत हिट और स्वार्थ पूर्ति हेतु करते है।

श्री भरत महोदय जी ने मुकेश अंबानी का उदाहरण देते हुए यह भी कहा कि आज जिस तरह से इनके पास पैसे हैं क्या वह इसका उपयोग जन कल्याण या यूँ कहें की समाज की भलाई में लगा रहे हैं ? तो जवाब आशा के विपरीत मिलेगा। हाँ यह सच है कि आपका पैसा है और आप जो चाहे करें और वह legally सही भी हो सकता है पर यदि नैतिकता या Morality की बात करें तो यह बिल्कुल गलत होता है।

एक ऐसा देश जहाँ की लगभग 37 करोड़ से ज्यादा की जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही और और इसके विपरीत उसी देश में दुनिया के अमीरों की सूची में यहीं के लोगों का नाम मिलता है तो यह वाकई में शर्म की बात ही है।

श्री भरत महोदय ने बौद्धिक स्तर पर जन कल्याण का कार्य कर रहें **डॉ. आनन्द कुमार** का जिक्र किया जो की पटना के निवासी है और इनका सुपर 30 नामक एक स्कूल भी है। श्री भरत महोदय जी ने बताया कि आप किस तरह से गरीब और आर्थिक रूप से कमज़ोर किन्तु प्रतिभासंपन्न विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देकर उनको आई.आई.टी. (IIT) के लिए तैयार

करवाते हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब परीक्षा परिणाम में उनके छात्रों की संख्या में बहुतायत देखने को मिलती है।

यहाँ इन सभी बातों को बताने के पीछे श्री भरत महोदय का मात्र एक ही उद्देश्य था की आज वर्धा में भी उत्तम गलवा, लोयड्स, लैन्कों स्टील नमक कंपनियों ने अपने पैर जमा लिए है और अर्थ के मामले में यह सभी पूर्णतः परिपूर्ण है तो फिर आखिर क्यों यह सबसे बड़ी जरूरत स्वच्छता से विमुख है। हमको इनको भी अपनी ओर मिलाकर इस कार्य को और अधिक व्यापक स्तर पर करना चाहिए।

आज किसी भी प्रोजेक्ट में मानव शक्ति, पैसा, तकनीकी और प्रबंधन की नितांत आवश्यकता होती है। अतः इनके पास सब कुछ है। श्री भरत महोदय ने बताया की आज हम बड़े-बड़े उद्योगपतियों के पास गए और अन्य धन धान्य से परिपूर्ण व्यक्तियों के पास भी गए पर उनका एक ही जवाब आता है कि आखिर निष्कर्ष क्या रहेगा ? आज हम किसी भी बड़े उद्योगपती हो या व्यापारी उसके बोर्ड के ही बाहर लिखा रहता है "Be Brief" अर्थात आज सभी के पास सिर्फ Result की ही माँग रहती है। आज लोगों के पास समय की कमी हो गयी है।

श्री भरत महोदय ने कहा कि सफाई कर्मियों का वेतन वार्ड के लोगों के हाथों में दे दिया जना चाहिए और उसकी प्रतिदिन की उपस्थिति और अनुपस्थिति उसी वार्ड के लोगों को सौंप देना चाहिए। इसके पीछे श्री भरत की धारणा गांधी जी के विकेंद्रीकरण के सिद्धांत पर आधारित है और सभी अपनी-अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन भी ईमानदारी पूर्वक करेंगें।

श्री भरत महोदय ने बताया की आज बैलेट बॉक्स का कोई तालमेल नहीं बैठता है। आज चुनाव में मात्र जाति और पैसा ही महत्वपूर्ण हो गया है। इसी के संदर्भ में आपने एक उदाहरण को बताया। **विलासराव सादू** नामक एक व्यक्ति जो की पूना में निवास करता था, उसने निःस्वार्थ भाव से वहाँ पर **जल के वितरण** का कार्य किया था । लोगों में वह काफी चर्चित भी था किन्तु चुनाव में वह हार गया था। इसके पीछे क्षेत्रीय राजनीति कार्य करती है। ऐसे व्यक्ति जिनको आपसे ख़तरा है वह साम, दाम, दण्ड, भेद कुछ भी अर्थात पैसा, दारू, ऐश, मौज-मस्ती सब कुछ पर जीत हमारी होनी चाहिए। ऐसा हो भी रहा है।

श्री भरत महोदय ने गांधी जी के बारे में बताते हुए कहा कि "Here is a man whom government can not Frightened." स्वर्ग की अप्सरा भी जिसको लुभा नहीं सकती।

गांधी जी के बारे में गोलमेज़ सम्मेलन में विन्स्टन चर्चिल जैसे लोगों का प्रश्न था कि आखिर गांधी में ऐसा क्या है जो हमारे राष्ट्रपति उनसे मिलना चाहते हैं ? और जवाब के रूप में मात्र "Power of Morality and Ethical."

सूर्यास्त से सूर्योदय तक इस शक्ति का कैसे प्रयोग करना है यह गांधी ने 1947 में सिद्ध करके दिखाया था।

श्री भरत महोदय जी ने संत गाडगे और तुकड़ों जी महाराज की भी चर्चा की। आपने कहा कि आज इनके विचारों को पूर्णतः भूल चुके हैं लोग। अतः इन मृत प्राय शरीर में पुनः जीवन ज्योति जलाने की आवश्यकता है। आपने बताया की आज बच्चों को भाषण की नहीं अपितु Role Modal की जरूरत है।

श्री भरत महोदय ने सेगाँव के शंकर पाटिल का उदाहरण देते हुए बताया कि वह इतना ज्यादा दृढ़ संकल्प के व्यक्ति है की आप अपने मंदिर का जल तक भी नहीं ग्रहण करते है। भगवान का प्रसाद थोड़ा सा ले लेते हैं क्योंकि कहा जाता ही की प्रसाद को इंकार नहीं किया जाता है। ऐसा ही कुछ दृढ़ संकल्प हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी का भी था। गांधी जी ने कहा था कि

"The education who can't make the characterful person is absolute waste less"

श्री भरत महोदय ने बताया की आज हम अपने घर के अंदर तो साफ-सफाई कर लेते हैं पर हमारे पास-पड़ोस में गंदगी का भण्डार लगा रहता है। उस गंदगी को साफ करना भी हमारी ही जिम्मेदारी है। उन्होने बताया की आज की संस्कृति व्यक्तिगत स्वच्छता की हो गई है।

लिंग यूटांग ने लिखा है कि "भारत व्यक्तिगत स्वच्छता और सामूहिक अस्वच्छता का देश है।"

आज हमारी संस्कृति में परिवर्तन आ गया है।

आज सड़क के किनारे बैठकर संडास करने और खड़े होकर कहीं भी पेशाब करने में हमको किसी भी तरह की कोई भी शर्म नहीं आती है।

आज हम खुद की कार में कभी नहीं थूकते है तो सड़क में कहीं भी क्यो थूकते हैं?

कूड़े-कचरे इत्यादि को कहीं भी ड़ाल देने वालों पर जुर्माने का प्रावधान आना चाहिए।

आपने एक उदाहरण को देते हुए बताया की आज यह संस्कृति का दोष हो गया है। मै अपनी बेटी से मिलने अमेरिका गया था तो मेरी बेटी, दामाद, मेरी नातिन जो मात्र 10 वर्षों की है और मै एक शॉपिंग मौल में जा रहे थे और उस समय मेरी नातिन चाकलेट खा रही थी। मेरी बेटी और दामाद अंदर चले गए और मेरी नातिन ने मुझसे बोला की दादा जी रुकिए मै इसको खाकर इसके रैपर को कूड़ेदान में डालकर अंदर चलेंगे। यह है उनकी संस्कृति।

सार्वजनिक संपत्ति हमारी ही है पर नहीं यह भाव नहीं हो पता है आज के लोगों में। आपने कहा कि "We don't be a happy Life and we don't be a successful life. We want be a unhappy and unsuccessful life."

आज हम स्वतंत्र तो हो चुके हैं पर फिर भी कहीं न कहीं हम अपने स्तर पर सोचने के काबिल नहीं हो पाये हैं। तभी तो हमारा बजट 4pm को पेश होता था जब इस बात पर विचार किया गया तो पाया गया की उस समय इंग्लैंड में सूर्योदय हुआ होता है। हम दिलोंजान से सफल होना ही नहीं चाहते हैं। आपने बताया कि मै एक नई उम्र के बच्चों के साथ मिलकर स्वच्छता का कार्य करने जा रहा हूँ क्योकि इस उम्र के बच्चें जल्दी सीखते हैं।

आज पातञ्जलि, गुरुकुल आदि में सबसे पहले व्यक्ति को व्यक्ति को शौच की क्रिया सिखायी जाती है। इसके पीछे मूल कारण यह है की जब व्यक्ति आंतरिक रूप से स्वच्छ रहेगा तभी वह बाह्य स्वच्छता के प्रति जागरूक रह सकेगा।

आज पूरा वर्धा मात्र एक माह में स्वच्छ हो जाएगा पर यदि सभी अपने-अपने स्तर से यह स्वच्छता का कार्य करने लगे।

## वर्धा में नयन तारा गैर सरकारी संगठन के संयोजक और एक सामाजिक कार्यकर्ता का साक्षात्कार -

जैसा की मैंने पहले भी बताया है कि वर्धा को गांधी जी की कर्मस्थली के रूप में जाना जाता है । ऐसे बहुत ही कम लोग है जो इस बात को स्वीकार करते हैं की वर्धा का महत्व एक पुण्य स्थान से कम नहीं है । किन्तु इसी में एक नाम हमारे सामने श्री बसंत पाण्डेय जी का भी आता है जिन्होनें दिल्ली विश्वविद्यालय से अध्ययन कार्य किया है और आप यहाँ पर 4 अगस्त 2003 को बापू कुटी देखने हेतु यहाँ पर एक पर्यटक के रूप में आए थे और परंतु यहाँ की हालत देखकर उनको बहुत ज्यादा कष्ट हुआ था । फिर आपने यह महसूस किया कि आओ जब गांधी की कर्मभूमि का यह हाल है तो चलो गांधी जी की जन्म भूमि पोरबंदर गुजरात के भी दर्शन किए जाना आवश्यक है । अतः वह गुजरात के हालात जानने के लिए वहाँ पर भी गए । श्री बसंत पाण्डेय जी ने बताया की दोनों ही जगह के हालात एक से ही हैं । आपने बताया की उस समय गुजरात में नगराध्यक्ष महिला थी और आपने जब उनसे बातचीत की तो पता चला कि उनका सारा कार्य उनके पति करते हैं । आज वर्धा हो या गुजरात, दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है । उन्होनें बताया कि एक ऐसा मानव जिसने पूरा जीवन स्वच्छता का पाठ लोगों को पढ़ाते-पढ़ाते अर्पण कर दिया पर अन्य स्थानों की चर्चा की तो बात ही नहीं, उन्हीं के स्थान जहाँ की उनके द्वारा स्वयं स्वच्छता का जीवंत उदाहरण सेवाग्राम आश्रम के रूप में

हमारे सामने है, आज वहीं के स्थानीय लोग और स्थानीय प्रशासन इतनी गंदगी के बाद भी मौन है। ऐसा लगता है कि यहाँ के स्थानीय लोगों और प्रशासन की आँखों का पानी मर चुका है। न तो प्रशासन, न तो गांधी वादी संस्थाएँ और न ही जनता को किसी भी तरह की कोई शर्म या जिम्मेदारी का एहसास है। आज सब के सब मूक-बधिर बनकर मात्र गांधी जी के नाम पर कमाना चाहते हैं और चाहते हैं कि शासन स्तर पर हमको प्रधानता दी जानी चाहिए पर क्या हम वास्तविकता में इसके हकदार है ? इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं हैं।

श्री बसंत पांडे जी ने बताया की मैंने यहाँ पर स्वच्छता को लेकर किए गए प्रयासों का अगर मै जिक्र करूँ तो आपको आश्चर्य होगा पर आज भी मुझको किसी भी तरह का कोई संतोषजनक निष्कर्ष नहीं मिल पाया है। मैंने नगर परिषद् के विरोध में 4 दिनों का सत्याग्रह किया था जो की वर्धा में पत्रावली चौक में किया था, जिसमें हमारे ही विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति श्री विभूति नारायण राय जी को भी आमंत्रित किया गया था। वर्धा नगर परिषद् की मनमानी कार्यप्रणाली के विरोध में यह सत्याग्रह किया गया था। इस सत्याग्रह में कुल 13 मांगों का जवाब नगर परिषद् से माँगा गया था ।हमारे विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय श्री विभूति नारायण राय जी ने कहा कि, "सभी वर्धा वासियों को इस सत्याग्रह में शामिल होकर वर्धा शहर को सुंदर बनाने का प्रयास करना चाहिए।"

श्री बसंत पांडे जी ने बताया हमारे इस सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य वर्धा को स्वच्छ शहर बनाना है। आपके इस सत्याग्रह का उद्देश्य था की वर्धा शहर की सभी सड़कों, गलियों और चौक-चौराहों व हर वार्ड में घरों से कचरा उठाने के लिए घंटा गाड़ी की व्यवस्था करना, उपयुक्त स्थानों पर कचरा पेटी रखने और कचरे को शहर से दूर फेंकने की माँग की गई थी। नालियों के आकार में परिवर्तन अर्थात चौड़ाई को कम किया जाना चाहिए और उसको ऊपर से ढका जाना चाहिए ताकि उस पर पॉलिथीन और कचरा न जा पाये। इस प्रकार आदि अनेक सामाजिक मुद्दों को लेकर आपके द्वारा किए गए सत्याग्रह का आज तक आपको कोई संतोषजनक निष्कर्ष नहीं प्राप्त हुआ है।

आपने बताया कि मैंने यहाँ की सफाई व्यवस्था को लेकर नगर परिषद् से सीधा लोहा ले रखा है और आज आलम यह है की वर्धा नगर परिषद् के कोई भी कर्मचारी मुझसे बात भी नहीं करना चाहता हैं। आप लगातार सूचना के अधिकार का प्रयोग करके नगर परिषद् के द्वारा

भूत, वर्तमान और भविष्य की सूचनाओं का संकलन और उनमें यथासंभव जनोपयोगी परिवर्तन कराने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आपने बताया की आरोग्य अधिकारी जो कि किसी भी क्षेत्र वह चाहे नगर परिषद् का हो या नगर पालिका का वहाँ की सफाई उसकी ही जिम्मेदारी होती है पर वर्धा नगर परिषद् की हालत तो बद से बदत्तर है। आज कोई भी नगर परिषद् का कर्मचारी शहर की स्वच्छता के विषय में न तो बोलना चाहता है और न ही कुछ बताना चाहता है।

श्री पांडे जी ने बताया की तथाकथित गांधीवादी संस्थाएं जो गांधी जी के नाम पर अपना जीवन यापन कर रहीं है पर जब उनसे मैंने वर्धा में स्वच्छता के विषय को लेकर चर्चा की तो उनका जवाब मुझको मिला की हमारा काम आध्यात्म और योग का है और रही स्वच्छता की बात तो यह हमारे क्षेत्र में नहीं आता है। आज सेवाग्राम के समीप स्थित गांधी विचार परिषद् के मार्ग में तो निकलना ही असंभव हो गया है। क्या यह समस्या इनको नज़र नहीं आती है?

श्री पाण्डेय जी ने बताया की आज शासन के स्तर पर गांधी जी के शहर वर्धा को किसी भी तरह का कोई महत्व नहीं दिया है। आपने बताया कि नगर परिषद् के कर्मचारियों के काम करने का ढंग बहुत ही गलत है। यहाँ सब मनमाने ढंग से कार्य कर रहे हैं।

श्री पांडे जी वैसे तो बहुत ही शांत और गंभीर स्वभाव के व्यक्ति है पर जब बात सही और गलत की हो तो आपका रुख बहुत ही तीखा और कहा जाए तो पूर्णतः अधिकार और कानूनों से युक्त होता है इसीलिए आज बड़े से बड़ी हस्तियाँ और अधिकारी आपका नाम सुनते ही उनके कान खड़े हो जाते हैं और वह भी कुछ भी कहने और करने से पहले अच्छे से विचार कर लेते हैं। श्री पांडे जी की सबसे बड़ी खासियत है कि आप कोई भी काम पूर्णतः सुव्यवस्थित और सुनियोजित ढंग से करते हैं। आप आज पूर्णतः कहा जाए तो वर्धाको समर्पित हो गए हैं और आज अपने जीवन के 53 वर्ष से अधिक का समय आपने व्यतीत कर लिया है और आपका दृढ़ संकल्प है की आप वर्धा को एक गांधी शहर के रूप में स्थापित करके इसके पूर्णतः स्वच्छ करके यहाँ के जन-जन के हृदय में स्वच्छता का मूल्य स्थापित करना चाहते हैं।

श्री पांडे जी का जीवन लोगों के द्वारा स्वेच्छा से दिये गए चंदे की राशि से चल रहा है और आज तक आपने अपना कोई भी निवास स्थान नहीं बनाया है। आप बैचलर रोड पर एक किराए के घर में पिछले 10 वर्षों से रहे हैं। आपका दृढ़ संकल्प ही आपको आज भी वर्धा में रहने के लिए विवश करता है।

श्री पांडे जी ने माहिती के अधिकार के तहत लगातार नगर परिषद् पर कमान कस कर रखा है पर इसके बाद भी कोई खास परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। आपने नगर परिषद् के खिलाफ 2004 में जन हित याचिका नागपुर हाई कोर्ट में भी दाखित किया था। इस याचिका में कुल 16 तरह के प्रश्नों का समावेश था। उस जन हित याचिका की प्रति मै परिशिष्ट में समायोजित करूँगा। इसमें नागपुर हाई कोर्ट ने फ़ैसला भी दिया था पर उसका कुछ खास असर नहीं देखने को मिला। इस जनहित याचिका का मुख्य केंद्र दूषित जल का था। उस समय जिला चिकित्सालय के ठीक सामने से एक गली जाती है जिसको उस समय कच्ची गली के नाम से जाना जाता था। वहाँ पर संडास का पानी और नगर परिषद् का पानी मिलकर आ रहा था जिसकी वजह से कई लोगों को पीलिया और अन्य बीमारी का शिकार हो गए थे और एक बैंक कर्मचारी जो की बैंक आफ इंडिया में था उसकी मृत्यु भी ही गयी थी। अतः उस समय लोगों में यह चेतना जगाई गई की स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति हमारी नैतिक और आवश्यक दोनों ही तरह की जिम्मेदारी बनती है। अतः उस समय आपने नगर परिषद् को एक शिकायत पत्र भी दिया था जिसका शीर्षक था "नगर परिषद् से दस सवाल" और इसी में अंतिम प्रश्न था कि "अगर पत्नी नगराध्यक्ष है तो पति किस हैसियत से बैठता है।"

आपने बताया की यहाँ महीने के प्रथम सोमवार को लोकशाही दिन कहा जाता है। इस दिन डी.एम., तहसीलदार, सी.ओ. आदि सभी उच्च अधिकारी मिलते हैं। यहाँ जिस भवन में यह मीटिंग कराई जाती है उसके बाहर न तो गाड़ियों के पार्किंग कि कोई व्यवस्था और न ही अतिक्रमण की अतः नगर परिषद् कि क्या जिम्मेदारी बंटी हैं? आपने लोगों से कहा कि

"What they want and what them need and why u elected them?"

आपने कहा कि मुझको लगता है यहाँ पर एक प्रयोग किया जाना चाहिए और यहाँ के 39 वार्डों और नगराध्यक्ष सभी पदों पर महिलाओं को लाना चाहिए।

आपने बताया की आज नगर परिषद् के संस्थानों की कोई पूंछ नहीं है। नगर परिषद् के विद्यालयों को Upgrade करना चाहिए। हमको भी चाहिए की अग्रगामी और लोयड्स की तरह हमारे भी Municipality के विद्यालयों का स्तर होना चाहिए। आज कचरे का उपयोग करने वाले तो इंतज़ार कर रहें की आप हमको दें हम उसका सद्पयोग करेंगे पर न तो हमारी नगर परिषद् और न ही यहाँ के पदाधिकारियों को शायद इन प्रविधियों के बारे में पता है और न ही वे जानना चाहते हैं। यदि कोई भी इच्छा होती तो मैंने स्वयं उनके पास ले जाकर कचरे का उपयोग करने वालों से उनको मिलवाया पर उन्होनें कोई भी अभी रुचि ही नहीं दिखाई और उन्होने तो यहाँ तक कहा था की हम आपसे कूड़ा खरीदना चाहते हैं। इसके बाद भी हमारे नगर परिषद् के कानों में जूं तक न रेंगी।

यहाँ पर समूचे महाराष्ट्र में "संत गाडगे स्वच्छता अभियान" चलाया जाता है। संत गाडगे के बारे में बताया जाता है कि आप कोई संत या महात्मा नहीं थे आप अपने समूचे जीवन में केवल सफाई को महत्व दिया। आपको जहाँ कहीं भी गंदगी दिखाई देती थी आप तुरंत उसको साफ करने में लग जाते थे। अतः इसी कारण से उनको आदर्श मानकर ही महाराष्ट्र सरकार ने **"संत गाडगे स्वच्छता अभियान"** चलाया था।

ऐसा ही कुछ **तुकड़ो जी महाराज** के भी साथ में था। आप भी स्वच्छता के प्रति बहुत ज्यादा संवेदनशील थे और आपको भी सफाई के लिए याद किया जाता है।

अतः आपका कहना है कि इनकी आरती उतरने से कुछ नहीं होने वाला है, अगर कुछ करना चाहते हो तो इनके विचारों को अपनाओ और उनके द्वारा अधूरे छोड़े गए काम को पूरा करने का प्रयास करों। श्री बसंत पांडे जी ने कहा कि 'सिर्फ हँगामा करना मेरा काम नहीं है मुझको तो यहाँ की सूरत बदलना है।'

श्री बसंत पांडे जी ने अंत में मात्र यही कहा कि, " देश के नक्शे पर वर्धा अलग से चमके अब यहीं मेरे जीवन का उद्देश्य है।"

विषय सूची पृष्ठ संख्या

अध्याय 1- शोध का परिचय

1.1 - परिचय

1.2 - अध्ययन का उद्देश्य

1.3 - अध्ययन की प्रकृति

1.4 - परिकल्पना

1.5 - शोध की उपादेयता

1.6 - शोध की सीमा

1.7 - शोध-प्रविधि

अध्याय 2- वर्धा एक परिचय

2.1 - वर्धा की भौगोलोक स्थिति

2.2 - वर्धा का जनसांखिकीय विश्लेषण

2.3 - वर्धा का सांस्कृतिक अध्ययन

2.4- वर्धा का धार्मिक अध्ययन

अध्याय 3- नगर परिषद् की संरचना ववर्धा नगर परिषद् का विवरण

3.1- नगर परिषद् की संरचना

3.2- नगर परिषद् का गठन

3.3- नगर परिषद् के अधिकार

3.4- वर्धा नगर परिषद् की स्थापना और विवरण

3.5- वर्धा नगर परिषद् में सफाई से संबंधित तथ्यों का विवरण

अध्याय 4- गांधी और स्वच्छता

4.1- गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम

4.2- गांधीजी के स्वच्छता संबंधी विचार

4.3- स्वच्छता पर कार्य करने वाले संगठन एवं उनकी भूमिका

अध्याय 5- वर्धा में गंदगी : वास्तविकता, जिम्मेदारी एवं निदान

5.1- आँकड़ों का प्रस्तुतिकरण - सारणीयन और आरेख

5.2- आँकड़ों का विश्लेषण

5.3- विश्लेषण पश्चात प्राप्त निष्कर्ष

संदर्भ सूची

परिशिष्ट

# परिचय

भारत में लगातार बढ़ रही जनसंख्या के कारण कई तरह की समस्याओं का जन्म हुआ है। आज लगातार ग्रामीण क्षेत्र नगरीय क्षेत्रों में तब्दील हो रहे हैं। आज बहुत तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण नगरीकरण हो रहा है। यदि देखा जाए तो आज तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या ने ही नगरीकरण को जन्म दिया और इसी के कारण आज गंदगी की एक विकराल समस्या हम सभी के सामने आ खड़ी हुई है। बहुत से विद्वानों ने नगरीकरण को समझाते हुए इसकी परिभाषा अपनी-अपनी तरह से किया है।

यदि हम नगरीकरण को समझें तो **फेयर चाइल्ड के अनुसार,** "नगरीकरण का अर्थ नगर बनाने की प्रक्रिया से है, अर्थात व्यक्तियों और प्रक्रियाओं का नगरीय क्षेत्रों को गमन तथा नगरीय प्रक्रियाओं, जनसंख्या तथा क्षेत्रों की वृद्धि।"[9]

"आज कहीं न कहीं स्वच्छता की समस्या के जन्म में औद्योगिकीकरण का भी बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। जब भी कसी उद्योग को स्थापित किया जाता है तो उसको चलाने के लिए मानव शक्ति की जरूरत पड़ती है। रोजगार की तलाश में विभिन्न क्षेत्रों से व्यक्ति आते हैं और नौकरी पाने के बाद स्थायी या अस्थाई रूप से वहीं बस जाते हैं। इसीलिए औद्योगिकीकरण ने लगातार ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से औद्योगिक क्षेत्रों में देशांतरण होता है। अतः इसीलिए औद्योगिक क्षेत्रों में निवास निवास करने वाली आबादी वहाँ की मौलिक आबादी नहीं है।"

अतः इन सभी कारणों से आज स्वच्छता की समस्या ने भयावह रूप धारण कर लिया है। आज सफाई को लेकर सभी का ध्यान इस ओर केंद्रित हुआ है। अभी कुछ वर्षों पहले मुंबई जैसे

---

[9] **नगरीय समाजशास्त्र, सिंह, प्रो. आनंद प्रकाश सिंह, संस्करण 2007, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 231**

महानगर में गंदगी के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। जब इस बात की चर्चा की गयी तो पता चला कि पालिथीन के कारण यह समस्या उत्पन्न हुई थी।

औद्योगिकीकरण और जनसंख्या घनत्व में वृद्धि के कारण आज गंदगी की समस्या आन पड़ी है। प्रत्येक व्यक्ति अपने घर की साफ-सफाई रखना चाहता है। घर से निकलने वाले कूड़े को, कूड़े के ढ़ेर पर फेंकने के बाद वह मुड़कर नहीं देखता है कि उस कूड़े का क्या होगा ? 'एक आकलन से पता चला है कि विश्व भर में प्रतिवर्ष लगभग 10 अरब टन ठोस कचरा निकलता है। इस ढ़ेर की ऊँचाई की कल्पना भी भयावह जान पड़ती है।' [ii]

घरों में हम सफाई के पश्चात कागज, धूल-मिट्टी, काँच, प्लॉस्टिक , चमड़े का टूटा-फूटा सामान, बालों के गुच्छे, तरह-तरह के रैपर्स, गोबर, पेड़-पौधों की गंदगी आदि बाहर फेंक जाते हैं। आज यही कूड़ा जमा होकर पृथ्वी को कूड़ेदान बना देता है।

एक रिपोर्ट के अनुसार उद्योगों का लगभग 50% कच्चा माल कूड़ा-कचरा ही बन जाता है। उद्योगों से निकले अवशिष्टों में धातु के टुकड़े, रसायनिक पदार्थ, अम्लीय तथा क्षारीय पदार्थ, विषैले ज्वलनशील पदार्थ तथा राख़ आदि होते हैं। औद्योगिक अपशिष्टों को उपचारित करने वाले संयंत्रोंसे निकले कीचड़ से भी बहुत कचरा फैलता है।"[10]

आज नगर पालिका अपशिष्टों में मल-मूत्र, मकानों का मलबा, मृत जानवरों के अवशेष आदि को भी गंदगी में ही शामिल किया जा सकता है।

आज अस्पतालों के द्वारा बहुत अधिक मात्र में इस तरह का कचरा फेंका जाता है। इसमें टीके की सिरिंज, पट्टियाँ, व्यर्थ शारीरिक मल, काँच व अवशोषक शामिल हैं। यह कचरा अनेक प्रकार के रोगों का वाहक है। इनसे अनेक रोगों के विषाणुओं के फैलने का ख़तरा और भी बढ़ जाता है।

---

[10] यामिनी, रचना भोला प्रदूषण सनस्य एवं निवारण, प्रथम संस्करण -2005, अखिल भारतीय प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-17

प्लॉस्टिक  की थैलियों का बढ़ता प्रचलन भी आज हमारे समाज और धरती के लिए कम हानिकारक नहीं है । आज यह थैलियाँ तो कचरे का सबसे बड़ा वाहक बन गयी हैं । आज प्लॉस्टिक  की थैलियों में कचरा भरकर कहीं भी आसानी से फेंका जाता है । यह थैलियाँ इतनी ज्यादा खतरनाक होती है की इनकी वजह से ही बम्बई जैसे महानगर में बाढ़ का आलम तक आ गया था । यह थैलियाँ नाले-नाली में जाकर उसको जाम कर देती हैं ।

एक रिपोर्ट के अनुसार बताया गया है कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका जैसे देश में प्रतिवर्ष अवशिष्ट पदार्थों की मात्रा 4.34 करोड़ टन होती है तो भारत की दशा का अनुमान तो स्वयं ही लगाया जा सकता है ।

20 वीं सदी के प्रारंभ में महात्मा गांधी ने घोषणा की थी कि “भारत की आत्मा गाँव में निवास करती है ।” 2012 ईस्वी में भी देश की तस्वीर करीब-करीब वैसी ही है । यद्यपि गगनचुंबी इमारतें बनी है और गाँव के लोगों का शहरों की ओर बेतहाशा पलायन हुआ है । 2011 ईस्वी की जनगणना के अनुसार 68.84 प्रतिशत भारतीय देश के 6,40,867 गावों में ही निवास करते हैं  । भारत में 2,36,004 गाँव ऐसे है, जहाँ की आबादी 500 से भी कम है, जबकि 3,676 गाँव की आबादी 10,000 व्यक्तियों से भी अधिक है । अन्य मुद्दों को छोड़ दिया जाए मात्र स्वच्छता जैसी बुनियादी जरूरत देखें तो स्थिति सोचनीय ही नहीं, लज्जास्पद भी है । आज भी हमारे देश में लगभग 62.6 करोड़ भारतीय शौच के लिए रेलवे लाइन, सड़कों के किनारे, नहर, नदी, तालाब या अन्य खुली जगह का प्रयोग करते हैं । इनमें से अधिकतर लोग गाँव के ही निवासी होते है । यदि देखा जाए तो भारत के 1000 बच्चे सफाई की अव्यवस्था के कारण डायरिया जैसी बीमारी से प्रत्येक दिन मरते है, जिनमें से 65 प्रतिशत बच्चे गाँव के होते है ।

यदि देखा जाए तो आज से कुछ वर्षों पहले तक वर्धा में सफाई का संकट इतना ज्यादा गहरा नहीं था क्योंकि पहले पेड़-पौधों से आच्छादित हरे-भरे स्थान और अन्य कुटीर उद्योगों से यहाँ के लोगों को जीविका चलाने के लिए पर्याप्त राशि मिल जाती थी, वातावरण अत्यंत शांत और आनंदित जीवन था। भारतीय स्वतंत्रता की बात हो या दलित कल्याण की हमेशा से ही महाराष्ट्र और यहाँ के अन्य जगहों का अपना अलग ही स्थान और छाप निर्मित कर रखी है।

भारत में अनेक रमणीय एवं आदर्श जगह हैं, जो स्वच्छता और विकास के प्रतीक है। परंतु इस विशाल देश में ये गिने-चुने ही हैं और यह बात पर्यावरणविदों के लिए वस्तुतः अत्यंत चिंतनीय है। भारत-सरकार सतत प्रयत्नशील है कि सभी गाँवों को स्वच्छ एवं आदर्श बनाया जाए, यह और भी स्पष्ट हो जाता है जब केंद्रीय मंत्री श्री जयराम रमेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'देश में मंदिरों की अपेक्षा शौचालयों की अहमियत अधिक है।'

आजकल सामाजिक-आर्थिक विकास, पर्यावरण, प्रदूषण व मानवीय विकास के परस्पर संबंधों पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है। सामाजिक विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता व सफाई, पेय जल आदि पर विशेश बल दिया जा रहा है। स्थायी सामाजिक विकास के लिए पर्यावरण की सुरक्षा पर उचित एवं पर्याप्त ध्यान देना होगा। यह सर्वविदित है एवं विभिन्न सामाजिक एवं प्राकृतिक वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि अगर अगर किसी भी प्रकार का विकास कार्यक्रम अथवा योजना पर्यावरण को क्षति पहुंचाता है तो ऐसा विकास स्थायी, सुस्थिर व हानि रहित नहीं हो सकता है। ऐसा विकास भविष्य में समाज और मानव पर घातक प्रभाव डालता है। विद्वानों का मानना है कि सामाजिक विकास कार्यक्रम - पर्यावरण-मैत्रीपूर्ण तथा जन-मैत्रीपूर्ण होना चाहिए।

अब मैं क्रमवार अपने अध्यायों के संदर्भ में उनका संक्षिप्त परिचय प्रदान करता हूँ। जो की निम्नवत हैं -

**प्रथम अध्याय** - इस अध्याय में मैंने अपने शोध प्रबंध में जिन भी प्रविधियों का प्रयोग किया है, शोध का महत्व, शोध में समस्याएँ, उपकल्पना तथा साथ ही साथ अपने लघु शोध प्रबंध के संबंध में ही जानकारी का विवरण दिया है।

**द्वितीय अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अपने शोध के लिए चयन किए गए स्थल वर्धा के परिचय का विवरण दिया है। इसमें मैंने यहाँ की भौगोलिक स्थिति, जनसांखिकीय अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन का विवरण दिया है।

**तृतीय अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अपने शोध विषय के लिए चयन किए गए नगर परिषद् की संरचना, कार्यविधि, स्वरूप तथा वर्धा नगर परिषद् में सफाई के संदर्भ में जितने भी आँकड़ों का संकलन किया है उनका प्रस्तुतिकरण किया है।

**चतुर्थ अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अपने शोध विषय को अपने विषय से संबंधित गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों से संबद्ध किया था तथा गांधी जी के स्वच्छता संबंधी विचार और उनकी उपादेयता तथा मेरे लघु शोध प्रबंध इनकीमहत्ता पर प्रकाश डाला है।

**पञ्चम अध्याय -** इस अध्याय में मैंने अब तक किए गए कार्य में जितने भी प्रकार के तथ्यों का संकलन किया है तथा उनका विश्लेषण आरेख और सारणीयन के माध्यम से किया है। इसमें मैंने तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर अपना निष्कर्ष तथा सुझाव को भी प्रतिपादित किया है।

मेरा यह लघु शोध प्रबंध पूर्णतः मौलिक कार्य है और इसमें तथ्यों को अत्यंत जटिलता से प्राप्त किया गया है।

## अध्ययन का उद्देश्य -

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य वर्धा नगर परिषद् के क्षेत्र में सफाई की स्थिति का मूल्यांकल करना तथा लोगों के समक्ष वर्धा में स्वच्छता की वास्तविक स्थिति को लाना मेरे इस लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है। साथ ही गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों की उपयोगिता और व्यवहारिकता को जनमानस के सामने लाना भी मेरे इस लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य है।मेरे इस अध्ययन का सबसे ज्यादा महत्व यहाँ के स्थानीय लोगों और स्थानीय प्रशासन नगर परिषद् के द्वारा बरती जा रही असावधानी और लगातार गंदगी के कारण वर्धा में बढ़ रहे प्रदूषण और बीमारियों से लोगों को परिचित करना ही मेरे इस लघु शोध प्रबंधका उद्देश्य है।

1- वर्धा में आखिर किन कारणों से लोगों में सफाई के प्रति कोई रुझान नहीं आ पा रहा है?

2- वर्धा नगर परिषद् के कार्यकर्ता क्यों इतनी खामोशी बनाए हुए है?

3- वर्धा की इस स्थिति का जिम्मेदार कौन है जनता, नगर परिषद् या सफाई कर्मी?

4- वर्धा में इन गांधीवादी संस्थाओंकी क्या भूमिका है?

5- स्वच्छता को लेकर वर्धा में चलाई जा रही स्वच्छता योजनाओं का मूल्यांकन करना।

6- वर्धा एक खास ऐतिहासिक समय को प्रदर्शित करता है। गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का असर यहाँ पर सबसे ज्यादा रहा है और गांधीजी ने यहाँ पर सबसे ज्यादा समय व्यतीत किया था तो आखिर ऐसे शहर के ऐसे हालात का जिम्मेदार कौन है ? अतः इसी लिए यह एक लंबी चर्चा का विषय हो सकता है।

मैंने अपने क्षेत्र कार्य के लिए कुछ उपकल्पनाओं का निर्माण किया था जो इस प्रकार से है।

## उपकल्पना (Hypothesis) -

**जार्ज लुंडवर्ग के अनुसार** "उपकल्पना एक काम चलाऊ निष्कर्ष है जिसकी सत्यता की परीक्षा शेष रहती है। अपने प्राथमिक स्तरों पर कोई संकेत, अनुमान, काल्पनिक विचार अथवा इरादा या जो कुछ भी बात कार्य या सर्वेक्षण का आधार बनती है, उपकल्पना कहलाती है।"

इसको कई नामों से जाना जाता है जैसे की प्राककल्पना, परिकल्पना आदि अनेक नामों से भी जाना जाता है।

शोध विषय के बारे में जानने के बाद या ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् शोधकर्ता अपने दिमाग में एक ऐसा सिद्धांत बना लेता है जिसके बारे में वह कल्पना करता है कि यह सिद्धांत शायद उसके अनुसन्धान का आधार सिद्ध हो सके, ऐसे काल्पनिक निष्कर्ष को वह अंतिम नहीं मानकर चलता है। उसकी प्रमाणिकता अपने अनुभव तथा वास्तविक तथ्यों द्वारा सिद्ध करने की कोशिश करता है। अतः मैं अपने लघु शोध प्रबंधके लिए चुने गए विषय "वर्ध नगर परिषद् में सफाई की स्थिति" पर जो भी मेरे मार्गदर्शन में सहायक तथ्य हो सकते है, उन सभी को मैंने समाहित कर लिया है। अतः मै अपने इस लघु शोध प्रबंध में इसके महत्वपूर्ण पहलुओं को एकत्र करने की पूरी-पूरी कोशिश करूँगा।

1 - सफाई का जो मानक होता है वह नगर परिषद् की स्थापना में अंतर्निहित होता है।

2 - गांधीजी ने दस वर्षों तक वर्धा में रहकर रचनात्मक कार्यों को चलाया था। अतः यहाँ पर गांधीजी की स्पष्ट छाप नज़र आती होगी।

3 - लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता के महत्व को समझते होंगे।

4 - महाराष्ट्र में सिविल सोसाइटी का चलन ज्यादा है इसीलिए यहाँ के नागरिक अपने अधिकार और उत्तरदायित्व के प्रति ज्यादा जागरूक होंगे।

5 - वर्धा गांधी शहर होने के कारण प्रदूषण रहितहोगा।

6 - यहाँ के स्थानीय लोग अपने अधिकार, कर्तव्यों और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति बहुत संवेदन शील होंगे।

7 - यहाँ पर साक्षरता का प्रतिशत अधिकतम होने के कारण लोगों में भी जागरूकता चरम सीमा पर होगी।

8 - यहाँ का प्रशासन भी गांधी शहर की वजह से अपने कार्य के प्रति पूर्णतः ईमानदार होगा।

9 - शासन स्तर पर भी वर्धा को काफी महत्ता प्रदान होगी।

10 - वर्धा में औसतमान एन.जी.ओ. की संख्या किसी भी जिले से ज्यादा और उनके एजेण्डे में शहर की सफाई और स्वास्थ्य एक प्रमुख एजेण्डा होगा।

# निष्कर्ष

**नगर परिषद् की वास्तविकता**

"हैमलेट में शेक्सपीयर ने कहा था कि 'डेनमार्क में कुछ तो सड़ गया है', यही बात आज वर्धा नगर परिषद् पर भी लागू होती है।"[1] आज लगातार नगर परिषद् के क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था को लेकर लोगों में बहुत ज्यादा असंतोष व्याप्त है। आज वर्धा में शायद ही कोई ऐसी जगह हो जिसको हम पूर्णतः स्वच्छ मान सकें।

ठोस कचरे से अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ जन्म लेती हैं। कूड़ा रोगवाहक कीटाणुओं का घर बन जाता है और अनेक रोगों को आमंत्रण देता है। अवशिष्ट पदार्थ पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रदूषित करते हैं। आज रासायन मिश्रित जल रिसाव द्वारा भूमिगत जल तक पहुँचकर आज उसको भी प्रदूषित कर रहा है। कूड़ाकरकट सड़ने से अनेक विषैली गैसें उत्पन्न होती हैं। मल जल द्वारा सिंचाई करने से मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीव मारे जाते हैं जो भूमि के लिए आवश्यक हैं। अवशिष्ट पदार्थों को यदि समुद्र में डाला जाए तो सामुद्रिक पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाएगा। आज पालिथीन पशुओं की आंत में फसकर उनकी मृत्यु तक का कारण भी बन जाती हैं। आज खाने की वस्तुएं भी पालिथीन में आ रही है जो शरीर के लिए बहुत ज्यादा घातक है। आज हम कूड़े को कहीं भी दूर ले जाकर जला देते हैं या फिर हम उसकी कंपोस्ट खाद बनाई जाती हैं पर बेहतर यही होगा अगर हम इसके पुनः उपयोग का तरीका खोजा जाए।

वर्धा शहर में मेडिकल कचरे का प्रबंधन सुव्यवस्थित तरीके से है। इसमे सबसे अहम भूमिका सरकार की है, जिसने ऐसा तंत्र विकसित किया है कि हर जगह का कचरा इक्कठा करके उसे डिस्पोज़ किया जाता है। इसका ठेका सरकार द्वारा नागपुर स्थित सुपर हाइजीन कंपनी को दिया गया है, जो नर्सिंग होम एवं अस्पताल से निकलने वाले

कचरे को खुद आ कर ले जाती है तथा उसे डिस्पोज़ करती है। इसके लिए किसी नर्सिंग होम को पैसा नहीं देना पड़ता है। सरकार द्वारा यह व्यवस्था मुफ्त में उपलब्ध करायी जाती है।

इस बात से साफ-साफ पता चलता है की ऐसा नहीं है की यहाँ के लोगों को या स्थानीय प्रशासन को कचरे को पुनः उपयोग में लाने के बारे में नहीं पता होगा किन्तु वे इस तरह का कोई योजना न लाये हैं और न ही लाना चाहते हैं।

आँकड़ों ने साफ-साफ यहाँ की स्थिति स्पष्ट कर दी है। अतः इस प्रकार से वर्धा में गंदगी अपने चरम पर आ रही और अगर जल्दी ही इसको कोई उपचार नहीं किया जाएगा तो निश्चय ही वर्धा का नाम किसी और नाम से पहचाना जाने लगेगा।

क्या करें, क्या न करें !

सबसे पहले इस विषय में व्यक्तिगत सोंच को जागृत करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति यह न सोचे की ज़रा से कूड़े से क्या होता है। यदि हर कोई ऐसा सोचेगा तो इस धरती पर से हमारा अस्तित्व समाप्त होने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। यह पृथ्वी हमारा घर है और अगर अपने ही घर में गंदगी फैलते रहे हम तो एक दिन कहाँ जाएँगे ? समय रहते ही अगर अपनी भूल को पहचान लें तो यह एक सार्थक प्रायस होगा।

1- प्लास्टिक की पन्नियों का इस्तेमाल तुरंत बंद कीजिये क्योकि यह नष्ट नहीं होती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि एक प्लास्टिक दस लाख साल तक नष्ट नहीं होती है और यह हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ही खतरनाक होती है। इसकी जगह पर हमें कपड़ों के थैलों का प्रयोग करना चाहिए।

2 - जिन पदार्थों को रिसाइकलिंग किया जा सके उन्हें आम कूड़े से अलग रखा जाना चाहिए। कूड़े को बायोडीग्रेडेबल व नॉन बायोडीग्रेडेबल भागों में बांटा जा सकता है। अर्थात ऐसा कचरा जो मिट्टी में सड़-गल सकता है और ऐसा कचरा जो मिट्टी में सड़-गल नहीं सकता है। सरकार भी इस विषय में काफी जागरूक हो उठी है। दिल्ली महानगर में इन दो प्रकार के कूड़ों को फेंकने के लिए अलग-अलग हरे व नीले रंग के डिब्बे लगाए गए हैं। अब हम पर निर्भर करता है कि हम इसका सही उपयोग कर पातें हैं या नहीं।

3 - घर के अपशिष्ट और कचरे को केवल कचरा पेटी में ही डालें, ऐसे ही सड़कों, नालियों या किसी भी मैदान में नहीं फ़ैकना चाहिए।

4 - बच्चों को हमेशा ही संडास(Latrine) में जाने कि शिक्षा दें और बाहर मत जानें दे।

5 - कहीं भी खड़े होकर पेशाब न करें इसके लिए किसी एकांत में अथवा मूत्र घर का प्रयोग करें। अब तो लगभग सभी जगाओन में सुलभ कि व्यवस्था की जा रही है।

6 - सबसे ज्यादा नुकसान दायक पदार्थ जो आज तो एक फैशन में आ गया है जिसके लिए अभी हाल ही में महाराष्ट्र शासन ने प्रतिबंध लगाया है गुटखा कृपया कोशिश करें की इसका प्रयोग बंद कर दे और यदि ऐसा कर पाने में असमर्थ हैं तो इधर-उधर कहीं भी थूंक देने की आदत में सुधार लाएँ।

7 - जलती हुई सिगरेट को यूँ ही सड़क पर कहीं भी मत फेंकें, इसको बुझाकर कचरे कि जगह में ही डाले। ध्यान दीजिये कि गरीब लोग नंगे पैर ही चलते हैं।

8 - नगर परिषद् द्वारा हाईकोर्ट के निर्देश पर बनाए जाने वाले मूत्र घरों में स्वच्छता बनाए रखना आपकी भी जिम्मेदारी है। नगर परिषद के कर्मचारी रोजाना सफाई कर रहें है इस पर भी निगरानी रखना आपका ही दायित्व बनता है।

9 - सप्ताह में एक बार यदि संभव हो सके तो रविवार को घर के सामने की सड़क स्वयं साफ करें या सफाई करवाएँ। नालियों और संडास की सफाई यदि संभव हो सके तो यह भी स्वयं करें या फिर किसी अन्य से जरूर साफ करवाएँ। यदि आपको इसमें किसी भी तरह हीन भावना महसूस होती है तो ध्यान रखिए की आज जिनको हम राष्ट्रपिता कहकर संबोधित करते हैं वह भी अपने घर का संडास स्वयं साफ करते थे। कहा जाता है कि अपने काम में किसी भी तरह की कोई शर्म नहीं होती हैं। आज एन.एस.एस. और सोशल वर्क के कॉलेज में छात्रों को यही शिक्षा दी जाती है।

10 - गणपति और नव दुर्गा उत्सव के दौरान मूर्तियों पर चढ़ाए गए फूल , बेल पत्र, पूजा सामग्री नगर परिषद द्वारा तैयार किए गए निर्माल्य कलशों में डाले। उत्सव के अंतिम दिन राष्ट्रीय युवा संगठन के राजकला चौक स्थित कार्यालय में अंधश्रद्धा नि. समिती व 'होप' संस्था द्वारा मूर्तियाँ व पूजा सामग्री एकत्र की जाती हैं। प्रदूषण से बचने के लिए मूर्तियाँ व सामग्री को इन स्थानों पर ही दें ।